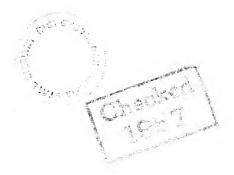




The COLLECTED POEMS of W. B. YEATS



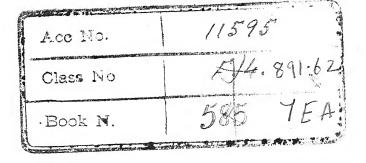


MACMILLAN AND CO., LIMITED ST. MARTIN'S STREET, LONDON

1934

COPYRIGHT

First Edition 1933 Reprinted 1934



PRINTED IN GREAT BRITAIN
BY R. & R. CLARK, LIMITED, EDINBURGH

CROSSWAYS

THE SONG

THE MED

THE BALL
THE BALL

FERGUS A

THE SAD STATE CLOA ANASHUYA THE INDIA THE FALLI EPHEMERA THE MADITHE STOLI TO AN ISL DOWN BY

THE ROSE (

CUCHULAL
THE ROSE
THE ROSE
THE ROSE
A FAERY

THE LAKE

CONTENTS

LYRICAL

| CROSSWAYS (1889)— | | | PAGE |
|---|---|---|------|
| The Song of the Happy Shepherd. | | | 7 |
| THE SAD SHEPHERD | | | 9 |
| THE CLOAK, THE BOAT, AND THE SHOES | | | 10 |
| Anashuya and Vijaya | | | 10 |
| THE INDIAN UPON GOD | | | 14 |
| THE INDIAN TO HIS LOVE | | | 15 |
| THE FALLING OF THE LEAVES | | | 16 |
| Ephemera | | • | 16 |
| THE MADNESS OF KING GOLL | | | 17 |
| THE STOLEN CHILD | | | 20 |
| To an Isle in the Water | | | 22 |
| Down by the Salley Gardens \checkmark . | • | • | 22 |
| THE MEDITATION OF THE OLD FISHERMAN | • | | 23 |
| THE BALLAD OF FATHER O'HART . | | • | 23 |
| THE BALLAD OF MOLL MAGEE | • | | 25 |
| The Ballad of the Foxhunter . | • | • | 27 |
| THE ROSE (1893)— | | | |
| To the Rose upon the Rood of Time | • | • | 35 |
| FERGUS AND THE DRUID | | | 36 |
| Cuchulain's Fight with the Sea . | | | 37 |
| THE ROSE OF THE WORLD | | • | 41 |
| THE ROSE OF PEACE | | ٠ | 41 |
| THE ROSE OF BATTLE | • | • | 42 |
| A FAERY SONG • | • | ٠ | 43 |
| THE LAKE ISLE OF INNISFREE V. | - | | 44 |
| A CRADLE SONG | • | | 45 |

| | | A 1944 | |
|---------|------------|--|--|
| | PAGE | | THE ' |
| • | 45 | A | H |
| | , . | | Hı |
| | ' . | | A |
| | , | | H |
| | | | To |
| - | | · ! | TH |
| | • | | TH |
| | 49 | | T_{H} |
| | | 1 | 1 |
| | - | \$ | HE |
| | | | HE |
| • | 52 | | HE |
| ٠ | 54 | | H_{E} |
| • | - | | н |
| • | 56 | | T_{HE} |
| | | The state of the s | T_{HE} |
| | | 4 | M_{AI} |
| | (- | | THE |
| ٠ | | | T_{HE} |
| | | .4 | FR |
| • | | v. | T_{HE} |
| • | | | IN |
| • | , | - 8 | THE |
| ٠ | | 1 | HE V |
| • | | 4 | HE W |
| • | | W. | НЕТІ |
| • | - | | THI |
| • | , | | THE] |
| • | | | |
| • ON | , 00 | 1 | IN THE S |
| NID. | | J | |
| MD | 68 | . 1 | In TH |
| • | | | THE A |
| ۰ | 99 | | THE F |
| | | . 45 . 46 . 46 . 47 . 48 . 48 . 49 . 51 . 52 . 52 . 54 . 56 . 56 . 61 . 61 . 62 . 62 . 63 . 64 . 65 . 65 . 66 . 67 . 68 . 68 | . 45 . 45 . 46 . 46 . 47 . 48 . 48 . 49 TTED . 51 . 52 . 52 . 54 . 56 . 56 . 56 . 61 . 62 . 62 . 63 . 64 . 65 . 65 . 66 . 67 . 68 ON ND . 68 |

| THE WIND AMONG THE REEDS (1899) (cont | | |
|---|------|--------|
| HE REPROVES THE C | d.)- | - PAGE |
| | | 69 |
| TOLGOITEN REALTING | ٠ | |
| A POET TO HIS BELOVED | | 70 |
| TO HIS HEART PROPERTY. | | 71 |
| TO HIS HEART, BIDDING IT HAVE NO FEAR. | ٠ | 71 |
| THE CAP AND BELLS THE VALLEY OF THE BLACK PIG THE LOVER ASKS FOR GIVENESS PROJECT | | 71 |
| THE LOVER ASKS FOR CHIEF | | 73 |
| Moore Moore | ANV | . , |
| HE TELLS OF A VALLEY TWO | | 73 |
| HE TELLS OF A VALLEY FULL OF LOVERS HE TELLS OF THE PERFORM PRODUCT | | 74 |
| HE TELLS OF THE PERFECT BEAUTY HE HEARS THE CRY OF THE SEDGE HE THINKS OF THESE | | 74 |
| HE THINKS OF THOSE WHO HAVE SPOKEN EVIL | | 75 |
| | OF | |
| Tue Braces | | 75 |
| THE BLESSED THE SECRET ROSE MAID QUIET | ٠ | 75 |
| MAID QUIET | • | 77 |
| THE TRAVAIL OF PASSION | ۰ | 78 |
| THE LOVER PLEADS WITH HIS FRIEND FOR OF | | 78 |
| | | |
| THE LOVER SPEAKS TO THE LITTER | • | 79 |
| COMING DAYS | | |
| | • | 79 |
| TISTIES ATS DELOVED WEDE D | ; | 80 |
| WISHES FOR THE CLOTHER OF THE | • | 80 |
| THINKS OF HIS PAST GREATNESS THE | • | 81 |
| CONSTELLATIONS OF HEATIERS | F | Δ |
| THE FIDDLER OF DOONEY | • | 81 |
| • | • | 82 |
| THE SEVEN WOODS (1904)— | | |
| IN THE CRITICAL IV. | | |
| In the Seven Woods The Arrow | | 85 |
| - Indow | | 85 |
| THE FOLLY OF BEING COMFORTED | | 86 |
| vii | | |

IN

| IN | THE SEVEN WOODS (194 | 04) (01 | ntd.) | | | PAGE | | di | |
|----|---|--------------|---------|--------|------|-----------|-----|--|-------|
| | OLD MEMORY | | | | | 86 | | | *_ |
| | Never give all the Hear | • | • | ٠ | ٠ | | | A STATE OF THE PARTY OF THE PAR | |
| | THE WITHERING OF THE BO | | • | • | • | 87 | | 7 | 7 -12 |
| | ADAM'S CURSE | JUGHS | . • | • | • | 87 | | | |
| | RED HANRAHAN'S SONG ABO | • • | • | • | • | 88 | | | |
| | THE OLD MEN ADMIRING THE | | | • | | 90 | | | |
| | Under the Moon . | | S IN TI | HE WA | TER | 91 | | | |
| | THE RAGGED WOOD | • | • | • | ٠ | 91 | | | |
| | O DO NOT LOVE TOO LONG | • | • | • | • | 92 | | | |
| | | | • ~ | ٠ | • | 93 | | | |
| | THE PLAYERS ASK FOR A BLESS AND ON THEMSELVES . | ING ON | THE P | SALTE | RIES | | | | |
| | THE HAPPY TOWNLAND . | • | • | • | ٠ | 93 | | 1 | |
| | THE MAPPY TOWNLAND | ٠ | ٠ | • | • | 94 | | | |
| | | | | | | | | | |
| TH | e green helmet ani | р от | HER | POF | ZVC | | | | |
| | (1910)— | - 01 | 11210 | 101 | 1110 | | | | |
| | HIS DREAM | | | | | 00 | | \$ | |
| | A WOMAN HOMER SUNG . | | • | • | • | 99 100 | | | 1 |
| | Words | | • | • | • | 100 | | | A |
| | No Second Troy | • | • | • | • | | 1 | | |
| | RECONCILIATION | • | • | • | • | 101 | | 115 | |
| | KING AND NO KING. | • | • | • | • | 102 | | | |
| | PEACE | • | • | • | ٠ | 102 | | | |
| | AGAINST UNWORTHY PRAISE | • | • | • | • | 103 | | | |
| | THE FASCINATION OF WHAT'S | · C Dreer | • | • | ٠ | 103 | | 9 | |
| | A DRINKING SONG | S DIFFI | CULT | • | ٠ | 104 | | | |
| | THE COMING OF WISDOM WI | • | • | • | • | 104. | | | |
| | ON HEARING THAT THE STU | TH IIV | ΛE | • | • | 105 | mp- | h | |
| | LINIVERSITY WAYS | JDENTS | OF O | ur N | EW | | | | |
| | University have joined the Immoral Literature. | HE AGIT | TATION | AGAI | YST | | | | |
| | | • | • | • | | 105 | | | 1 |
| | To a Poet, who would have | 'E ME F | RAISE | CERTA | IN | | | ٦. | |
| | BAD POETS, IMITATORS OF | HIS AN | id Mi | NE | | 105 | | ' | |
| | THE MASK | . ^ | • | • | | 106 | | | |
| | Upon a House shaken by t | HE LAN | ND ÁG | ITATIC | N | 106 | | | |
| | viii | | | | | | | | |



THE G
(I
AT
THE
AT
A F
ALL
BRO

RESPON INTR THE To Sτ IF √ŚEPT To A Paul To . Whi On W Тне Тне BEG Run Тне A S Тне I. 7

THE I. T

| THE | GREEN (1910) (c | HELM | IET | AN | D C | THER | . PO | EMS | |
|-----|-------------------------|---------|--------|------|-------|---------|-------|------|-------|
| | AT THE AB | , | | | | | | | PAGE |
| | | | | | • | • | • | • | 107 |
| | These are At Galway | | | ٠ | • | • | - | • | 107 |
| | Al Galway A Friend's | | | ٠ | | • | | • | 108 |
| | | | | • | | • | | | 109 |
| | ALL THINGS | | EMPT | ME | • | • | | • | 109 |
| | Brown Pen | NY | • | • | • | \$ | • | ٠ | 109 |
| RES | PONSIBILI | TIES (1 | 914)– | - | | | | | |
| | INTRODUCTO | RY RH | YMES | | | | | | т т э |
| | THE GREY | | | • | • | • | • | • | 113 |
| | To a Wea | LTHY N | vían · | wH0 | DRC | MISED . | 4 SE | מאס: | 115 |
| | Subscript | OT NOI | тне D | UBLI | n Mt | JNICIPA | l Gal | LERY | |
| | IF IT WERE | E PROVE | D THE | PEC | PLE 1 | WANTED | Ріст | URES | 119 |
| | September | | • | | | | | | 120 |
| | To a Frien | D WHOS | e Wo | RK H | IAS C | оме то | Not | HING | 122 |
| | Paudeen | • | | | | | | | 122 |
| | To a Shad | | | | | | | | 123 |
| | WHEN HEL | | | | | | | | 124 |
| | On Those | THAT | HATEI | r' c | HE] | Playbo | Y OF | THE | · |
| | Western | Worli | 0,' 19 | 07 | | | | | 124 |
| | THE THREE | | | • | ٠ | | | | 124 |
| | THE THREE | | | | | | | | 127 |
| | Beggar to | | | ED | | | | | 128 |
| | Running to | | | | | | | | 129 |
| | The Hour | | | | | • | | | 130 |
| | A Song fr | | e Pla | YER | Que | en'. | • | | 134 |
| | The Realis | | • | | | | | | 135 |
| | I. The Wi | | | | | | | | 135 |
| | II. THE PEA | | | | | | | | 135 |
| | THE MOUN | | | | | | • | | |
| | I. To a C | HILD DA | NCINC | IN | THE | Wind | | | 136 |
| | II. Two Ye | ars La | TER | | | | | | 137 |
| | | | | ix | | | | | |

| RESPONSIBILIT | ries (| 1914) | (contd.) |)— | | | | PAGR | 10 | - 1 | |
|---------------|--------|--------|----------|-------|------|---|---|-------|----|------|--|
| A Memory | OF YO | UTH | • | | | | | 137 | 4 | | |
| FALLEN MA | JESTY | | | | | | | 138 | _ | | |
| FRIENDS. | | | | | | | | 139 | | | |
| THE COLD | Heave | Ν., | | | | | | 140 | | | |
| THAT THE I | Night | COME | | | | | | 140 | | | |
| An Appoint | MENT | | | | | | | 141 | | | |
| THE MAGI | • | | | | | | | 1.4.1 | | | |
| THE DOLLS | • | | | | | | | 141 | | | |
| A COAT . | • | | | | | | | 142 | | | |
| CLOSING RH | YME | | | | | | | 143 | | | |
| | | | | | | | | ,, | | | |
| THE WILD CO | | | | , | | | | | | | |
| THE WILD SW | | | | (1919 |) | | | | | | |
| THE WILD S | | | | | | | | 147 | | | |
| In Memory | of M. | ajor R | OBERT | r Gre | GORY | | | 148 | | | |
| An Irish Ai | | | | | TH | | | 152 | | | |
| ✓MEN IMPROV | | | | | | | | 152 | | | |
| THE COLLAR | | | | | | | | 153 | | in | |
| Under the | | | ER | | | | | 154 | - | | |
| Solomon to | | | | | | | | - / | | | |
| THE LIVING | | | | | • | | | 156 | | | |
| A Song. | | | | | | | | 156 | | 1 | |
| To a Young | | | | | | | | 157 | | i | |
| To a Young | GIRL | • | | | | | | 157 | | | |
| THE SCHOLA | | • | | | | | | 158 | | | |
| Tom O'Rou | | | | | | | | 158 | | - | |
| SHEPHERD AN | | | | | | | | 159 | | \$ | |
| LINES WRITT | EN IN | Deject | ION | | | | | 163 | • | | |
| THE DAWN | | | • | | | | | 164 | | | |
| On Woman | • | | | | | | | 164 | | | |
| THE FISHERM | IAN | | | | | | | 166 | | Ä | |
| THE HAWK | • | • | | | • | | | 167 | | 1 | |
| Memory | | | | | | | • | 168 | | 1 | |
| Her Praise | • | | | | | | • | 168 | | 7.00 | |
| | | х | | | • | - | • | | | Ť × | |
| | | | | | | | | | | | |

THE WIL THE I His P А Тн Broke A DE Prese THE I То а On B In M Upon Ι ΙΙ

> IIIIV V VI VII Ego I A PR THE I THE (THE S Two ANOT THE I

MICHAEI Місн Solon An In UNDE **✓**EASTE

| THE WILD SWANS AT COOLE (1919) (contd.)— | PAGE |
|---|-------|
| THE PEOPLE | 169 |
| ** D | 170 |
| A THOUGHT FROM PROPERTIUS . | 172 |
| Broken Dreams | 172 |
| A Deep-sworn Vow | 174 |
| Presences | 174 |
| THE BALLOON OF THE MIND | 175 |
| To a Squirrel at Kyle-na-no | 175 |
| On being asked for a War Poem | 175 |
| IN MEMORY OF ALFRED POLLEXFEN | 175 |
| Upon a Dying Lady: | // |
| I. Her Courtesy | 177 |
| II. CERTAIN ARTISTS BRING HER DOLLS AND | |
| Drawings . | 177 |
| III. She turns the Dolls' Faces to the Wali | |
| IV. THE END OF DAY | 178 |
| V. Her Race , | 179 |
| VI. HER COURAGE | 179 |
| VII. HER FRIENDS BRING HER A CHRISTMAS TREE | |
| Ego Dominus Tuus | 180 |
| A Prayer on going into my House | 183 |
| THE PHASES OF THE MOON | . 183 |
| THE CAT AND THE MOON | . 188 |
| THE SAINT AND THE HUNCHBACK | 189 |
| | . 190 |
| Another Song of a Fool | . 191 |
| THE DOUBLE VISION OF MICHAEL ROBARTES . | . 192 |
| | , |
| MICHAEL ROBARTES AND THE DANCER (1921) |) |
| Michael Robartes and the Dancer | . 197 |
| Solomon and the Witch | . 199 |
| An Image from a Past Life | 200 |
| Under Saturn | 202 |
| EASTER, 1916 | 202 |
| XI | 1 |

| MICHAEL ROBARTES AND | THE | DANCE | ER | |
|--------------------------------------|---------|-------------------|-----------|------|
| (1921) (contd.)— | | | | PAGE |
| SIXTEEN DEAD MEN | . , | • | | 205 |
| THE ROSE TREE | • . | • | ٠ | 206 |
| On a Political Prisoner | | | | 206 |
| The Leaders of the Crowd | | | | 207 |
| Towards Break of Day . | | • | | 208 |
| | | | | |
| Demon and Beast . The Second Coming | | www.ry.j | 738000000 | -210 |
| A PRAYER FOR MY DAUGHTER | | | ٠ | 211 |
| A Meditation in Time of W | | | | |
| To be carved on a Stone at | г Тноог | BALLYLE | E | 214 |
| | | | | |
| THE TOWER (1928)— | | | | |
| 215 | | | | |
| SAILING TO BYZANTIUM | | | | |
| THE TOWER | | • | ٠ | 218 |
| MEDITATIONS IN TIME OF CIVI | | | | |
| I. ANCESTRAL HOUSES | | | | 225 |
| | | | | 226 |
| III. My Table | • | n | • | 227 |
| IV. My Descendants. | | • | • | 228 |
| V. THE ROAD AT MY DOC | | • | • | 229 |
| VI. THE STARE'S NEST BY | | | • | 230 |
| VII. I SEE PHANTOMS OF H | | | | |
| Heart's Fullness an | ID OF T | HE COMIN | IG | |
| Emptiness . | | | | 231 |
| ' NINETEEN HUNDRED AND NINE | | • | • | 232 |
| · THE WHEEL | | • | • | 237 |
| Youth and Age | | | ٠ | 237 |
| •The New Faces A Prayer for my Son . | | | • | 238 |
| A PRAYER FOR MY SON . | | | • | 238 |
| Two Songs from a Play | ٠, ٠ | | | 239 |
| FRAGMENTS | | | | 240 |
| LEDA AND THE SWAN xii | • | ya come bu manana | | 241 |
| xii | | | | |

On a P DULA Among . COLONU WISDOM THE FO OWEN . A MAN VIII. THE T ALL S THE WI In M DEATH A DIA

I. II. III. IV. V. VI. VII.

> IX. X XI.

(19

MA

BLOOK OIL A VERO SYMBO SPILT

THE TOWE

| THE TOWER (1928) (contd.)— | | PAGE |
|---------------------------------------|-------|-------|
| On a Picture of a Black Centaur by Ed | MUND | |
| Dulac | • | 242 |
| Among School Children | | 242 |
| . Colonus' Praise | | 245 |
| WISDOM | • | 246 |
| THE FOOL BY THE ROADSIDE | • | 247 |
| Owen Aherne and his Dancers | • | 247 |
| , A Man Young and Old: | | |
| I. First Love | • | 249 |
| II. Human Dignity | | 250 |
| III. THE MERMAID | | 250 |
| IV. THE DEATH OF THE HARE . | | 250 |
| V. THE EMPTY CUP | | 251 |
| VI. HIS MEMORIES | | 251 |
| VII. THE FRIENDS OF HIS YOUTH . | | 252 |
| VIII. SUMMER AND SPRING | | 253 |
| IX. THE SECRETS OF THE OLD . | | 253 |
| X. HIS WILDNESS | | 254 |
| XI. From 'Oedipus at Colonus' | | 255 |
| THE THREE MONUMENTS | | 255 |
| *All Souls' Night | • | 256 |
| | | |
| THE WINDING STAIR AND OTHER P | OEMS | |
| (1933)— | | |
| In Memory of Eva Gore-Booth an | D CON | ī |
| MARKIEWICZ | | . 263 |
| - | | . 264 |
| DEATH | | . 265 |
| BLOOD AND THE MOON . | | . 267 |
| OIL AND BLOOD | | . 270 |
| Veronica's Napkin | | . 270 |
| Symbols | | . 270 |
| Spilt Milk • · · · · | , | . 271 |
| SPILI WILK VI | | |

| THE WINDING STAIR AND OTHER POEMS | | WORDS FO |
|---|-----|----------|
| (1933) (contd.)— | 3 9 | XI. H |
| THE NINETEENTH CENTURY AND AFTER | W. | XII. L |
| | | XIII. F |
| STATISTICS | | XIV. H |
| THREE MOVEMENTS | , | XV. 7 |
| THE SEVEN SAGES | | XVI. I |
| THE CRAZED MIOON | | XVII. A |
| Coole Park, 1929 · · · | | XVIII. |
| COOLE AND BALLYLEE, 1931 | | XIX. |
| For Anne Gregory | | XX. ' |
| SWIFT'S EPITAPH | | XXI. |
| AT ALGECIRAS—A IMEDITATION OF ON BEATT | | |
| THE CHOICE | | XXII. |
| | | XXIII. |
| BYZANTIUM 281 | | XXIV. |
| THE MOTHER OF GOD | | XXV. |
| Vacillation | | XX V + |
| Ouarrel in Old Age | 1 | A WOMA |
| THE RESULTS OF THOUGHT | | I. F |
| GRATITUDE TO THE UNKNOWN INSTRUCTORS . 207 | | II. B |
| DENORSE FOR INTEMPERATE SPEECH 200 | | III. A |
| STREAM AND SUN AT GLENDALOUGH 288 | | IV. H |
| | | v. (|
| WORDS FOR MUSIC PERHAPS: | | VI. C |
| I. CRAZY JANE AND THE BISHOP 290 | | VII. I |
| II. CRAZY JANE REPROVED 291 | | VIII. I |
| III. CRAZY JANE ON THE DAY OF JUDGMENT . 291 | | IX. |
| IV. CRAZY JANE ON THE DAT OF JOURNEYMAN . 292 | • • | X. 1 |
| V. CRAZY JANE ON GOD 293 | | XI. |
| V. CRAZY JANE ON GOD | | Y1. |
| VI CRAZI IANE INCRE | | |
| VII. CRAZY JANE GROWN OLD LOOKS AT THE | | |
| DANCERS . | | THE WAI |
| VIII. CIRES BONG | | THE OLI |
| IA. TOOKS WHAT S SELECT | | BAILE AN |
| A. HER ANAIETT | | |
| xiv | | |

| WORDS FOR MUSIC PERHAPS (contd | .)— | | P | AGE |
|--------------------------------|--------|-------|-----|---------|
| XI. HIS CONFIDENCE | | ٠ | . : | 298 |
| XII. Love's Loneliness . | | | . : | 298 |
| XIII. HER DREAM | | | | 299 |
| XIV. HIS BARGAIN | | • | | 299 |
| XV. THREE THINGS | • | - | ٠ | 300 |
| XVI. LULLABY | • | | • | 300 |
| XVII. AFTER LONG SILENCE . | | | | 301 |
| XVIII. MAD AS THE MIST AND SNO | | | | 301 |
| XIX. THOSE DANCING DAYS ARE | | | | |
| XX. 'I AM OF IRELAND' . | • | • | | 303 |
| XXI. THE DANCER AT CRUACH | AN Al | ND CR | | |
| Patrick | • | • | | 304 |
| | • | • | | 305 |
| XXIII. Tom at Cruachan . | • | • | ٠ | 306 |
| XXIV. OLD TOM AGAIN | | • | ٠ | 306 |
| XXV. THE DELPHIC ORACLE UPON | N PLOT | rinus | • | 306 |
| A WOMAN YOUNG AND OLD: | | | | |
| I. FATHER AND CHILD | | | • | 308 |
| II. BEFORE THE WORLD WAS M | ADE | | | 308 |
| III. A FIRST CONFESSION . | • | | • | 309 |
| IV. HER TRIUMPH | | | • | 310 |
| V. Consolation | | • | • | |
| VI. CHOSEN | • | • | ٠ | 311 |
| VII. PARTING | • | • | ٠ | 311 |
| VIII. HER VISION IN THE WOOD | • | • | • | 312 |
| IX. A Last Confession . | • | • | ٠ | 313 |
| X. MEETING | | • | ٠ | 314 |
| XI. From the 'Antigone' . | • | • | • | 315 |
| narrative and de | RAMA | ATIC | | |
| THE WANDERINGS OF OISIN (18 | 389). | | • | 3 19 |
| THE OLD AGE OF QUEEN MAE | VÉ (1 | 903) | | 363 |
| BAILE AND AILLINN (1903) | ζ- | , | | 371 |
| BAILE AND AIBLINN (1903) | • | • | • | <i></i> |

| THE SHAD | OWY | WAI | EK2 | (1906 |)— | | | | PAGE |
|----------|--------|-------|------|-------|-------|-------|---|---|------|
| Introdu | JCTORY | LINE | ES | | | | | | 383 |
| THE HA | RP OF | Aeno | GUS | | a | | | • | 385 |
| THE SH | ADOWY | WAT | TERS | • | v | • | | ٠ | 387 |
| | | | | | | | | | |
| THE TWO | KING | S (19 | 14) | • | ٠ | • | • | • | 4.15 |
| THE GIFT | OF H | arui | N AL | -RASI | HID (| 1923) | • | ٠ | 425 |
| | | | | | | | | | |
| NOTES | | | | | • | | | | 435 |
| | | | | | | | | | |
| INDEX TO | TITL | ES | | 4 | • | | q | | 453 |
| | === 0 | | 100 | | | | | | |
| INDEX TO | FIRS | I LII | NES | e | | • | 4 | ٠ | 465 |

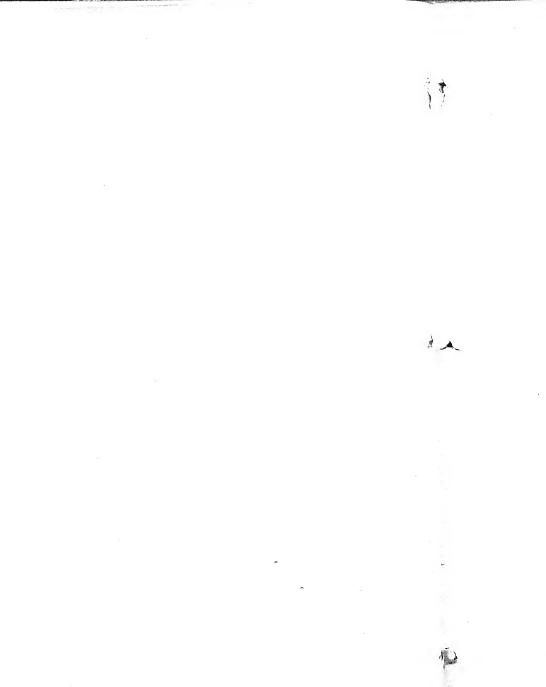
FRONTISPIECE

W. B. YEATS, 1907. From the Portrait by Augustus John in the possession of Dr. Oliver St. John Gogarty.

LYRICAL

Ş

В



CROSSWAYS 1889

15

'The stars are threshed, and the souls are threshed from their busks.'—WILLIAM BLAKE

TO A. E.

THE

THE WO And ove Of old Grey T: Yet stil But O, Of all In drea To the Words Where Word Where An idl By the Readir The k The w

> Then Nor s To hi Lest

Only In cla Troub

CROSSWAYS

THE SONG OF THE HAPPY SHEPHERD

THE woods of Arcady are dead, And over is their antique joy; Of old the world on dreaming fed; Grey Truth is now her painted toy; Yet still she turns her restless head: But O, sick children of the world, Of all the many changing things In dreary dancing past us whirled, To the cracked tune that Chronos sings, Words alone are certain good. Where are now the warring kings, Word be-mockers?—By the Rood Where are now the warring kings? An idle word is now their glory, By the stammering schoolboy said, Reading some entangled story: The kings of the old time are dead; The wandering earth herself may be Only a sudden flaming word, In clanging space a moment heard, Troubling the endless reverie.

Then nowise worship dusty deeds, Nor seek, for this is also sooth, To hunger fiercely after truth, Lest all thy toiling only breeds New dreams, new dreams; there is no truth Saving in thine own heart. Seek, then, No learning from the starry men, Who follow with the optic glass The whirling ways of stars that pass-Seek, then, for this is also sooth, No word of theirs—the cold star-bane Has cloven and rent their hearts in twain, And dead is all their human truth. Go gather by the humming sea Some twisted, echo-harbouring shell, And to its lips thy story tell, And they thy comforters will be, Rewarding in melodious guile Thy fretful words a little while, Till they shall singing fade in ruth And die a pearly brotherhood; For words alone are certain good: Sing, then, for this is also sooth.

I must be gone: there is a grave
Where daffodil and lily wave,
And I would please the hapless faun,
Buried under the sleepy ground,
With mirthful songs before the dawn.
His shouting days with mirth were crowned;
And still I dream he treads the lawn,
Walking ghostly in the dew,
Pierced by my glad singing through,
My songs of old earth's dreamy youth:
But ah! she dreams not now; dream thou!
For fair are poppies on the brow:
Dream, dream, for this is also sooth.

THERE was a And he, of hi Went walking And hummin And he called From their pa Among them: And then the Cried out, D The sea swep Rolling along He fled the And, in a far Cried all his But naught t The dewdrop And then th Sought once And though Till my own Their sadness And my own And my own And lo! my a Then he sar But the sad Changed all

Among her

THE SAD SHEPHERD

THERE was a man whom Sorrow named his friend, And he, of his high comrade Sorrow dreaming, Went walking with slow steps along the gleaming And humming sands, where windy surges wend: And he called loudly to the stars to bend From their pale thrones and comfort him, but they Among themselves laugh on and sing alway: And then the man whom Sorrow named his friend Cried out, Dim sea, hear my most piteous story! The sea swept on and cried her old cry still, Rolling along in dreams from hill to hill. He fled the persecution of her glory And, in a far-off, gentle valley stopping, Cried all his story to the dewdrops glistening. But naught they heard, for they are always listening, The dewdrops, for the sound of their own dropping. And then the man whom Sorrow named his friend Sought once again the shore, and found a shell, And thought, I will my heavy story tell Till my own words, re-echoing, shall send Their sadness through a hollow, pearly heart; And my own tale again for me shall sing, And my own whispering words be comforting, And lo! my ancient burden may depart. Then he sang softly nigh the pearly rim; But the sad dweller by the sea-ways lone Changed all he sang to inarticulate moan Among her wildering whirls, forgetting him.

THE CLOAK, THE BOAT, AND THE SHOES

'WHAT do you make so fair and bright?'

'I make the cloak of Sorrow: O lovely to see in all men's sight Shall be the cloak of Sorrow, In all men's sight.'

'What do you build with sails for flight?'

'I build a boat for Sorrow: O swift on the seas all day and night Saileth the rover Sorrow, All day and night.'

'What do you weave with wool so white?'

'I weave the shoes of Sorrow: Soundless shall be the footfall light In all men's ears of Sorrow, Sudden and light.'

anashuya and vijaya

A little Indian temple in the Golden Age. Around it a garden; around that the forest. Anashuya, the young priestess, kneeling within the temple.

Anashuya. Send peace on all the lands and flickering

O, may tranquillity walk by his elbow When wandering in the forest, if he love No other.—
Be plentiful
May panthe
With wisdo
When we a
A little from

Vijaya [enterin Anashu

With ming

Anashuya.

I, priestess
Prayers for

Vijaya.

Anashuya. By Who is Ar Another fil

Vijaya.

Anashuya [sin A sad, sad Sigh, O y appare The sad, sa

Sing, O yo carol To mighty

And laid y

Vijaya, I The sun I Weary, w No other.—Hear, and may the indolent flocks
Be plentiful.—And if he love another,
May panthers end him.—Hear, and load our king
With wisdom hour by hour.—May we two stand,
When we are dead, beyond the setting suns,
A little from the other shades apart,
With mingling hair, and play upon one lute.

Vijaya [entering and throwing a lily at her]. Hail! hail, my Anashuya.

Anashuya. No: be still.

I, priestess of this temple, offer up
Prayers for the land.

Vijaya. I will wait here, Amrita.

Anashuya. By mighty Brahma's ever-rustling robe, Who is Amrita? Sorrow of all sorrows! Another fills your mind.

Vijaya. My mother's name.

Anashuya [sings, coming out of the temple].

A sad, sad thought went by me slowly:

Sigh, O you little stars! O sigh and shake your blue apparel!

The sad, sad thought has gone from me now wholly: Sing, O you little stars! O sing and raise your rapturous carol

To mighty Brahma, he who made you many as the sands, And laid you on the gates of evening with his quiet hands. [Sits down on the steps of the temple.]

Vijaya, I have brought my evening rice; The sun has laid his chin on the grey wood, Weary, with all his poppies gathered round him. Vijaya. The hour when Kama, full of sleepy laughter, Rises, and showers abroad his fragrant arrows, Piercing the twilight with their murmuring barbs.

Anashuya. See how the sacred old flamingoes come, Painting with shadow all the marble steps: Aged and wise, they seek their wonted perches Within the temple, devious walking, made To wander by their melancholy minds. Yon tall one eyes my supper; chase him away, Far, far away. I named him after you. He is a famous fisher; hour by hour He ruffles with his bill the minnowed streams. Ah! there he snaps my rice. I told you so. Now cuff him off. He's off! A kiss for you, Because you saved my rice. Have you no thanks?

Vijaya [sings]. Sing you of her, O first few stars, Whom Brahma, touching with his finger, praises, for you

The van of wandering quiet; ere you be too calm and old,

Sing, turning in your cars,

Sing, till you raise your hands and sigh, and from your car-With all your whirling bair, and drop many an azure tear.

Anashuya. What know the pilots of the stars of tears?

Vijaya. Their faces are all worn, and in their eyes Flashes the fire of sadness, for they see The icicles that famish all the North, Where men lie frozen in the glimmering snow; And in the flaming forests cower the lion And lioness, with all their whimpering cubs; And, ever pacing on the verge of things,

The phanto While we a And feel th Amrita, wh

Anashuya [goir

And may s Vijaya. I love Among the

You live, a With her o I saw her s Anashuya. Vi

Vijaya. Ay, a Anashuya.

> Dread oath On the far Who still On their v Their hair From year Of aweles

> > The joyou Who neve

Vijaya.

Anashuya ∫si Maybe you newly

Swear!

The phantom, Beauty, in a mist of tears; While we alone have round us woven woods, And feel the softness of each other's hand, Amrita, while——

Anashuya [going away from him].

Ah me! you love another,

[Bursting into tears.]

And may some sudden dreadful ill befall her!

Vijaya. I loved another; now I love no other. Among the mouldering of ancient woods You live, and on the village border she, With her old father the blind wood-cutter; I saw her standing in her door but now.

Anashuya. Vijaya, swear to love her never more.

Vijaya. Ay, ay.

Anashuya. Swear by the parents of the gods,
Dread oath, who dwell on sacred Himalay,
On the far Golden Peak; enormous shapes,
Who still were old when the great sea was young;
On their vast faces mystery and dreams;
Their hair along the mountains rolled and filled
From year to year by the unnumbered nests
Of aweless birds, and round their stirless feet
The joyous flocks of deer and antelope,
Who never hear the unforgiving hound.
Swear!

Vijaya. By the parents of the gods, I swear.

Anashuya [sings]. I have forgiven, O new star!

Maybe you have not heard of us, you have come forth so newly,

You hunter of the fields afar!

Ah, you will know my loved one by his hunter's arrows truly,

Shoot on him shafts of quietness, that he may ever keep A lonely laughter, and may kiss his hands to me in sleep.

Farewell, Vijaya. Nay, no word, no word; I, priestess of this temple, offer up Prayers for the land.

[Vijaya goes.]

O Brahma, guard in sleep The merry lambs and the complacent kine, The flies below the leaves, and the young mice

In the tree roots, and all the sacred flocks Of red flamingoes; and my love, Vijaya; And may no restless fay with fidget finger

And may no restless lay with hage and Trouble his sleeping: give him dreams of me.

THE INDIAN UPON GOD

I PASSED along the water's edge below the humid trees, My spirit rocked in evening light, the rushes round my knees,

My spirit rocked in sleep and sighs; and saw the moorfowl pace

All dripping on a grassy slope, and saw them cease to

Each other round in circles, and heard the eldest speak: Who holds the world between His bill and made us strong or

weak Is an undying moorfowl, and He lives beyond the sky.

The rains are from His dripping wing, the moonbeams from His eye.

I passed a lit
Who made the
For I am in H
Is but a slidin
A little way of
Brimful of s
Skies,
He is a gentle
Conceive a this
I passed a lit
Who made the
gay,
He is a monstr
His languid ta

THE isla
And grea
The peal
A parrot
Raging a

Here we And was Murmus Along th

How we Hid und While o

A metec

Murmu

I passed a little further on and heard a lotus talk: Who made the world and ruleth it, He hangeth on a stalk, For I am in His image made, and all this tinkling tide Is but a sliding drop of rain between His petals wide. A little way within the gloom a roebuck raised his eyes Brimful of starlight, and he said: The Stamper of the Skies.

He is a gentle roebuck; for how else, I pray, could He Conceive a thing so sad and soft, a gentle thing like me? I passed a little further on and heard a peacock say: Who made the grass and made the worms and made my feathers pay.

He is a monstrous peacock, and He waveth all the night." His languid tail above us, lit with myriad spots of light.

THE INDIAN TO HIS LOVE

THE island dreams under the dawn And great boughs drop tranquillity; The peahens dance on a smooth lawn, A parrot sways upon a tree, Raging at his own image in the enamelled sea.

Here we will moor our lonely ship And wander ever with woven hands, Murmuring softly lip to lip, Along the grass, along the sands, Murmuring how far away are the unquiet lands:

How we alone of mortals are Hid under quiet boughs apart, While our love grows an Indian star, A meteor of the burning heart, One with the tide that gleams, the wings that gleam and dart,
The heavy boughs, the burnished dove
That moans and sighs a hundred days:
How when we die our shades will rove,
When eve has hushed the feathered ways,
With vapoury footsole by the water's drowsy blaze.

THE FALLING OF THE LEAVES

AUTUMN is over the long leaves that love us, And over the mice in the barley sheaves; Yellow the leaves of the rowan above us, And yellow the wet wild-strawberry leaves.

The hour of the waning of love has beset us, And weary and worn are our sad souls now; Let us part, ere the season of passion forget us, With a kiss and a tear on thy drooping brow.

EPHEMERA

'Your eyes that once were never weary of mine Are bowed in sorrow under pendulous lids, Because our love is waning.'

And then she:

'Although our love is waning, let us stand By the lone border of the lake once more, Together in that hour of gentleness When the poor tired child, Passion, falls asleep: How far away the stars seem, and how far Is our first kiss, and ah, how old my heart!' Pensive the While slow 'Passion ha

The woods Fell like fa A rabbit of Autumn w On the lor Turning, I Gathered i

'That we a Hate on as Before us l Are love, a

I SAT on common My word And shoot The hearts And drove From girl The fields The wild And every While he 'He drive

They will

leaves

Pensive they paced along the faded leaves, While slowly he whose hand held hers replied: 'Passion has often worn our wandering hearts.'

The woods were round them, and the yellow leaves Fell like faint meteors in the gloom, and once A rabbit old and lame limped down the path; Autumn was over him: and now they stood On the lone border of the lake once more: Turning, he saw that she had thrust dead leaves Gathered in silence, dewy as her eyes, In bosom and hair.

'Ah, do not mourn,' he said, 'That we are tired, for other loves await us; Hate on and love through unrepining hours. Before us lies eternity; our souls Are love, and a continual farewell.'

THE MADNESS OF KING GOLL

I sat on cushioned otter-skin:
My word was law from Ith to Emain,
And shook at Invar Amargin
The hearts of the world-troubling seamen,
And drove tumult and war away
From girl and boy and man and beast;
The fields grew fatter day by day,
The wild fowl of the air increased;
And every ancient Ollave said,
While he bent down his fading head,
'He drives away the Northern cold.'
They will not bush, the leaves a-flutter round me, the beech leaves old.

I sat and mused and drank sweet wine;
A herdsman came from inland valleys,
Crying, the pirates drove his swine
To fill their dark-beaked hollow galleys.
I called my battle-breaking men
And my loud brazen battle-cars
From rolling vale and rivery glen;
And under the blinking of the stars
Fell on the pirates by the deep,
And hurled them in the gulph of sleep:
These hands won many a torque of gold.
They will not bush, the leaves a-flutter round me, the beech leaves old.

But slowly, as I shouting slew
And trampled in the bubbling mire,
In my most secret spirit grew
A whirling and a wandering fire:
I stood: keen stars above me shone,
Around me shone keen eyes of men:
I laughed aloud and hurried on
By rocky shore and rushy fen;
I laughed because birds fluttered by,
And starlight gleamed, and clouds flew high,
And rushes waved and waters rolled.
They will not hush, the leaves a-flutter round me, the beech
leaves old.

And now I wander in the woods
When summer gluts the golden bees,
Or in autumnal solitudes
Arise the leopard-coloured trees;
Or when along the wintry strands

The corn
I wander
And sing,
The grey
I lead alo
The hares
They will
leaves

Murmuri
How I ha
A trampi
And saw
Deserted
And bore
Of some

I came up

That slur

And pass

I sang ho
Orchil sh
That hid
And shee
When m
It quench
The whir

But lift a

For the k

And I m

They will

leaves

The cormorants shiver on their rocks;
I wander on, and wave my hands,
And sing, and shake my heavy locks.
The grey wolf knows me; by one ear
I lead along the woodland deer;
The hares run by me growing bold.
They will not hush, the leaves a-flutter round me, the beech leaves old.

I came upon a little town
That slumbered in the harvest moon,
And passed a-tiptoe up and down,
Murmuring, to a fitful tune,
How I have followed, night and day,
A tramping of tremendous feet,
And saw where this old tympan lay
Deserted on a doorway seat,
And bore it to the woods with me;
Of some inhuman misery
Our married voices wildly trolled.
They will not bush, the leaves a-flutter round me, the beech leaves old.

I sang how, when day's toil is done, Orchil shakes out her long dark hair That hides away the dying sun And sheds faint odours through the air: When my hand passed from wire to wire It quenched, with sound like falling dew, The whirling and the wandering fire; But lift a mournful ulalu, For the kind wires are torn and still, And I must wander wood and hill Through summer's heat and winter's cold.

They will not hush, the leaves a-flutter round me, the beech leaves old.

THE STOLEN CHILD

Where dips the rocky highland
Of Sleuth Wood in the lake,
There lies a leafy island
Where flapping herons wake
The drowsy water-rats;
There we've hid our faery vats,
Full of berries
And of reddest stolen cherries.
Come away, O human child!
To the waters and the wild
With a faery, hand in hand,
For the world's more full of weeping than you
can understand.

Where the wave of moonlight glosses The dim grey sands with light, Far off by furthest Rosses We foot it all the night, Weaving olden dances, Mingling hands and mingling glances Till the moon has taken flight; To and fro we leap And chase the frothy bubbles, While the world is full of troubles And is anxious in its sleep. Come away, O human child! To the waters and the wild

И

With a faery, hand in hand, For the world's more full of weeping than you can understand.

Where the wandering water gushes
From the hills above Glen-Car,
In pools among the rushes
That scarce could bathe a star,
We seek for slumbering trout
And whispering in their ears
Give them unquiet dreams;
Leaning softly out
From ferns that drop their tears
Over the young streams.
Come away, O buman child!
To the waters and the wild
With a faery, hand in hand,
For the world's more full of weeping than you
can understand.

Away with us he's going,
The solemn-eyed:
He'll hear no more the lowing
Of the calves on the warm hillside
Or the kettle on the hob
Sing peace into his breast,
Or see the brown mice bob
Round and round the oatmeal-chest.
For he comes, the human child,
To the waters and the wild
With a faery, hand in hand,
From a world more full of weeping than he
can understand.

TO AN ISLE IN THE WATER

SHY one, shy one, Shy one of my heart, She moves in the firelight Pensively apart.

She carries in the dishes, And lays them in a row. To an isle in the water With her would I go.

She carries in the candles, And lights the curtained room, Shy in the doorway And shy in the gloom;

And shy as a rabbit, Helpful and shy. To an isle in the water With her would I fly.

DOWN BY THE SALLEY GARDENS

Down by the salley gardens my love and I did meet; She passed the salley gardens with little snow-white feet.

She bid me take love easy, as the leaves grow on the tree;

But I, being young and foolish, with her would not agree.

In a fiel And on han She bid

But I w

THE

You wa

at p Though you In the J wer

When I
The her
My sorr

That ca When I

And ah his Is heard Who pa

When I

In a field by the river my love and I did stand,

And on my leaning shoulder she laid her snow-white hand.

She bid me take life easy, as the grass grows on the weirs; But I was young and foolish, and now am full of tears.

THE MEDITATION OF THE OLD FISHERMAN

You waves, though you dance by my feet like children at play,

Though you glow and you glance, though you purr and you dart;

In the Junes that were warmer than these are, the waves were more gay,

When I was a boy with never a crack in my heart.

The herring are not in the tides as they were of old; My sorrow! for many a creak gave the creel in the cart That carried the take to Sligo town to be sold, When I was a boy with never a crack in my heart.

And ah, you proud maiden, you are not so fair when his oar

Is heard on the water, as they were, the proud and apart, Who paced in the eve by the nets on the pebbly shore, When I was a boy with never a crack in my heart.

THE BALLAD OF FATHER O'HART

GOOD Father John O'Hart In penal days rode out To a shoneen who had free lands And his own snipe and trout. In trust took he John's lands; Sleiveens were all his race; And he gave them as dowers to his daughters, And they married beyond their place.

But Father John went up, And Father John went down; And he wore small holes in his shoes, And he wore large holes in his gown.

All loved him, only the shoneen, Whom the devils have by the hair, From the wives, and the cats, and the children, To the birds in the white of the air.

The birds, for he opened their cages As he went up and down; And he said with a smile, 'Have peace now'; And he went his way with a frown.

But if when anyone died Came keeners hoarser than rooks, He bade them give over their keening; For he was a man of books.

And these were the works of John, When, weeping score by score, People came into Coloony; For he'd died at ninety-four.

There was no human keening; The birds from Knocknarea And the world round Knocknashee Came keening in that day.



The young birds and old birds Came flying, heavy and sad; Keening in from Tiraragh, Keening from Ballinafad;

Keening from Inishmurray, Nor stayed for bite or sup; This way were all reproved Who dig old customs up.

THE BALLAD OF MOLL MAGEE

Come round me, little childer; There, don't fling stones at me Because I mutter as I go; But pity Moll Magee.

My man was a poor fisher With shore lines in the say; My work was saltin' herrings The whole of the long day.

And sometimes from the saltin' shed I scarce could drag my feet, Under the blessed moonlight, Along the pebbly street.

I'd always been but weakly, And my baby was just born; A neighbour minded her by day, I minded her till morn. I lay upon my baby; Ye little childer dear, I looked on my cold baby When the morn grew frosty and clear.

A weary woman sleeps so hard! My man grew red and pale, And gave me money, and bade me go To my own place, Kinsale.

He drove me out and shut the door, And gave his curse to me; I went away in silence, No neighbour could I see.

The windows and the doors were shut, One star shone faint and green, The little straws were turnin' round Across the bare boreen.

I went away in silence: Beyond old Martin's byre I saw a kindly neighbour Blowin' her mornin' fire.

She drew from me my story— My money's all used up, And still, with pityin', scornin' eye, She gives me bite and sup.

She says my man will surely come, And fetch me home agin; But always, as I'm movin' round, Without doors or within, Pilin' the wood or pilin' the turf, Or goin' to the well, I'm thinkin' of my baby And keenin' to mysel'.

And sometimes I am sure she knows When, openin' wide His door, God lights the stars, His candles, And looks upon the poor.

So now, ye little childer, Ye won't fling stones at me; But gather with your shinin' looks And pity Moll Magee.

THE BALLAD OF THE FOXHUNTER

'LAY me in a cushioned chair; Carry me, ye four, With cushions here and cushions there, To see the world once more.

'To stable and to kennel go; Bring what is there to bring; Lead my Lollard to and fro, Or gently in a ring.

'Put the chair upon the grass: Bring Rody, and his hounds, That I may contented pass From these earthly bounds.' His eyelids droop, his head falls low, His old eyes cloud with dreams; The sun upon all things that grow Falls in sleepy streams.

Brown Lollard treads upon the lawn, And to the armchair goes, And now the old man's dreams are gone, He smooths the long brown nose.

And now moves many a pleasant tongue Upon his wasted hands, For leading aged hounds and young The huntsman near him stands.

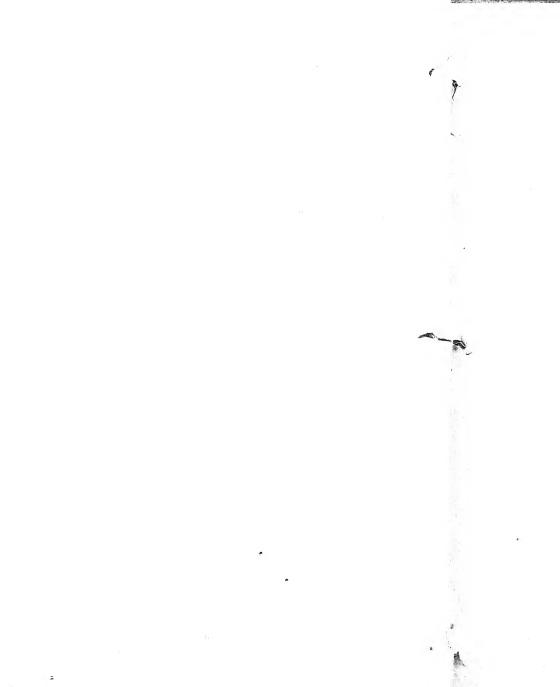
'Huntsman Rody, blow the horn, Make the hills reply.' The huntsman loosens on the morn A gay wandering cry.

Fire is in the old man's eyes, His fingers move and sway, And when the wandering music dies They hear him feebly say,

'Huntsman Rody, blow the horn, Make the hills reply.' 'I cannot blow upon my horn, I can but weep and sigh.'

Servants round his cushioned place Are with new sorrow wrung; Hounds are gazing on his face, Aged hounds and young. One blind hound only lies apart On the sun-smitten grass; He holds deep commune with his heart: The moments pass and pass;

The blind hound with a mournful din Lifts slow his wintry head; The servants bear the body in; The hounds wail for the dead.



THE ROSE 1893

'Sero te amavi, Pulchritudo tam antiqua et tam nova! Sero te amavi.'—S. AUGUSTINE TO LIONEL JOHNSON



TO T

Red Ro
Come r
Cuchul
The D
Who co
And th
In dand
Sing in

In all Eternal

I find 1

Come 1

A little Lest I : The we

The fie And he

But see By God And le

Come 1

Sing of Red Ro

THE ROSE

TO THE ROSE UPON THE ROOD OF TIME

Red Rose, proud Rose, sad Rose of all my days!
Come near me, while I sing the ancient ways:
Cuchulain battling with the bitter tide;
The Druid, grey, wood-nurtured, quiet-eyed,
Who cast round Fergus dreams, and ruin untold;
And thine own sadness, whereof stars, grown old
In dancing silver-sandalled on the sea,
Sing in their high and lonely melody.
Come near, that no more blinded by man's fate,
I find under the boughs of love and hate,
In all poor foolish things that live a day,
Eternal beauty wandering on her way.

Come near, come near, come near—Ah, leave me still A little space for the rose-breath to fill!

Lest I no more hear common things that crave;
The weak worm hiding down in its small cave,
The field-mouse running by me in the grass,
And heavy mortal hopes that toil and pass;
But seek alone to hear the strange things said
By God to the bright hearts of those long dead,
And learn to chaunt a tongue men do not know.
Come near; I would, before my time to go,
Sing of old Eire and the ancient ways:
Red Rose, proud Rose, sad Rose of all my days.

FERGUS AND THE DRUID

Fergus. This whole day have I followed in the rocks,
And you have changed and flowed from shape to
shape,

First as a raven on whose ancient wings Scarcely a feather lingered, then you seemed A weasel moving on from stone to stone, And now at last you wear a human shape, A thin grey man half lost in gathering night.

Druid. What would you, king of the proud Red Branch kings?

Fergus. This would I say, most wise of living souls:
Young subtle Conchubar sat close by me
When I gave judgment, and his words were wise,
And what to me was burden without end,
To him seemed easy, so I laid the crown
Upon his head to cast away my sorrow.

Druid. What would you, king of the proud Red Branch kings?

Fergus. A king and proud! and that is my despair. I feast amid my people on the hill,
And pace the woods, and drive my chariot-wheels
In the white border of the murmuring sea;
And still I feel the crown upon my head.

Druid. What would you, Fergus?

Fergus. Be no more a king
But learn the dreaming wisdom that is yours.

And on This boo

Fergus. A l Who wa

Druid. Tal Unloose

Fergus. I se

From che A green Upon a An old a king a And all But now Ah! Dru

Lay hid

Ct

A MAN
To Eme
And said
Go wate
But now

Then Ender And raise Parted 1

Druid. Look on my thin grey hair and hollow cheeks And on these hands that may not lift the sword, This body trembling like a wind-blown reed. No woman's loved me, no man sought my help.

Fergus. A king is but a foolish labourer Who wastes his blood to be another's dream.

Druid. Take, if you must, this little bag of dreams; Unloose the cord, and they will wrap you round.

Fergus. I see my life go drifting like a river
From change to change; I have been many things—
A green drop in the surge, a gleam of light
Upon a sword, a fir-tree on a hill,
An old slave grinding at a heavy quern,
A king sitting upon a chair of gold—
And all these things were wonderful and great;
But now I have grown nothing, knowing all.
Ah! Druid, Druid, how great webs of sorrow
Lay hidden in the small slate-coloured thing!

CUCHULAIN'S FIGHT WITH THE SEA

A MAN came slowly from the setting sun, To Emer, raddling raiment in her dun, And said, 'I am that swineherd whom you bid Go watch the road between the wood and tide, But now I have no need to watch it more.'

Then Emer cast the web upon the floor, And raising arms all raddled with the dye, Parted her lips with a loud sudden cry. That swineherd stared upon her face and said, 'No man alive, no man among the dead, Has won the gold his cars of battle bring.'

'But if your master comes home triumphing Why must you blench and shake from foot to crown?'

Thereon he shook the more and cast him down Upon the web-heaped floor, and cried his word: 'With him is one sweet-throated like a bird.'

'You dare me to my face,' and thereupon She smote with raddled fist, and where her son Herded the cattle came with stumbling feet, And cried with angry voice, 'It is not meet To idle life away, a common herd.'

'I have long waited, mother, for that word: But wherefore now?'

'There is a man to die; You have the heaviest arm under the sky.'

'Whether under its daylight or its stars My father stands amid his battle-cars.'

'But you have grown to be the taller man.'

'Yet somewhere under starlight or the sun My father stands.'

'Aged, worn out with wars On foot, on horseback or in battle-cars.'

'I only ask what way my journey lies, For He who made you bitter made you wise.'

'The Red Branch camp in a great company Between wood's rim and the horses of the sea. Go there, a But tell yo Whose bla Some feast

Among the And his ye Stared on a Even as Sp And ponde And all are And Concl With his c

At last Cu-His evenin I have ofte I have ofte Seek out w

'He bade 1 At the swo Some feast

Cuchulain Of all this

After short He spake to Who loves Or do you That you l Go there, and light a camp-fire at wood's rim; But tell your name and lineage to him Whose blade compels, and wait till they have found Some feasting man that the same oath has bound.'

Among those feasting men Cuchulain dwelt, And his young sweetheart close beside him knelt, Stared on the mournful wonder of his eyes, Even as Spring upon the ancient skies, And pondered on the glory of his days; And all around the harp-string told his praise, And Conchubar, the Red Branch king of kings, With his own fingers touched the brazen strings.

At last Cuchulain spake, 'Some man has made His evening fire amid the leafy shade. I have often heard him singing to and fro, I have often heard the sweet sound of his bow. Seek out what man he is.'

One went and came. 'He bade me let all know he gives his name At the sword-point, and waits till we have found Some feasting man that the same oath has bound.'

Cuchulain cried, 'I am the only man Of all this host so bound from childhood on.'

After short fighting in the leafy shade, He spake to the young man, 'Is there no maid Who loves you, no white arms to wrap you round, Or do you long for the dim sleepy ground, That you have come and dared me to my face?' 'The dooms of men are in God's hidden place.'

'Your head a while seemed like a woman's head That I loved once.'

Again the fighting sped,
But now the war-rage in Cuchulain woke,
And through that new blade's guard the old blade
broke,
And pierced him.

'Speak before your breath is done.'

'Cuchulain I, mighty Cuchulain's son.'

'I put you from your pain. I can no more.'

While day its burden on to evening bore, With head bowed on his knees Cuchulain stayed; Then Conchubar sent that sweet-throated maid, And she, to win him, his grey hair caressed; In vain her arms, in vain her soft white breast. Then Conchubar, the subtlest of all men, Ranking his Druids round him ten by ten, Spake thus: 'Cuchulain will dwell there and brood For three days more in dreadful quietude, And then arise, and raving slay us all. Chaunt in his ear delusions magical, That he may fight the horses of the sea.' The Druids took them to their mystery, And chaunted for three days.

Cuchulain stirred, Stared on the horses of the sea, and heard The cars of battle and his own name cried; And fought with the invulnerable tide. WHO
For th
Mourr
Troy p
And U

We an Amid Like th Under Lives of

Bow de Before Weary He ma Before

IF Mic When Looked He wo

Broodi In his He wo A chap

THE ROSE OF THE WORLD

Who dreamed that beauty passes like a dream? For these red lips, with all their mournful pride, Mournful that no new wonder may betide, Troy passed away in one high funeral gleam, And Usna's children died.

We and the labouring world are passing by: Amid men's souls, that waver and give place Like the pale waters in their wintry race, Under the passing stars, foam of the sky, Lives on this lonely face.

Bow down, archangels, in your dim abode: Before you were, or any hearts to beat, Weary and kind one lingered by His seat; He made the world to be a grassy road Before her wandering feet.

THE ROSE OF PEACE

IF Michael, leader of God's host When Heaven and Hell are met, Looked down on you from Heaven's door-post He would his deeds forget.

Brooding no more upon God's wars In his divine homestead, He would go weave out of the stars A chaplet for your head. And all folk seeing him bow down, And white stars tell your praise, Would come at last to God's great town, Led on by gentle ways;

And God would bid His warfare cease, Saying all things were well; And softly make a rosy peace, A peace of Heaven with Hell.

THE ROSE OF BATTLE

Rose of all Roses, Rose of all the World! The tall thought-woven sails, that flap unfurled Above the tide of hours, trouble the air, And God's bell buoyed to be the water's care; While hushed from fear, or loud with hope, a band With blown, spray-dabbled hair gather at hand. Turn if you may from battles never done, I call, as they go by me one by one, Danger no refuge holds, and war no peace, For him who hears love sing and never cease, Beside her clean-swept hearth, her quiet shade: But gather all for whom no love hath made A woven silence, or but came to cast A song into the air, and singing passed To smile on the pale dawn; and gather you Who have sought more than is in rain or dew, Or in the sun and moon, or on the earth, Or sighs amid the wandering, starry mirth, Or comes in laughter from the sea's sad lips, And wage God's battles in the long grey ships.

The sad, t To these C God's bell Of their sa

Rose of a

You, too,
Upon the
The bell
Beauty gr
Made you
Our long
For God
And when
They hav

Sung by th

We shall

Of our sa

We who O so ol Thousa

Give to Silence And th And th The sad, the lonely, the insatiable, To these Old Night shall all her mystery tell; God's bell has claimed them by the little cry Of their sad hearts, that may not live nor die.

Rose of all Roses, Rose of all the World! You, too, have come where the dim tides are hurled Upon the wharves of sorrow, and heard ring The bell that calls us on; the sweet far thing. Beauty grown sad with its eternity Made you of us, and of the dim grey sea. Our long ships loose thought-woven sails and wait, For God has bid them share an equal fate; And when at last, defeated in His wars, They have gone down under the same white stars, We shall no longer hear the little cry Of our sad hearts, that may not live nor die.

A FAERY SONG

Sung by the people of Faery over Diarmuid and Grania, in their bridal sleep under a Cromlech.

We who are old, old and gay, O so old! Thousands of years, thousands of years, If all were told:

Give to these children, new from the world, Silence and love; • And the long dew-dropping hours of the night, And the stars above: Give to these children, new from the world, Rest far from men.
Is anything better, anything better?
Tell us it then:

10

Us who are old, old and gay, O so old! Thousands of years, thousands of years, If all were told.

THE LAKE ISLE OF INNISFREE

I will arise and go now, and go to Innisfree, And a small cabin build there, of clay and wattles made: Nine bean-rows will I have there, a hive for the honeybee, And live alone in the bee-loud glade.

And I shall have some peace there, for peace comes dropping slow,

Dropping from the veils of the morning to where the cricket sings;

There midnight's all a glimmer, and noon a purple glow,

And evening full of the linnet's wings.

I will arise and go now, for always night and day
I hear lake water lapping with low sounds by the shore;
While I stand on the roadway, or on the pavements
grey,

I hear it in the deep heart's core.

A PIIs h The The The And Wh

Thr

THE b

The back And a Had b

A CRADLE SONG

THE angels are stooping Above your bed; They weary of trooping With the whimpering dead.

God's laughing in Heaven To see you so good; The Sailing Seven Are gay with His mood.

I sigh that kiss you, For I must own That I shall miss you When you have grown.

THE PITY OF LOVE

A PITY beyond all telling
Is hid in the heart of love:
The folk who are buying and selling,
The clouds on their journey above,
The cold wet winds ever blowing,
And the shadowy hazel grove
Where mouse-grey waters are flowing,
Threaten the head that I love.

THE SORROW OF LOVE

The brawling of a sparrow in the eaves, The brilliant moon and all the milky sky, And all that famous harmony of leaves, Had blotted out man's image and his cry. A girl arose that had red mournful lips And seemed the greatness of the world in tears, Doomed like Odysseus and the labouring ships And proud as Priam murdered with his peers;

Arose, and on the instant clamorous eaves, A climbing moon upon an empty sky, And all that lamentation of the leaves, Could but compose man's image and his cry.

WHEN YOU ARE OLD

WHEN you are old and grey and full of sleep, And nodding by the fire, take down this book, And slowly read, and dream of the soft look Your eyes had once, and of their shadows deep;

How many loved your moments of glad grace, And loved your beauty with love false or true, But one man loved the pilgrim soul in you, And loved the sorrows of your changing face;

And bending down beside the glowing bars, Murmur, a little sadly, how Love fled And paced upon the mountains overhead And hid his face amid a crowd of stars.

THE WHITE BIRDS

I would that we were, my beloved, white birds on the foam of the sea!

We tire of the flame of the meteor, before it can fade and flee:

And the flar on the r Has awaked

Has awaked may not

A weariness the lily

Ah, dream n

Or the flame the fall

For I would wanderii

I am haunt
Danaan :
Where Time
near us i
Soon far fro

flames w Were we onl the foam

> I DREAM Near no And they The peas Wonderi And rais

> > A cross t

And plan

And the flame of the blue star of twilight, hung low on the rim of the sky,

Has awaked in our hearts, my beloved, a sadness that may not die.

A weariness comes from those dreamers, dew-dabbled, the lily and rose;

Ah, dream not of them, my beloved, the flame of the meteor that goes,

Or the flame of the blue star that lingers hung low in the fall of the dew:

For I would we were changed to white birds on the wandering foam: I and you!

I am haunted by numberless islands, and many a Danaan shore,

Where Time would surely forget us, and Sorrow come near us no more;

Soon far from the rose and the lily and fret of the flames would we be,

Were we only white birds, my beloved, buoyed out on the foam of the sea!

A DREAM OF DEATH

I DREAMED that one had died in a strange place Near no accustomed hand; And they had nailed the boards above her face, The peasants of that land, Wondering to lay her in that solitude, And raised above her mound A cross they had made out of two bits of wood, And planted cypress round; And left her to the indifferent stars above Until I carved these words:

She was more beautiful than thy first love,
But now lies under boards.

THE COUNTESS CATHLEEN IN PARADISE

ALL the heavy days are over; Leave the body's coloured pride Underneath the grass and clover, With the feet laid side by side.

Bathed in flaming founts of duty She'll not ask a haughty dress; Carry all that mournful beauty To the scented oaken press.

Did the kiss of Mother Mary Put that music in her face? Yet she goes with footstep wary, Full of earth's old timid grace.

'Mong the feet of angels seven What a dancer glimmering! All the heavens bow down to Heaven, Flame to flame and wing to wing.

WHO GOES WITH FERGUS?

Wно will go drive with Fergus now, And pierce the deep wood's woven shade, And You And And

Upo For And And

And

Anc

THE MA

HE stood His hear And he l Before ea But whe. It seeme And sang Upon a w Where p That Tir

Under th

The sing

He wand His mind And he l Before th

But while

And dance upon the level shore? Young man, lift up your russet brow, And lift your tender eyelids, maid, And brood on hopes and fear no more.

And no more turn aside and brood Upon love's bitter mystery; For Fergus rules the brazen cars, And rules the shadows of the wood, And the white breast of the dim sea And all dishevelled wandering stars.

THE MAN WHO DREAMED OF FAERYLAND

He stood among a crowd at Drumahair;
His heart hung all upon a silken dress,
And he had known at last some tenderness,
Before earth took him to her stony care;
But when a man poured fish into a pile,
It seemed they raised their little silver heads,
And sang what gold morning or evening sheds
Upon a woven world-forgotten isle
Where people love beside the ravelled seas;
That Time can never mar a lover's vows
Under that woven changeless roof of boughs:
The singing shook him out of his new ease.

He wandered by the sands of Lissadell; His mind ran all on money cares and fears, And he had known at last some prudent years Before they heaped his grave under the hill; But while he passed before a plashy place, A lug-worm with its grey and muddy mouth Sang that somewhere to north or west or south There dwelt a gay, exulting, gentle race Under the golden or the silver skies; That if a dancer stayed his hungry foot It seemed the sun and moon were in the fruit: And at that singing he was no more wise.

He mused beside the well of Scanavin, He mused upon his mockers: without fail His sudden vengeance were a country tale, When earthy night had drunk his body in; But one small knot-grass growing by the pool Sang where—unnecessary cruel voice—Old silence bids its chosen race rejoice, Whatever ravelled waters rise and fall Or stormy silver fret the gold of day, And midnight there enfold them like a fleece And lover there by lover be at peace. The tale drove his fine angry mood away.

He slept under the hill of Lugnagall; And might have known at last unhaunted sleep Under that cold and vapour-turbaned steep, Now that the earth had taken man and all: Did not the worms that spired about his bones Proclaim with that unwearied, reedy cry That God has laid His fingers on the sky, That from those fingers glittering summer runs Upon the dancer by the dreamless wave. Why should those lovers that no lovers miss Dream, until God burn Nature with a kiss? The man has found no comfort in the grave.

THE DE

THERE wa When her And from A Druid k

And turned And hushed And all great

Ah, Exiles And planni May set a s I also bear

I tore it frountil the salt tore it from That countries

Can be so h That he's a That shakes And yet the

Gay bells of Of half-forg We and our On Munste

THE DEDICATION TO A BOOK OF STORIES SELECTED FROM THE IRISH NOVELISTS

THERE was a green branch hung with many a bell When her own people ruled this tragic Eire; And from its murmuring greenness, calm of Faery, A Druid kindness, on all hearers fell.

It charmed away the merchant from his guile, And turned the farmer's memory from his cattle, And hushed in sleep the roaring ranks of battle: And all grew friendly for a little while.

Ah, Exiles wandering over lands and seas, And planning, plotting always that some morrow May set a stone upon ancestral Sorrow! I also bear a bell-branch full of ease.

I tore it from green boughs winds tore and tossed Until the sap of summer had grown weary! I tore it from the barren boughs of Eire, That country where a man can be so crossed;

Can be so battered, badgered and destroyed That he's a loveless man: gay bells bring laughter That shakes a mouldering cobweb from the rafter; And yet the saddest chimes are best enjoyed.

Gay bells or sad, they bring you memories Of half-forgotten innocent old places: We and our bitterness have left no traces On Munster grass and Connemara skies.

THE LAMENTATION OF THE OLD PENSIONER

ALTHOUGH I shelter from the rain Under a broken tree,
My chair was nearest to the fire
In every company
That talked of love or politics,
Ere Time transfigured me.

Though lads are making pikes again For some conspiracy,
And crazy rascals rage their fill
At human tyranny;
My contemplations are of Time
That has transfigured me.

There's not a woman turns her face Upon a broken tree,
And yet the beauties that I loved
Are in my memory;
I spit into the face of Time
That has transfigured me.

THE BALLAD OF FATHER GILLIGAN

THE old priest Peter Gilligan Was weary night and day; For half his flock were in their beds, Or under green sods lay.

Once, while he nodded on a chair, At the moth-hour of eve, "

Anotl And l

'I hav For p And a My b

He kr He pr And t And s

They And 1 And 0 And v

Upon When The o

'Mavr While He ro And ro

He roo By roc The si 'Father Another poor man sent for him, And he began to grieve.

'I have no rest, nor joy, nor peace, For people die and die'; And after cried he, 'God forgive! My body spake, not I!'

He knelt, and leaning on the chair He prayed and fell asleep; And the moth-hour went from the fields, And stars began to peep.

They slowly into millions grew, And leaves shook in the wind; And God covered the world with shade, And whispered to mankind.

Upon the time of sparrow-chirp When the moths came once more, The old priest Peter Gilligan Stood upright on the floor.

'Mavrone, mavrone! the man has died While I slept on the chair'; He roused his horse out of its sleep, And rode with little care.

He rode now as he never rode, By rocky lane and fen; The sick man's wife opened the door: 'Father! you come again!' 'And is the poor man dead?' he cried. 'He died an hour ago.' The old priest Peter Gilligan In grief swayed to and fro.

'When you were gone, he turned and died As merry as a bird.' The old priest Peter Gilligan He knelt him at that word.

'He Who hath made the night of stars For souls who tire and bleed, Sent one of His great angels down To help me in my need.

'He Who is wrapped in purple robes, With planets in His care, Had pity on the least of things Asleep upon a chair.'

THE TWO TREES

BELOVED, gaze in thine own heart,
The holy tree is growing there;
From joy the holy branches start,
And all the trembling flowers they bear.
The changing colours of its fruit
Have dowered the stars with merry light;
The surety of its hidden root
Has planted quiet in the night;

The Has And Mur The Gyri In the Ren And Thir

Belo

Gaze The Lift Or c For That Root Brok For: In th The Mad Ther The Flyir Crue Or e And

Thy

Gaze

The shaking of its leafy head Has given the waves their melody, And made my lips and music wed, Murmuring a wizard song for thee. There the Loves a circle go, The flaming circle of our days, Gyring, spiring to and fro In those great ignorant leafy ways; Remembering all that shaken hair And how the wingèd sandals dart, Thine eyes grow full of tender care: Beloved, gaze in thine own heart.

Gaze no more in the bitter glass The demons, with their subtle guile, Lift up before us when they pass, Or only gaze a little while; For there a fatal image grows That the stormy night receives, Roots half hidden under snows, Broken boughs and blackened leaves. For all things turn to barrenness In the dim glass the demons hold, The glass of outer weariness, Made when God slept in times of old. There, through the broken branches, go The ravens of unresting thought; Flying, crying, to and fro, Cruel claw and hungry throat, Or else they stand and sniff the wind, And shake their ragged wings; alas! Thy tender eyes grow all unkind: Gaze no more in the bitter glass.

TO SOME I HAVE TALKED WITH BY THE FIRE

WHILE I wrought out these fitful Danaan rhymes, My heart would brim with dreams about the times When we bent down above the fading coals And talked of the dark folk who live in souls Of passionate men, like bats in the dead trees; And of the wayward twilight companies Who sigh with mingled sorrow and content, Because their blossoming dreams have never bent Under the fruit of evil and of good: And of the embattled flaming multitude Who rise, wing above wing, flame above flame, And, like a storm, cry the Ineffable Name, And with the clashing of their sword-blades make A rapturous music, till the morning break And the white hush end all but the loud beat Of their long wings, the flash of their white feet.

TO IRELAND IN THE COMING TIMES

Know, that I would accounted be True brother of a company
That sang, to sweeten Ireland's wrong,
Ballad and story, rann and song;
Nor be I any less of them,
Because the red-rose-bordered hem
Of her, whose history began
Before God made the angelic clan,
Trails all about the written page.
When Time began to rant and rage

17

Mad And To l And Upor

The

Nor
Witt
Beca
My
Of t
Whe
For
Abou
That
To r
Yet
May
Man
Aften

Whi.
The
Fron
Is bu
And
Wha
And
Abou

Are j

Ab,

AD

The measure of her flying feet Made Ireland's heart begin to beat; And Time bade all his candles flare To light a measure here and there; And may the thoughts of Ireland brood Upon a measured quietude.

Nor may I less be counted one With Davis, Mangan, Ferguson, Because, to him who ponders well, My rhymes more than their rhyming tell Of things discovered in the deep, Where only body's laid asleep. For the elemental creatures 20 About my table to and fro, That hurry from unmeasured mind To rant and rage in flood and wind; Yet he who treads in measured ways May surely barter gaze for gaze. Man ever journeys on with them After the red-rose-bordered hem. Ah, faeries, dancing under the moon, A Druid land, a Druid tune!

While still I may, I write for you The love I lived, the dream I knew. From our birthday, until we die, Is but the winking of an eye; And we; our singing and our love, What measurer Time has lit above, And all benighted things that go About my table to and fro, Are passing on to where may be,

In truth's consuming ecstasy,
No place for love and dream at all;
For God goes by with white footfall.
I cast my heart into my rhymes,
That you, in the dim coming times,
May know how my heart went with them
After the red-rose-bordered hem.

THE W

THE WIND AMONG THE REEDS 1899

THE V

TH

THE hos And ove Caoilte to And Nia Empty yo The wind Our cheek Our breas Our arms And if ar We come The host And who Caoilte to

T

And Nia

O sweet Go to th And bid Flame un Have yo

That you

THE WIND AMONG THE REEDS

THE HOSTING OF THE SIDHE

THE host is riding from Knocknarea And over the grave of Clooth-na-Bare; Caoilte tossing his burning hair, And Niamh calling Away, come away: Empty your heart of its mortal dream. The winds awaken, the leaves whirl round, Our cheeks are pale, our hair is unbound, Our breasts are heaving, our eyes are agleam, Our arms are waving, our lips are apart; And if any gaze on our rushing band, We come between him and the deed of his hand, We come between him and the hope of his heart. The host is rushing 'twixt night and day, And where is there hope or deed as fair? Caoilte tossing his burning hair, And Niamh calling Away, come away.

THE EVERLASTING VOICES

O sweet everlasting Voices, be still; Go to the guards of the heavenly fold And bid them wander obeying your will, Flame under flame, till Time be no more; Have you not heard that our hearts are old, That you call in birds, in wind on the hill,

THE MOODS

Time drops in decay, Like a candle burnt out, And the mountains and woods Have their day, have their day; What one in the rout Of the fire-born moods Has fallen away?

THE LOVER TELLS OF THE ROSE IN HIS HEART

All things uncomely and broken, all things worn out and old,

The cry of a child by the roadway, the creak of a lumbering cart,

The heavy steps of the ploughman, splashing the wintry mould,

Are wronging your image that blossoms a rose in the deeps of my heart.

The wrong of unshapely things is a wrong too great to be told;

I hunger to build them anew and sit on a green knoll apart,

With the earth and the sky and the water, re-made, like a casket of gold

For my dreams of your image that blossoms a rose in the deeps of my heart.

O'DRISC The wild From the

> And he s At the co

Of Bridg

Of the d

He heard A piper p And neve And neve

And he sa Who dan And Brid With a sa

The dance
And man
And a yo
And a yo

But Bridg Away fro To old m With a tr

THE HOST OF THE AIR

O'DRISCOLL drove with a song The wild duck and the drake From the tall and the tufted reeds Of the drear Hart Lake.

And he saw how the reeds grew dark At the coming of night-tide, And dreamed of the long dim hair Of Bridget his bride.

He heard while he sang and dreamed A piper piping away, And never was piping so sad, And never was piping so gay.

And he saw young men and young girls Who danced on a level place, And Bridget his bride among them, With a sad and a gay face.

The dancers crowded about him And many a sweet thing said, And a young man brought him red wine And a young girl white bread.

But Bridget drew him by the sleeve Away from the merry bands, To old men playing at cards With a twinkling of ancient hands. The bread and the wine had a doom, For these were the host of the air; He sat and played in a dream Of her long dim hair.

He played with the merry old men And thought not of evil chance, Until one bore Bridget his bride Away from the merry dance.

He bore her away in his arms, The handsomest young man there, And his neck and his breast and his arms Were drowned in her long dim hair.

O'Driscoll scattered the cards And out of his dream awoke: Old men and young men and young girls Were gone like a drifting smoke;

But he heard high up in the air A piper piping away, And never was piping so sad, And never was piping so gay.

THE FISH

ALTHOUGH you hide in the ebb and flow Of the pale tide when the moon has set, The people of coming days will know About the casting out of my net,

And how you
Over the lit
And think
And blame

TH

And clap their h For they will ric With heavy whi I kiss my wailin And hear the na Desolate winds Desolate winds to Desolate winds to The doors of He

THE Danaan chi

ghost; O heart the win Is comelier than

> Out-worn Come clear Laugh, hear Sigh, heart,

Your mothe Dew ever sh Though hop Burning in f And how you have leaped times out of mind Over the little silver cords, And think that you were hard and unkind, And blame you with many bitter words.

THE UNAPPEASABLE HOST

THE Danaan children laugh, in cradles of wrought gold, And clap their hands together, and half close their eyes, For they will ride the North when the ger-eagle flies, With heavy whitening wings, and a heart fallen cold: I kiss my wailing child and press it to my breast, And hear the narrow graves calling my child and me. Desolate winds that cry over the wandering sea; Desolate winds that hover in the flaming West; Desolate winds that beat the doors of Heaven, and beat The doors of Hell and blow there many a whimpering ghost;

O heart the winds have shaken, the unappeasable host Is comelier than candles at Mother Mary's feet.

INTO THE TWILIGHT

OUT-WORN heart, in a time out-worn, Come clear of the nets of wrong and right; Laugh, heart, again in the grey twilight, Sigh, heart, again in the dew of the morn.

Your mother Eire is always young, Dew ever shining and twilight grey; Though hope fall from you and love decay, Burning in fires of a slanderous tongue. Come, heart, where hill is heaped upon hill: For there the mystical brotherhood Of sun and moon and hollow and wood And river and stream work out their will;

And God stands winding His lonely horn, And time and the world are ever in flight; And love is less kind than the grey twilight, And hope is less dear than the dew of the morn.

THE SONG OF WANDERING AENGUS

I WENT out to the hazel wood,
Because a fire was in my head,
And cut and peeled a hazel wand,
And hooked a berry to a thread;
And when white moths were on the wing,
And moth-like stars were flickering out,
I dropped the berry in a stream
And caught a little silver trout.

When I had laid it on the floor
I went to blow the fire aflame,
But something rustled on the floor,
And some one called me by my name:
It had become a glimmering girl
With apple blossom in her hair
Who called me by my name and ran
And faded through the brightening air.

Though I am old with wandering Through hollow lands and hilly lands, I will find And kiss And walk And pluc The silve The gold

THE S

I RISE in the Till the seed And then I martill stars are And the youn Of the match And their day And they sigh While I must And the seed

THE

O WHAT That was He bade And my l

O what to The hous The shade Will hide

I will find out where she has gone, And kiss her lips and take her hands; And walk among long dappled grass, And pluck till time and times are done The silver apples of the moon, The golden apples of the sun.

THE SONG OF THE OLD MOTHER

I RISE in the dawn, and I kneel and blow Till the seed of the fire flicker and glow; And then I must scrub and bake and sweep Till stars are beginning to blink and peep; And the young lie long and dream in their bed Of the matching of ribbons for bosom and head, And their day goes over in idleness, And they sigh if the wind but lift a tress: While I must work because I am old, And the seed of the fire gets feeble and cold.

THE HEART OF THE WOMAN

O WHAT to me the little room That was brimmed up with prayer and rest; He bade me out into the gloom, And my breast lies upon his breast.

O what to me my mother's care, The house where I was safe and warm; The shadowy blossom of my hair Will hide us from the bitter storm. O hiding hair and dewy eyes, I am no more with life and death, My heart upon his warm heart lies, My breath is mixed into his breath.

THE LOVER MOURNS FOR THE LOSS OF LOVE

PALE brows, still hands and dim hair, I had a beautiful friend
And dreamed that the old despair
Would end in love in the end:
She looked in my heart one day
And saw your image was there;
She has gone weeping away.

HE MOURNS FOR THE CHANGE THAT HAS COME UPON HIM AND HIS BELOVED AND LONGS FOR THE END OF THE WORLD

Do you not hear me calling, white deer with no horns? I have been changed to a hound with one red ear; I have been in the Path of Stones and the Wood of Thorns,

For somebody hid hatred and hope and desire and fear Under my feet that they follow you night and day. A man with a hazel wand came without sound; He changed me suddenly; I was looking another way; And now my calling is but the calling of a hound; And Time and Birth and Change are hurrying by. I would that the Boar without bristles had come from the West

And had rooted the sun and moon and stars out of the sky And lay in the darkness, grunting, and turning to his rest. HE BID

I HEAR the Shad
Their hoofs hea
white;
The North un
night,
The East her hi
The West weep
The South is po
O vanity of Sle
The Horses of I
Beloved, let you
Over my heart,
Drowning love':
And hiding the
feet.

HE

O CURLE Or only t Because y Passion-d That was There is

HE REM

WHEN m My heart

HE BIDS HIS BELOVED BE AT PEACE

I HEAR the Shadowy Horses, their long manes a-shake, Their hoofs heavy with tumult, their eyes glimmering white;

The North unfolds above them clinging, creeping night,

The East her hidden joy before the morning break, The West weeps in pale dew and sighs passing away, The South is pouring down roses of crimson fire: O vanity of Sleep, Hope, Dream, endless Desire, The Horses of Disaster plunge in the heavy clay: Beloved, let your eyes half close, and your heart beat Over my heart, and your hair fall over my breast, Drowning love's lonely hour in deep twilight of rest, And hiding their tossing manes and their tumultuous feet.

HE REPROVES THE CURLEW

O curlew, cry no more in the air, Or only to the water in the West; Because your crying brings to my mind Passion-dimmed eyes and long heavy hair That was shaken out over my breast: There is enough evil in the crying of wind.

HE REMEMBERS FORGOTTEN BEAUTY

When my arms wrap you round I press My heart upon the loveliness

That has long faded from the world; The jewelled crowns that kings have hurled In shadowy pools, when armies fled; The love-tales wrought with silken thread By dreaming ladies upon cloth That has made fat the murderous moth; The roses that of old time were Woven by ladies in their hair, The dew-cold lilies ladies bore Through many a sacred corridor Where such grey clouds of incense rose That only God's eyes did not close: For that pale breast and lingering hand Come from a more dream-heavy land, A more dream-heavy hour than this; And when you sigh from kiss to kiss I hear white Beauty sighing, too, For hours when all must fade like dew, But flame on flame, and deep on deep, Throne over throne where in half sleep, Their swords upon their iron knees, Brood her high lonely mysteries.

A POET TO HIS BELOVED

I BRING you with reverent hands
The books of my numberless dreams,
White woman that passion has worn
As the tide wears the dove-grey sands,
And with heart more old than the horn
That is brimmed from the pale fire of time:
White woman with numberless dreams,
I bring you my passionate rhyme.

HE GIVES

Fasten y And bind I bade m It worked Building Out of tl

And bind And all r And cand And stars Live but

You need

TO HIS HE

Remember Him who And the way Let the star Cover over

With the l

THE grant of the base And s

HE GIVES HIS BELOVED CERTAIN RHYMES

FASTEN your hair with a golden pin, And bind up every wandering tress; I bade my heart build these poor rhymes: It worked at them, day out, day in, Building a sorrowful loveliness Out of the battles of old times.

You need but lift a pearl-pale hand, And bind up your long hair and sigh; And all men's hearts must burn and beat; And candle-like foam on the dim sand, And stars climbing the dew-dropping sky, Live but to light your passing feet.

TO HIS HEART, BIDDING IT HAVE NO FEAR

BE you still, be you still, trembling heart; Remember the wisdom out of the old days: Him who trembles before the flame and the flood, And the winds that blow through the starry ways, Let the starry winds and the flame and the flood Cover over and hide, for he has no part With the lonely, majestical multitude.

THE CAP AND BELLS

THE jester walked in the garden: The garden had fallen still; He bade his soul rise upward And stand on her window-sill. It rose in a straight blue garment, When owls began to call: It had grown wise-tongued by thinking Of a quiet and light footfall;

But the young queen would not listen; She rose in her pale night-gown; She drew in the heavy casement And pushed the latches down.

He bade his heart go to her, When the owls called out no more; In a red and quivering garment It sang to her through the door.

It had grown sweet-tongued by dreaming Of a flutter of flower-like hair; But she took up her fan from the table And waved it off on the air.

'I have cap and bells,' he pondered, 'I will send them to her and die'; And when the morning whitened He left them where she went by.

She laid them upon her bosom, Under a cloud of her hair, And her red lips sang them a love-song Till stars grew out of the air.

She opened her door and her window, And the heart and the soul came through, To her right hand came the red one, To her left hand came the blue. They set
A chatter
And her l
And the

THE V

THE dews drop spears Suddenly hurtle And then the cl Of unknown pe We who still la The grey cairn of dew,

Master of the st

Being weary of

If this importur With words light Or hopes that it Crumple the ros And cover your 'O Hearts of with O Winds, older That murmuring From marble cite. In dove-grey fae From battle-ban Queens wrought

They set up a noise like crickets, A chattering wise and sweet, And her hair was a folded flower And the quiet of love in her feet.

THE VALLEY OF THE BLACK PIG

THE dews drop slowly and dreams gather: unknown spears

Suddenly hurtle before my dream-awakened eyes, And then the clash of fallen horsemen and the cries Of unknown perishing armies beat about my ears. We who still labour by the cromlech on the shore, The grey cairn on the hill, when day sinks drowned in dew,

Being weary of the world's empires, bow down to you, Master of the still stars and of the flaming door.

THE LOVER ASKS FORGIVENESS BECAUSE OF HIS MANY MOODS

If this importunate heart trouble your peace With words lighter than air,
Or hopes that in mere hoping flicker and cease;
Crumple the rose in your hair;
And cover your lips with odorous twilight and say,
'O Hearts of wind-blown flame!
O Winds, older than changing of night and day,
That murmuring and longing came
From marble cities loud with tabors of old
In dove-grey faery lands;
From battle-banners, fold upon purple fold,
Queens wrought with glimmering hands;

That saw young Niamh hover with love-lorn face Above the wandering tide;
And lingered in the hidden desolate place
Where the last Phoenix died,
And wrapped the flames above his holy head;
And still murmur and long:
O Piteous Hearts, changing till change be dead
In a tumultuous song':
And cover the pale blossoms of your breast
With your dim heavy hair,
And trouble with a sigh for all things longing for rest
The odorous twilight there.

HE TELLS OF A VALLEY FULL OF LOVERS

I DREAMED that I stood in a valley, and amid sighs, For happy lovers passed two by two where I stood; And I dreamed my lost love came stealthily out of the wood

With her cloud-pale eyelids falling on dream-dimmed eyes:

I cried in my dream, O women, bid the young men lay Their heads on your knees, and drown their eyes with your hair, Or remembering hers they will find no other face fair Till all the valleys of the world have been withered away.

HE TELLS OF THE PERFECT BEAUTY

O CLOUD-PALE eyelids, dream-dimmed eyes, The poets labouring all their days To build a perfect beauty in rhyme Are overthrown by a woman's gaze And by a And then Is dropping Before the

HE HE

I wa Of t Whe Unti That And The i

Your

Of yo

HE THINKS

HALF close y And dream a They have sp But weigh th I made it out Their childre

> CUMHAL ca Till Dathi With a blin Between th

And by the unlabouring brood of the skies: And therefore my heart will bow, when dew Is dropping sleep, until God burn time, Before the unlabouring stars and you.

HE HEARS THE CRY OF THE SEDGE

I WANDER by the edge
Of this desolate lake
Where wind cries in the sedge:
Until the axle break
That keeps the stars in their round,
And hands hurl in the deep
The banners of East and West,
And the girdle of light is unbound,
Your breast will not lie by the breast
Of your beloved in sleep.

HE THINKS OF THOSE WHO HAVE SPOKEN EVIL OF HIS BELOVED

HALF close your eyelids, loosen your hair, And dream about the great and their pride; They have spoken against you everywhere, But weigh this song with the great and their pride; I made it out of a mouthful of air, Their children's children shall say they have lied.

THE BLESSED

CUMHAL called out, bending his head, Till Dathi came and stood, With a blink in his eyes, at the cave-mouth, Between the wind and the wood. And Cumhal said, bending his knees, 'I have come by the windy way To gather the half of your blessedness And learn to pray when you pray.

'I can bring you salmon out of the streams And heron out of the skies.' But Dathi folded his hands and smiled With the secrets of God in his eyes.

And Cumhal saw like a drifting smoke All manner of blessed souls, Women and children, young men with books, And old men with croziers and stoles.

'Praise God and God's Mother,' Dathi said, 'For God and God's Mother have sent The blessedest souls that walk in the world To fill your heart with content.'

'And which is the blessedest,' Cumhal said, 'Where all are comely and good? Is it these that with golden thuribles Are singing about the wood?'

'My eyes are blinking,' Dathi said, 'With the secrets of God half blind, But I can see where the wind goes And follow the way of the wind;

'And blessedness goes where the wind goes, And when it is gone we are dead; I see the blessedest soul in the world And he nods a drunken head. " 'O blessedn And whithe And one ha The Incorru

'That drows And the swe While time In twilights

FAR-OFF, most s Enfold me in m Who sought the Or in the wine-And tumult of a Among pale eyel Men have named The ancient bear Of the crowned Saw the Pierced In Druid vapour Till vain frenzy Who met Fand By a grey shore And lost the wor And him who di And till a hundr Feasted, and wer And the proud c And sorrow away 'O blessedness comes in the night and the day And whither the wise heart knows; And one has seen in the redness of wine The Incorruptible Rose,

'That drowsily drops faint leaves on him And the sweetness of desire, While time and the world are ebbing away In twilights of dew and of fire.'

THE SECRET ROSE

FAR-OFF, most secret, and inviolate Rose. Enfold me in my hour of hours; where those Who sought thee in the Holy Sepulchre, Or in the wine-vat, dwell beyond the stir And tumult of defeated dreams; and deep Among pale eyelids, heavy with the sleep Men have named beauty. Thy great leaves enfold The ancient beards, the helms of ruby and gold Of the crowned Magi; and the king whose eyes Saw the Pierced Hands and Rood of elder rise In Druid vapour and make the torches dim: Till vain frenzy awoke and he died; and him Who met Fand walking among flaming dew By a grey shore where the wind never blew, And lost the world and Emer for a kiss: And him who drove the gods out of their liss, And till a hundred morns had flowered red Feasted, and wept the barrows of his dead; And the proud dreaming king who flung the crown And sorrow away, and calling bard and clown

Dwelt among wine-stained wanderers in deep woods; And him who sold tillage, and house, and goods, And sought through lands and islands numberless years,

Until he found, with laughter and with tears, A woman of so shining loveliness
That men threshed corn at midnight by a tress, A little stolen tress. I, too, await
The hour of thy great wind of love and hate.
When shall the stars be blown about the sky,
Like the sparks blown out of a smithy, and die?
Surely thine hour has come, thy great wind blows,
Far-off, most secret, and inviolate Rose?

MAID QUIET

Where has Maid Quiet gone to,
Nodding her russet hood?
The winds that awakened the stars
Are blowing through my blood.
O how could I be so calm
When she rose up to depart?
Now words that called up the lightning
Are hurtling through my heart.

THE TRAVAIL OF PASSION

When the flaming lute-thronged angelic door is wide;
When an immortal passion breathes in mortal clay;
Our hearts endure the scourge, the plaited thorns, the

Crowded with bitter faces, the wounds in palm and side,

The vinegar stream; We will ben That it may dew, Lilies of dear

THE LOV

Voice And Be no But t Time Your

For a

THO

THE LOVE

O women, kr When songs I And smoke fi violet air And covers aw Bend down an Till the Attor.

And call to m

Amid the hove

The vinegar-heavy sponge, the flowers by Kedron stream;

We will bend down and loosen our hair over you, That it may drop faint perfume, and be heavy with dew,

Lilies of death-pale hope, roses of passionate dream.

THE LOVER PLEADS WITH HIS FRIEND FOR OLD FRIENDS

Though you are in your shining days, Voices among the crowd And new friends busy with your praise, Be not unkind or proud, But think about old friends the most: Time's bitter flood will rise, Your beauty perish and be lost For all eyes but these eyes.

THE LOVER SPEAKS TO THE HEARERS OF HIS SONGS IN COMING DAYS

O women, kneeling by your altar-rails long hence, When songs I wove for my beloved hide the prayer, And smoke from this dead heart drifts through the violet air

And covers away the smoke of myrrh and frankincense; Bend down and pray for all that sin I wove in song, Till the Attorney for Lost Souls cry her sweet cry, And call to my beloved and me: 'No longer fly Amid the hovering, piteous, penitential throng.'

THE POET PLEADS WITH THE ELEMENTAL POWERS

THE Powers whose name and shape no living creature knows

Have pulled the Immortal Rose;

And though the Seven Lights bowed in their dance and wept,

The Polar Dragon slept,

Whither her footsteps go.

His heavy rings uncoiled from glimmering deep to deep: When will he wake from sleep?

Great Powers of falling wave and wind and windy fire, With your harmonious choir
Encircle her I love and sing her into peace,
That my old care may cease;
Unfold your flaming wings and cover out of sight
The nets of day and night.

Dim Powers of drowsy thought, let her no longer be Like the pale cup of the sea,
When winds have gathered and sun and moon burned dim
Above its cloudy rim;
But let a gentle silence wrought with music flow

HE WISHES HIS BELOVED WERE DEAD

Were you but lying cold and dead, And lights were paling out-of the West, You would come hither, and bend your head, And I would lay my head on your breast; And you w Forgiving Nor would Though yo But know About the O would, Under the While ligh

HE WISH

HAD I the Enwrought The blue at Of night at I would spr But I, being I have spread Tread softly

HE THINKS (

I HAVE drunk
And weep bee
I have been a
The Pilot Star
Among my lea
I became a rus
I became a ma
Knowing one,



And you would murmur tender words, Forgiving me, because you were dead:
Nor would you rise and hasten away,
Though you have the will of the wild birds,
But know your hair was bound and wound
About the stars and moon and sun:
O would, beloved, that you lay
Under the dock-leaves in the ground,
While lights were paling one by one.

HE WISHES FOR THE CLOTHS OF HEAVEN

HAD I the heavens' embroidered cloths, Enwrought with golden and silver light, The blue and the dim and the dark cloths Of night and light and the half-light, I would spread the cloths under your feet: But I, being poor, have only my dreams; I have spread my dreams under your feet; Tread softly because you tread on my dreams.

HE THINKS OF HIS PAST GREATNESS WHEN A PART OF THE CONSTELLATIONS OF HEAVEN

I HAVE drunk ale from the Country of the Young And weep because I know all things now: I have been a hazel-tree, and they hung The Pilot Star and the Crooked Plough Among my leaves in times out of mind: I became a rush that horses tread: I became a man, a hater of the wind, Knowing one, out of all things, alone, that his head

May not lie on the breast nor his lips on the hair Of the woman that he loves, until he dies. O beast of the wilderness, bird of the air, Must I endure your amorous cries?

THE FIDDLER OF DOONEY

WHEN I play on my fiddle in Dooney, Folk dance like a wave of the sea; My cousin is priest in Kilvarnet, My brother in Mocharabuiee.

I passed my brother and cousin: They read in their books of prayer; I read in my book of songs I bought at the Sligo fair.

When we come at the end of time To Peter sitting in state, He will smile on the three old spirits, But call me first through the gate;

For the good are always the merry, Save by an evil chance, And the merry love the fiddle, And the merry love to dance:

And when the folk there spy me, They will all come up to me, With 'Here is the fiddler of Dooney!' And dance like a wave of the sea.

IN THE SEVEN WOODS

I HAVE head Make their Make their Hum in the Unavarant That empt Tara uproof Upon the transport And hanging Because it is I am content Wanders land Among pig Who but at A cloudy quality and A cloudy quagust 1900

I THOUGH Made out There's n As when Tall and n Delicate i

This beau I could we

IN THE SEVEN WOODS

IN THE SEVEN WOODS

I HAVE heard the pigeons of the Seven Woods Make their faint thunder, and the garden bees Hum in the lime-tree flowers; and put away The unavailing outcries and the old bitterness That empty the heart. I have forgot awhile Tara uprooted, and new commonness Upon the throne and crying about the streets And hanging its paper flowers from post to post, Because it is alone of all things happy. I am contented, for I know that Quiet Wanders laughing and eating her wild heart Among pigeons and bees, while that Great Archer, Who but awaits His hour to shoot, still hangs A cloudy quiver over Parc-na-lee.

August 1902

THE ARROW

I THOUGHT of your beauty, and this arrow, Made out of a wild thought, is in my marrow. There's no man may look upon her, no man, As when newly grown to be a woman, Tall and noble but with face and bosom Delicate in colour as apple blossom. This beauty's kinder, yet for a reason I could weep that the old is out of season.

THE FOLLY OF BEING COMFORTED

One that is ever kind said yesterday: 'Your well-beloved's hair has threads of grey, And little shadows come about her eyes; Time can but make it easier to be wise Though now it seems impossible, and so All that you need is patience.'

Heart cries, 'No, I have not a crumb of comfort, not a grain. Time can but make her beauty over again: Because of that great nobleness of hers The fire that stirs about her, when she stirs, Burns but more clearly. O she had not these ways When all the wild summer was in her gaze.'

O heart! O heart! if she'd but turn her head, You'd know the folly of being comforted.

OLD MEMORY

O THOUGHT, fly to her when the end of day
Awakens an old memory, and say,
'Your strength, that is so lofty and fierce and kind,
It might call up a new age, calling to mind
The queens that were imagined long ago,
Is but half yours: he kneaded in the dough
Through the long years of youth, and who would have
thought
It all, and more than it all, would come to naught,

And that dea For when we Or, if there That would

> Nev: Will

To p

Certa That For e But a O ne For the Have

If dea He th For h

THE

I CRIED when 'Let peewit ca I long for your For the roads a mind.'

The honey-pale And I fell aslee No boughs have

The boughs have

1

And that dear words meant nothing?' But enough, For when we have blamed the wind we can blame love; Or, if there needs be more, be nothing said That would be harsh for children that have strayed.

NEVER GIVE ALL THE HEART

Never give all the heart, for love Will hardly seem worth thinking of To passionate women if it seem Certain, and they never dream That it fades out from kiss to kiss; For everything that's lovely is But a brief, dreamy, kind delight. O never give the heart outright, For they, for all smooth lips can say, Have given their hearts up to the play. And who could play it well enough If deaf and dumb and blind with love? He that made this knows all the cost, For he gave all his heart and lost.

THE WITHERING OF THE BOUGHS

I CRIED when the moon was murmuring to the birds: 'Let peewit call and curlew cry where they will, I long for your merry and tender and pitiful words, For the roads are unending, and there is no place to my mind.'

The honey-pale moon lay low on the sleepy hill, And I fell asleep upon lonely Echtge of streams. No boughs have withered because of the wintry wind; The boughs have withered because I have told them my dreams.

I know of the leafy paths that the witches take Who come with their crowns of pearl and their spindles of wool,

And their secret smile, out of the depths of the lake; I know where a dim moon drifts, where the Danaan kind

Wind and unwind dancing when the light grows cool

On the island lawns, their feet where the pale foam gleams.

No boughs have withered because of the wintry wind; The boughs have withered because I have told them my dreams.

I know of the sleepy country, where swans fly round Coupled with golden chains, and sing as they fly.

A king and a queen are wandering there, and the sound Has made them so happy and hopeless, so deaf and so blind

With wisdom, they wander till all the years have gone by;

I know, and the curlew and peewit on Echtge of streams.

No boughs have withered because of the wintry wind; The boughs have withered because I have told them my dreams.

ADAM'S CURSE

WE sat together at one summer's end, That beautiful mild woman, your close friend, And you and I, and talked of poetry. I said, 'A line will take us hours maybe; Yet if it does not seem a moment's thought, Our stitching and unstitching has been naught. And scrub
Like an old
For to artic
Is to work
Be thought
Of bankers
The martyr

That beauti There's man On finding Replied, 'T Although th That we mu

I said, 'It's of Since Adam' There have I So much cor That they w Precedents of Yet now it s

We sat grow
We saw the
And in the t
A moon, woo
Washed by t
About the st

I had a thoug That you we Better go down upon your marrow-bones And scrub a kitchen pavement, or break stones Like an old pauper, in all kinds of weather; For to articulate sweet sounds together Is to work harder than all these, and yet Be thought an idler by the noisy set Of bankers, schoolmasters, and clergymen The martyrs call the world.'

And thereupon That beautiful mild woman for whose sake There's many a one shall find out all heartache On finding that her voice is sweet and low Replied, 'To be born woman is to know—Although they do not talk of it at school—That we must labour to be beautiful.'

I said, 'It's certain there is no fine thing Since Adam's fall but needs much labouring. There have been lovers who thought love should be So much compounded of high courtesy That they would sigh and quote with learned looks Precedents out of beautiful old books; Yet now it seems an idle trade enough.'

We sat grown quiet at the name of love; We saw the last embers of daylight die, And in the trembling blue-green of the sky A moon, worn as if it had been a shell Washed by time's waters as they rose and fell About the stars and broke in days and years.

I had a thought for no one's but your ears: That you were beautiful, and that I strove To love you in the old high way of love; That it had all seemed happy, and yet we'd grown As weary-hearted as that hollow moon.

RED HANRAHAN'S SONG ABOUT IRELAND

THE old brown thorn-trees break in two high over Cummen Strand,

Under a bitter black wind that blows from the left hand;

Our courage breaks like an old tree in a black wind and dies,

But we have hidden in our hearts the flame out of the eyes

Of Cathleen, the daughter of Houlihan.

The wind has bundled up the clouds high over Knocknarea,

And thrown the thunder on the stones for all that Maeve can say.

Angers that are like noisy clouds have set our hearts abeat;

But we have all bent low and low and kissed the quiet feet

Of Cathleen, the daughter of Houlihan.

The yellow pool has overflowed high up on Cloothna-Bare,

For the wet winds are blowing out of the clinging air; Like heavy flooded waters our bodies and our blood; But purer than a tall candle before the Holy Rood Is Cathleen, the daughter of Houlihan. THE OLD N

They h
Were to
By the
I heard
'All tha
Like th

I HEAR

'Everyt

And on

I HAVE no hap
Nor Avalon th
Where one for
while;
Nor Ulad, wh
wind;
Nor lands tha
heart:
Land-under-W
the sun's
Seven old sister

Land-of-the-To gates apart And Wood-of-To find it when

Therein are ma

THE OLD MEN ADMIRING THEMSELVES IN THE WATER

I HEARD the old, old men say, 'Everything alters,
And one by one we drop away.'
They had hands like claws, and their knees
Were twisted like the old thorn-trees
By the waters.
I heard the old, old men say,
'All that's beautiful drifts away
Like the waters.'

UNDER THE MOON

I HAVE no happiness in dreaming of Brycelinde, Nor Avalon the grass-green hollow, nor Joyous Isle, Where one found Lancelot crazed and hid him for a while;

Nor Ulad, when Naoise had thrown a sail upon the wind;

Nor lands that seem too dim to be burdens on the heart:

Land-under-Wave, where out of the moon's light and the sun's

Seven old sisters wind the threads of the long-lived ones, Land-of-the-Tower, where Aengus has thrown the gates apart,

And Wood-of-Wonders, where one kills an ox at dawn, To find it when night falls laid on a golden bier. Therein are many queens like Branwen and Guinevere;

And Niamh and Laban and Fand, who could change to an otter or fawn,

And the wood-woman, whose lover was changed to a blue-eyed hawk;

And whether I go in my dreams by woodland, or dun, or shore,

Or on the unpeopled waves with kings to pull at the oar,

I hear the harp-string praise them, or hear their mournful talk.

Because of something told under the famished horn Of the hunter's moon, that hung between the night and the day,

To dream of women whose beauty was folded in dismay,

Even in an old story, is a burden not to be borne.

THE RAGGED WOOD

O HURRY where by water among the trees The delicate-stepping stag and his lady sigh, When they have but looked upon their images— Would none had ever loved but you and I!

Or have you heard that sliding silver-shoed Pale silver-proud queen-woman of the sky, When the sun looked out of his golden hood?—O that none ever loved but you and I!

O hurry to the ragged wood, for there I will drive all those lovers out and cry—O my share of the world, O yellow hair! No one has ever loved but you and I.

17

Sweet I love And g Like a

All th Neith Their We w

O do : Or you Like a

But O

THE PLAYE PSALT

Three Voices [toge
The mouths
O masters of
O! lay the sh
Though drun
Over the ram

First Voice. May One gathers u One leans and He dreads the

And with the

O DO NOT LOVE TOO LONG

SWEETHEART, do not love too long: I loved long and long, And grew to be out of fashion Like an old song.

All through the years of our youth Neither could have known Their own thought from the other's, We were so much at one.

But O, in a minute she changed— O do not love too long, Or you will grow out of fashion Like an old song.

THE PLAYERS ASK FOR A BLESSING ON THE PSALTERIES AND ON THEMSELVES

Three Voices [together]. Hurry to bless the hands that play,
The mouths that speak, the notes and strings,
O masters of the glittering town!
O! lay the shrilly trumpet down,
Though drunken with the flags that sway
Over the ramparts and the towers,
And with the waving of your wings.

First Voice. Maybe they linger by the way. One gathers up his purple gown; One leans and mutters by the wall—He dreads the weight of mortal hours.

Second Voice. O no, O no! they hurry down Like plovers that have heard the call.

Third Voice. O kinsmen of the Three in One, O kinsmen, bless the hands that play. The notes they waken shall live on When all this heavy history's done; Our hands, our hands must ebb away.

Three Voices [together]. The proud and careless notes live on,

But bless our hands that ebb away.

THE HAPPY TOWNLAND

THERE'S many a strong farmer Whose heart would break in two, If he could see the townland That we are riding to; Boughs have their fruit and blossom At all times of the year; Rivers are running over With red beer and brown beer. An old man plays the bagpipes In a golden and silver wood; Queens, their eyes blue like the ice, Are dancing in a crowd.

The little fox he murmured,
'O what of the world's bane?'
The sun was laughing sweetly,
The moon plucked at my rein;
But the little red fox murmured,

'O He Tha

Wh Tha The From But Awa

It is
Is no
For
Than
Their

That

The leading of the second The leading of the leading of the second The leading of the

He is

That

Mich From And I Wher Gabri

With

Of wo

'O do not pluck at his rein, He is riding to the townland That is the world's bane.'

When their hearts are so high That they would come to blows, They unhook their heavy swords From golden and silver boughs; But all that are killed in battle Awaken to life again. It is lucky that their story Is not known among men, For O, the strong farmers That would let the spade lie, Their hearts would be like a cup That somebody had drunk dry.

The little fox he murmured,
'O what of the world's bane?'
The sun was laughing sweetly,
The moon plucked at my rein;
But the little red fox murmured,
'O do not pluck at his rein,
He is riding to the townland
That is the world's bane.'

Michael will unhook his trumpet From a bough overhead, And blow a little noise When the supper has been spread. Gabriel will come from the water With a fish-tail, and talk Of wonders that have happened On wet roads where men walk, And lift up an old horn Of hammered silver, and drink Till he has fallen asleep Upon the starry brink.

The little fox he murmured,
'O what of the world's bane?'
The sun was laughing sweetly,
The moon plucked at my rein;
But the little red fox murmured,
'O do not pluck at his rein,
He is riding to the townland
That is the world's bane.'

THE GREEN HELMET AND OTHER POEMS 1910

THE GREEN

I SWAYED
The butt-o
And saw v
A crowd u

And thoug There was 'What is the Upon a gau

And after r Cried out t —It had su By the swee

Though I'd What could And runnin Cried out th

Crying amic Naming it v Because it h By the sweet

THE GREEN HELMET AND OTHER POEMS

HIS DREAM

I swayed upon the gaudy stern The butt-end of a steering-oar, And saw wherever I could turn A crowd upon a shore.

And though I would have hushed the crowd, There was no mother's son but said, 'What is the figure in a shroud Upon a gaudy bed?'

And after running at the brim Cried out upon that thing beneath —It had such dignity of limb— By the sweet name of Death.

Though I'd my finger on my lip, What could I but take up the song? And running crowd and gaudy ship Cried out the whole night long,

Crying amid the glittering sea, Naming it with ecstatic breath, Because it had such dignity, By the sweet name of Death.

A WOMAN HOMER SUNG

If any man drew near
When I was young,
I thought, 'He holds her dear,'
And shook with hate and fear.
But O! 'twas bitter wrong
If he could pass her by
With an indifferent eye.

Whereon I wrote and wrought, And now, being grey, I dream that I have brought To such a pitch my thought That coming time can say, 'He shadowed in a glass What thing her body was.'

For she had fiery blood When I was young, And trod so sweetly proud As 'twere upon a cloud, A woman Homer sung, That life and letters seem But an heroic dream.

WORDS

I HAD this thought a while ago, 'My darling cannot understand

What In th

And Until Reme Was

That My d Becaus And v

That I What I migh And b

WHY should I
With misery, of
Have taught to
Or hurled the I
Had they but of
What could hav
That nobleness
With beauty lik
That is not nate

Being high and

Why, what coul

Was there anoth



What I have done, or what would do In this blind bitter land.'

And I grew weary of the sun Until my thoughts cleared up again, Remembering that the best I have done Was done to make it plain;

That every year I have cried, 'At length My darling understands it all, Because I have come into my strength, And words obey my call';

That had she done so who can say What would have shaken from the sieve? I might have thrown poor words away And been content to live.

NO SECOND TROY

Why should I blame her that she filled my days With misery, or that she would of late Have taught to ignorant men most violent ways, Or hurled the little streets upon the great, Had they but courage equal to desire? What could have made her peaceful with a mind That nobleness made simple as a fire, With beauty like a tightened bow, a kind That is not natural in an age like this, Being high and solitary and most stern? Why, what could she have done, being what she is? Was there another Troy for her to burn?

RECONCILIATION

SOME may have blamed you that you took away
The verses that could move them on the day
When, the ears being deafened, the sight of the eyes
blind

With lightning, you went from me, and I could find Nothing to make a song about but kings, Helmets, and swords, and half-forgotten things That were like memories of you—but now We'll out, for the world lives as long ago; And while we're in our laughing, weeping fit, Hurl helmets, crowns, and swords into the pit. But, dear, cling close to me; since you were gone, My barren thoughts have chilled me to the bone.

KING AND NO KING

'Would it were anything but merely voice!'
The No King cried who after that was King,
Because he had not heard of anything
That balanced with a word is more than noise;
Yet Old Romance being kind, let him prevail
Somewhere or somehow that I have forgot,
Though he'd but cannon—Whereas we that had
thought

To have lit upon as clean and sweet a tale Have been defeated by that pledge you gave In momentary anger long ago; And I that have not your faith, how shall I know That in the blinding light beyond the grave

7 3

We'll find so The hourly ki The habitual When neither

Were Would Of such 'Such All that Ah, bu Came

AH, t

That

Bred 1

AGA

O HEA

Nor kr What's Being f Enough So did A drear Till the A secre

Between

We'll find so good a thing as that we have lost? The hourly kindness, the day's common speech, The habitual content of each with each When neither soul nor body has been crossed.

PEACE

AH, that Time could touch a form That could show what Homer's age Bred to be a hero's wage.

'Were not all her life but storm, Would not painters paint a form Of such noble lines,' I said, 'Such a delicate high head, All that sternness amid charm, All that sweetness amid strength?' Ah, but peace that comes at length, Came when Time had touched her form.

AGAINST UNWORTHY PRAISE

O HEART, be at peace, because Nor knave nor dolt can break What's not for their applause, Being for a woman's sake. Enough if the work has seemed, So did she your strength renew, A dream that a lion had dreamed Till the wilderness cried aloud, A secret between you two, Between the proud and the proud. What, still you would have their praise! But here's a haughtier text,
The labyrinth of her days
That her own strangeness perplexed;
And how what her dreaming gave
Earned slander, ingratitude,
From self-same dolt and knave;
Aye, and worse wrong than these.
Yet she, singing upon her road,
Half lion, half child, is at peace.

THE FASCINATION OF WHAT'S DIFFICULT

THE fascination of what's difficult
Has dried the sap out of my veins, and rent
Spontaneous joy and natural content
Out of my heart. There's something ails our colt
That must, as if it had not holy blood
Nor on Olympus leaped from cloud to cloud,
Shiver under the lash, strain, sweat and jolt
As though it dragged road metal. My curse on plays
That have to be set up in fifty ways,
On the day's war with every knave and dolt,
Theatre business, management of men.
I swear before the dawn comes round again
I'll find the stable and pull out the bolt.

A DRINKING SONG

WINE comes in at the mouth And love comes in at the eye;

l dolt, gain t. Tha Befo I lift I loc

THE CO

Though
Through
I swayed
Now I m

ON HEARING T UNIVERSITY AGAINST IM

> Where, who That long to To shake the Restraining

TO A POET, WHO BAD POETS,

You say, as In praise of Your Twere politing.
But was there

104

That's all we shall know for truth Before we grow old and die. I lift the glass to my mouth, I look at you, and I sigh.

THE COMING OF WISDOM WITH TIME

Though leaves are many, the root is one; Through all the lying days of my youth I swayed my leaves and flowers in the sun; Now I may wither into the truth.

ON HEARING THAT THE STUDENTS OF OUR NEW UNIVERSITY HAVE JOINED THE AGITATION AGAINST IMMORAL LITERATURE

Where, where but here have Pride and Truth, That long to give themselves for wage, To shake their wicked sides at youth Restraining reckless middle-age?

The Collected Forms by Jeds, W. B.

TO A POET, WHO WOULD HAVE ME PRAISE CERTAIN BAD POETS, IMITATORS OF HIS AND MINE

You say, as I have often given tongue In praise of what another's said or sung, 'Twere politic to do the like by these; But was there ever dog that praised his fleas?

THE MASK

'Put off that mask of burning gold With emerald eyes.'
'O no, my dear, you make so bold To find if hearts be wild and wise, And yet not cold.'

'I would but find what's there to find, Love or deceit.'
'It was the mask engaged your mind, And after set your heart to beat, Not what's behind.'

'But lest you are my enemy, I must enquire.'
'O no, my dear, let all that be; What matter, so there is but fire In you, in me?'

UPON A HOUSE SHAKEN BY THE LAND AGITATION

How should the world be luckier if this house, Where passion and precision have been one Time out of mind, became too ruinous To breed the lidless eye that loves the sun? And the sweet laughing eagle thoughts that grow Where wings have memory of wings, and all That comes of the best knit to the best? Although Mean roof-trees were the sturdier for its fall,

How should The gifts to gradual Wrought o

When we a
That if we
While those
Because we
So bitterly,
All their liv
You've danc
And know t
We'll keep
Is there a br
That turns a
Or is there th
But when th

DEAR Crao

TH

THESE are the The majesty The weak lay Till that be And discord

How should their luck run high enough to reach The gifts that govern men, and after these To gradual Time's last gift, a written speech Wrought of high laughter, loveliness and ease?

AT THE ABBEY THEATRE

(Imitated from Ronsard)

DEAR Craoibhin Aoibhin, look into our case. When we are high and airy hundreds say That if we hold that flight they'll leave the place, While those same hundreds mock another day Because we have made our art of common things, So bitterly, you'd dream they longed to look All their lives through into some drift of wings. You've dandled them and fed them from the book And know them to the bone; impart to us—We'll keep the secret—a new trick to please. Is there a bridle for this Proteus That turns and changes like his draughty seas? Or is there none, most popular of men, But when they mock us, that we mock again?

THESE ARE THE CLOUDS

THESE are the clouds about the fallen sun, The majesty that shuts his burning eye: The weak lay hand on what the strong has done, Till that be tumbled that was lifted high And discord follow upon unison, And all things at one common level lie.

And therefore, friend, if your great race were run

And these things came, so much the more thereby

Have you made greatness your companion,

Although it be for children that you sigh:

These are the clouds about the fallen sun,

The majesty that shuts his burning eye.

THERE where the course is, Delight makes all of the one mind, The riders upon the galloping horses, The crowd that closes in behind: We, too, had good attendance once, Hearers and hearteners of the work; Aye, horsemen for companions, Before the merchant and the clerk Breathed on the world with timid breath. Sing on: somewhere at some new moon, We'll learn that sleeping is not death, Hearing the whole earth change its tune, Its flesh being wild, and it again Crying aloud as the racecourse is, And we find hearteners among men That ride upon horses.

AT GALWAY RACES

Thou Worl Now Agair

Sicki

Thou

Why

ALL

ALL things of One time it The seeming Now nothin Than this act I had not give Did not the That one belyet would be Colder and of the One of the Colder and of the One of the Colder and of the One of

And ther
Wherefo
To find o
Go and
If the lac
Ah, penn
I am loop

A FRIEND'S ILLNESS

SICKNESS brought me this
Thought, in that scale of his:
Why should I be dismayed
Though flame had burned the whole
World, as it were a coal,
Now I have seen it weighed
Against a soul?

ALL THINGS CAN TEMPT ME

ALL things can tempt me from this craft of verse:
One time it was a woman's face, or worse—
The seeming needs of my fool-driven land;
Now nothing but comes readier to the hand
Than this accustomed toil. When I was young,
I had not given a penny for a song
Did not the poet sing it with such airs
That one believed he had a sword upstairs;
Yet would be now, could I but have my wish,
Colder and dumber and deafer than a fish.

BROWN PENNY

I whispered, 'I am too young,'
And then, 'I am old enough';
Wherefore I threw a penny
To find out if I might love.
'Go and love, go and love, young man,
If the lady be young and fair.'
Ah, penny, brown penny, brown penny,
I am looped in the loops of her hair.

O love is the crooked thing,
There is nobody wise enough
To find out all that is in it,
For he would be thinking of love
Till the stars had run away
And the shadows eaten the moon.
Ah, penny, brown penny, brown penny,
One cannot begin it too soon.

RESPONSIBILITIES 1914

Poets with Companio. Here's an Imagining Your ears Though yo Pretending That has r And thoug. Old whole:

When cup Is not tha The gods In their graph They sang For all we The smoke On metal On old de Or on som That he, we Had hamn

To hold the That only

The moral

RESPONSIBILITIES

THE GREY ROCK

Poets with whom I learned my trade, Companions of the Cheshire Cheese, Here's an old story I've re-made, Imagining 'twould better please Your ears than stories now in fashion, Ihough you may think I waste my breath Pretending that there can be passion That has more life in it than death, And though at bottling of your wine Old wholesome Goban had no say; The moral's yours because it's mine.

When cups went round at close of day—Is not that how good stories run?—The gods were sitting at the board In their great house at Slievenamon. They sang a drowsy song, or snored, For all were full of wine and meat. The smoky torches made a glare On metal Goban 'd hammered at, On old deep silver rolling there Or on some still unemptied cup That he, when frenzy stirred his thews, Had hammered out on mountain top To hold the sacred stuff he brews That only gods may buy of him.

Now from that juice that made them wise All those had lifted up the dim Imaginations of their eyes, For one that was like woman made Before their sleepy eyelids ran And trembling with her passion said, 'Come out and dig for a dead man, Who's burrowing somewhere in the ground, And mock him to his face and then Hollo him on with horse and hound, For he is the worst of all dead men.'

We should be dazed and terror-struck,
If we but saw in dreams that room,
Those wine-drenched eyes, and curse our luck
That emptied all our days to come.
I knew a woman none could please,
Because she dreamed when but a child
Of men and women made like these;
And after, when her blood ran wild,
Had ravelled her own story out,
And said, 'In two or in three years
I needs must marry some poor lout,'
And having said it, burst in tears.

Since, tavern comrades, you have died, Maybe your images have stood, Mere bone and muscle thrown aside, Before that roomful or as good. You had to face your ends when young—'Twas wine or women, or some curse—But never made a poorer song That you might have a heavier purse,

Nor gave That you You kept And unr And ther Dowson To troop And copy

'The Da Between 'Although Although And half All was

Murroug
Foot afte
He and I
Had peri
Stricken
The shot
And beir
Led by a
That had
Where by
And thot
He had I
"Who is
And yet of
Thereon:

Who said

Her love,

Nor gave loud service to a cause That you might have a troop of friends. You kept the Muses' sterner laws, And unrepenting faced your ends, And therefore earned the right—and yet Dowson and Johnson most I praise—To troop with those the world's forgot, And copy their proud steady gaze.

'The Danish troop was driven out Between the dawn and dusk,' she said; 'Although the event was long in doubt, Although the King of Ireland's dead And half the kings, before sundown All was accomplished.

'When this day Murrough, the King of Ireland's son, Foot after foot was giving way, He and his best troops back to back Had perished there, but the Danes ran, Stricken with panic from the attack, The shouting of an unseen man; And being thankful Murrough found, Led by a footsole dipped in blood That had made prints upon the ground, Where by old thorn-trees that man stood; And though when he gazed here and there, He had but gazed on thorn-trees, spoke, "Who is the friend that seems but air And yet could give so fine a stroke?" Thereon a young man met his eye, Who said, "Because she held me in Her love, and would not have me die,

Rock-nurtured Aoife took a pin, And pushing it into my shirt, Promised that for a pin's sake, No man should see to do me hurt; But there it's gone; I will not take The fortune that had been my shame Seeing, King's son, what wounds you have." 'Twas roundly spoke, but when night came He had betrayed me to his grave, For he and the King's son were dead. I'd promised him two hundred years, And when for all I'd done or said— And these immortal eyes shed tears— He claimed his country's need was most, I'd saved his life, yet for the sake Of a new friend he has turned a ghost. What does he care if my heart break? I call for spade and horse and hound That we may harry him.' Thereon She cast herself upon the ground And rent her clothes and made her moan: 'Why are they faithless when their might Is from the holy shades that rove The grey rock and the windy light? Why should the faithfullest heart most love The bitter sweetness of false faces? Why must the lasting love what passes, Why are the gods by men betrayed?'

But thereon every god stood up With a slow smile and without sound, And stretching forth his arm and cup To where she moaned upon the ground, Suddenly And she No more Stared at

I have kep
To that ro
And the w
And I am
With the I
That think
Than love

So that the

TO A WEALTH
SUBSCRIPTIC
GALLERY II
WANTED PI

You gave, Until enough By Biddy'. To be 'sor Before you That thing Are what a Imagines by What care His mumr What th' of the State S

So that his

For the Ita

Suddenly drenched her to the skin; And she with Goban's wine adrip, No more remembering what had been, Stared at the gods with laughing lip.

I have kept my faith, though faith was tried, To that rock-born, rock-wandering foot, And the world's altered since you died, And I am in no good repute With the loud host before the sea, That think sword-strokes were better meant Than lover's music—let that be, So that the wandering foot's content.

TO A WEALTHY MAN WHO PROMISED A SECOND SUBSCRIPTION TO THE DUBLIN MUNICIPAL GALLERY IF IT WERE PROVED THE PEOPLE WANTED PICTURES

You gave, but will not give again Until enough of Paudeen's pence By Biddy's halfpennies have lain To be 'some sort of evidence,' Before you'll put your guineas down, That things it were a pride to give Are what the blind and ignorant town Imagines best to make it thrive. What cared Duke Ercole, that bid His mummers to the market-place, What th' onion-sellers thought or did So that his Plautus set the pace For the Italian comedies?

And Guidobaldo, when he made
That grammar school of courtesies
Where wit and beauty learned their trade
Upon Urbino's windy hill,
Had sent no runners to and fro
That he might learn the shepherds' will.
And when they drove out Cosimo,
Indifferent how the rancour ran,
He gave the hours they had set free
To Michelozzo's latest plan
For the San Marco Library,
Whence turbulent Italy should draw
Delight in Art whose end is peace,
In logic and in natural law
By sucking at the dugs of Greece.

Your open hand but shows our loss, For he knew better how to live. Let Paudeens play at pitch and toss, Look up in the sun's eye and give What the exultant heart calls good That some new day may breed the best Because you gave, not what they would, But the right twigs for an eagle's nest!

December 1912

SEPTEMBER 1913

WHAT need you, being come to sense, But fumble in a greasy till And add the halfpence to the pence And prayer to shivering prayer, until You have For men v Romantic It's with (

Yet they very The names They have But little to For whom And what, Romantic It's with Comments of the the state of the sta

Was it for The grey w For this that For this Ed And Rober All that del Romantic I It's with O

Yet could we And call the In all their You'd cry, 'Has madder They weight But let them They're with

You have dried the marrow from the bone; For men were born to pray and save: Romantic Ireland's dead and gone, It's with O'Leary in the grave.

Yet they were of a different kind,
The names that stilled your childish play,
They have gone about the world like wind,
But little time had they to pray
For whom the hangman's rope was spun,
And what, God help us, could they save?
Romantic Ireland's dead and gone,
It's with O'Leary in the grave.

Was it for this the wild geese spread The grey wing upon every tide; For this that all that blood was shed, For this Edward Fitzgerald died, And Robert Emmet and Wolfe Tone, All that delirium of the brave? Romantic Ireland's dead and gone, It's with O'Leary in the grave.

Yet could we turn the years again, And call those exiles as they were In all their loneliness and pain, You'd cry, 'Some woman's yellow hair Has maddened every mother's son': They weighed so lightly what they gave. But let them be, they're dead and gone, They're with O'Leary in the grave.

TO A FRIEND WHOSE WORK HAS COME TO NOTHING

Now all the truth is out, Be secret and take defeat From any brazen throat, For how can you compete, Being honour bred, with one Who, were it proved he lies, Were neither shamed in his own Nor in his neighbours' eyes? Bred to a harder thing Than Triumph, turn away And like a laughing string Whereon mad fingers play Amid a place of stone, Be secret and exult. Because of all things known That is most difficult.

PAUDEEN

INDIGNANT at the fumbling wits, the obscure spite Of our old Paudeen in his shop, I stumbled blind Among the stones and thorn-trees, under morning light; Until a curlew cried and in the luminous wind A curlew answered; and suddenly thereupon I thought That on the lonely height where all are in God's eye, There cannot be, confusion of our sound forgot, A single soul that lacks a sweet crystalline cry.

If you have revis
Whether to look
(I wonder if the
Or happier-thoug
To drink of that
When grey gulls
And the gaunt ho
Let these content
For they are at the

Of your own pass In his full hands Had given their of Sweeter emotion, Like gentle blood And insult heaped And for his open-Your enemy, an of The pack upon his

And gather the GI About your head to The time for you to And listen at the co You had enough of Away, away! You a

September 29, 1913

TO A SHADE

If you have revisited the town, thin Shade, Whether to look upon your monument (I wonder if the builder has been paid) Or happier-thoughted when the day is spent To drink of that salt breath out of the sea When grey gulls flit about instead of men, And the gaunt houses put on majesty: Let these content you and be gone again; For they are at their old tricks yet.

A man

Of your own passionate serving kind who had brought
In his full hands what, had they only known,
Had given their children's children loftier thought,
Sweeter emotion, working in their veins
Like gentle blood, has been driven from the place,
And insult heaped upon him for his pains,
And for his open-handedness, disgrace;
Your enemy, an old foul mouth, had set
The pack upon him.

Go, unquiet wanderer, And gather the Glasnevin coverlet About your head till the dust stops your ear, The time for you to taste of that salt breath And listen at the corners has not come; You had enough of sorrow before death—Away, away! You are safer in the tomb.

September 29, 1913

WHEN HELEN LIVED

WE have cried in our despair
That men desert,
For some trivial affair
Or noisy, insolent sport,
Beauty that we have won
From bitterest hours;
Yet we, had we walked within
Those topless towers
Where Helen walked with her boy,
Had given but as the rest
Of the men and women of Troy,
A word and a jest.

ON THOSE THAT HATED 'THE PLAYBOY OF THE WESTERN WORLD,' 1907

ONCE, when midnight smote the air, Eunuchs ran through Hell and met On every crowded street to stare Upon great Juan riding by: Even like these to rail and sweat Staring upon his sinewy thigh.

THE THREE BEGGARS

'Though to my feathers in the wet, I have stood here from break of day, I have not found a thing to eat, For only rubbish comes my way. Am I to live Muttered the 'For all my p

King Guare The palace-y And there to 'You that ha Can ravel ou Do men who Or get the n A beggar said Whom man And what co Unless desire But Guare la 'If that be tr One of you t For he shall l Who is first a Sleep before And thereon, With his old From river-sid And left then 'And if I win 'Though I am A pretty girl The second: " The third: 'I'

Among the ot

And lay it all

The second: '1

Am I to live on lebeen-lone?'
Muttered the old crane of Gort.
'For all my pains on lebeen-lone?'

King Guare walked amid his court The palace-yard and river-side And there to three old beggars said, 'You that have wandered far and wide Can ravel out what's in my head. Do men who least desire get most, Or get the most who most desire?' A beggar said, 'They get the most Whom man or devil cannot tire, And what could make their muscles taut Unless desire had made them so?' But Guare laughed with secret thought, 'If that be true as it seems true, One of you three is a rich man, For he shall have a thousand pounds Who is first asleep, if but he can Sleep before the third noon sounds.' And thereon, merry as a bird With his old thoughts, King Guare went From river-side and palace-yard And left them to their argument. 'And if I win,' one beggar said, 'Though I am old I shall persuade A pretty girl to share my bed'; The second: 'I shall learn a trade'; The third: 'I'll hurry to the course Among the other gentlemen, And lay it all upon a horse'; The second: 'I have thought again:

A farmer has more dignity.'
One to another sighed and cried:
The exorbitant dreams of beggary,
That idleness had borne to pride,
Sang through their teeth from noon to noon;
And when the second twilight brought
The frenzy of the beggars' moon
None closed his blood-shot eyes but sought
To keep his fellows from their sleep;
All shouted till their anger grew
And they were whirling in a heap.

They mauled and bit the whole night through; They mauled and bit till the day shone; They mauled and bit through all that day And till another night had gone, Or if they made a moment's stay They sat upon their heels to rail, And when old Guare came and stood Before the three to end this tale, They were commingling lice and blood. 'Time's up,' he cried, and all the three With blood-shot eyes upon him stared. 'Time's up,' he cried, and all the three Fell down upon the dust and snored.

'Maybe I shall be lucky yet,
Now they are silent,' said the crane.
'Though to my feathers in the wet
I've stood as I were made of stone
And seen the rubbish run about,
It's certain there are trout somewhere
And maybe I shall take a trout
If but I do not seem to care.'

THREE old By a cold : First was r Second run On a wind Giddy with Sang unnot 'Though th And what w Three time I, though u Fall asleep So the first, 'We're but When all th So it's plain That the sh Who have f Pass the Do And are plag They've the Moaned the Into some m But the secon 'They are no Having loved To a poet or Or a witty lo

While he'd r

Caught and c

THE THREE HERMITS

THREE old hermits took the air By a cold and desolate sea, First was muttering a prayer, Second rummaged for a flea; On a windy stone, the third, Giddy with his hundredth year, Sang unnoticed like a bird: 'Though the Door of Death is near And what waits behind the door, Three times in a single day I, though upright on the shore, Fall asleep when I should pray.' So the first, but now the second: 'We're but given what we have earned When all thoughts and deeds are reckoned, So it's plain to be discerned That the shades of holy men Who have failed, being weak of will, Pass the Door of Birth again, And are plagued by crowds, until They've the passion to escape.' Moaned the other, 'They are thrown Into some most fearful shape.' But the second mocked his moan: 'They are not changed to anything, Having loved God once, but maybe To a poet or a king Or a witty lovely lady.' While he'd rummaged rags and hair, Caught and cracked his flea, the third,

BEGGAR TO BEGGAR CRIED

'Time to put off the world and go somewhere And find my health again in the sea air,' Beggar to beggar cried, being frenzy-struck, 'And make my soul before my pate is bare.'

'And get a comfortable wife and house To rid me of the devil in my shoes,' Beggar to beggar cried, being frenzy-struck, 'And the worse devil that is between my thighs.'

'And though I'd marry with a comely lass, She need not be too comely—let it pass,' Beggar to beggar cried, being frenzy-struck, 'But there's a devil in a looking-glass.'

'Nor should she be too rich, because the rich Are driven by wealth as beggars by the itch,' Beggar to beggar cried, being frenzy-struck, 'And cannot have a humorous happy speech.'

'And there I'll grow respected at my ease, And hear amid the garden's nightly peace,' Beggar to beggar cried, being frenzy-struck, 'The wind-blown clamour of the barnacle-geese.' As I ca They th For I an And all And son To thro And ther

R

My brow With sk And I an A poor I And tho A servin

And there

Poor mer And rich And I an And man That toss Now it I And there

The wind While I r For I am Yet never To take n That nobe

And there t

RUNNING TO PARADISE

As I came over Windy Gap
They threw a halfpenny into my cap,
For I am running to Paradise;
And all that I need do is to wish
And somebody puts his hand in the dish
To throw me a bit of salted fish:
And there the king is but as the beggar.

My brother Mourteen is worn out With skelping his big brawling lout, And I am running to Paradise; A poor life, do what he can, And though he keep a dog and a gun, A serving-maid and a serving-man: And there the king is but as the begar.

Poor men have grown to be rich men, And rich men grown to be poor again, And I am running to Paradise; And many a darling wit's grown dull That tossed a bare heel when at school, Now it has filled an old sock full: And there the king is but as the beggar.

The wind is old and still at play While I must hurry upon my way, For I am running to Paradise; Yet never have I lit on a friend To take my fancy like the wind That nobody can buy or bind: And there the king is but as the beggar.

THE HOUR BEFORE DAWN

A cursing rogue with a merry face,
A bundle of rags upon a crutch,
Stumbled upon that windy place
Called Cruachan,¹ and it was as much
As the one sturdy leg could do
To keep him upright while he cursed.
He had counted, where long years ago
Queen Maeve's nine Maines had been nursed,
A pair of lapwings, one old sheep,
And not a house to the plain's edge,
When close to his right hand a heap
Of grey stones and a rocky ledge
Reminded him that he could make,
If he but shifted a few stones,
A shelter till the daylight broke.

But while he fumbled with the stones
They toppled over; 'Were it not
I have a lucky wooden shin
I had been hurt'; and toppling brought
Before his eyes, where stones had been,
A dark deep hollow in the rock.
He gave a gasp and thought to have fled,
Being certain it was no right rock
Because an ancient history said
Hell Mouth lay open near that place,
And yet stood still, because inside
A great lad with a beery face
Had tucked himself away beside

1 Pronounced as if spelt 'Crockan' in modern Gaelic.

A ladle and a And snored, So with a lau He crawled i

'Night grows
Till even I sle
Has tired of I
What one of
Sick of his gr
But let him k
That I may fi

'What care I : But I'll have i

'Say what you I'll sleep anotl

'And I will ta And drink bef

Had dipped the Into the sleeped Had not the sl

'Before you hav I dragged from I'll have assura To value beer; Shall dip his n Merely for stur In the bad hou A ladle and a tub of beer, And snored, no phantom by his look. So with a laugh at his own fear He crawled into that pleasant nook.

'Night grows uneasy near the dawn Till even I sleep light; but who Has tired of his own company? What one of Maeve's nine brawling sons Sick of his grave has wakened me? But let him keep his grave for once That I may find the sleep I have lost.'

'What care I if you sleep or wake? But I'll have no man call me ghost.'

'Say what you please, but from daybreak I'll sleep another century.'

'And I will talk before I sleep And drink before I talk.'

And he Had dipped the wooden ladle deep Into the sleeper's tub of beer Had not the sleeper started up.

'Before you have dipped it in the beer I dragged from Goban's mountain-top I'll have assurance that you are able To value beer; no half-legged fool Shall dip his nose into my ladle Merely for stumbling on this hole In the bad hour before the dawn.'

'Why, beer is only beer.'

"I'll sleep until the winter's gone, Or maybe to Midsummer Day," And drink, and you will sleep that length."

'I'd like to sleep till winter's gone Or till the sun is in his strength. This blast has chilled me to the bone.'

'I had no better plan at first. I thought to wait for that or this; Maybe the weather was accursed Or I had no woman there to kiss; So slept for half a year or so; But year by year I found that less Gave me such pleasure I'd forgo Even a half-hour's nothingness, And when at one year's end I found I had not waked a single minute, I chose this burrow under ground. I'll sleep away all time within it: My sleep were now nine centuries But for those mornings when I find The lapwing at their foolish cries And the sheep bleating at the wind As when I also played the fool.'

The beggar in a rage began
Upon his hunkers in the hole,
'It's plain that you are no right man
To mock at everything I love
As if it were not worth the doing.
I'd have a merry life enough

If a good Ea.
And though
I should not
For anything
If but this w

'You cry alou Or that the v And do not l If time were Neither the s But the hour And leave no For all life lo And there's r To know who That flesh and And souls as And there be But I alone be Like some old And wait Hir He dipped his And drank an The other sho My life of eve And every con And so take tl He gave him a But might hav For all the slee And after hear And then, groIf a good Easter wind were blowing, And though the winter wind is bad I should not be too down in the mouth For anything you did or said If but this wind were in the south.'

'You cry aloud, O would 'twere spring Or that the wind would shift a point, And do not know that you would bring, If time were suppler in the joint, Neither the spring nor the south wind But the hour when you shall pass away And leave no smoking wick behind, For all life longs for the Last Day And there's no man but cocks his ear To know when Michael's trumpet cries That flesh and bone may disappear, And souls as if they were but sighs, And there be nothing but God left; But I alone being blessèd keep Like some old rabbit to my cleft And wait Him in a drunken sleep.' He dipped his ladle in the tub And drank and yawned and stretched him out, The other shouted, 'You would rob My life of every pleasant thought And every comfortable thing, And so take that and that.' Thereon He gave him a great pummelling, But might have pummelled at a stone For all the sleeper knew or cared; And after heaped up stone on stone, And then, grown weary, prayed and cursed

And heaped up stone on stone again, And prayed and cursed and cursed and fled From Maeve and all that juggling plain, Nor gave God thanks till overhead The clouds were brightening with the dawn.

A SONG FROM 'THE PLAYER QUEEN'

My mother dandled me and sang, 'How young it is, how young!'
And made a golden cradle
That on a willow swung.

'He went away,' my mother sang, 'When I was brought to bed,' And all the while her needle pulled The gold and silver thread.

She pulled the thread and bit the thread And made a golden gown, And wept because she had dreamt that I Was born to wear a crown.

'When she was got,' my mother sang, 'I heard a sea-mew cry, And saw a flake of the yellow foam That dropped upon my thigh.'

How therefore could she help but braid The gold into my hair, And dream that I should carry The golden top of care? What
In a di
Paintir
Sea-ny
Do, bu
That h
With t

HOPE

Wi And To To Lies

Wi

Τo

W

What That I With The w

THE REALISTS

HOPE that you may understand! What can books of men that wive In a dragon-guarded land, Paintings of the dolphin-drawn Sea-nymphs in their pearly wagons Do, but awake a hope to live That had gone With the dragons?

Ι

THE WITCH

ToIL and grow rich, What's that but to lie With a foul witch And after, drained dry, To be brought To the chamber where Lies one long sought With despair?

II

THE PEACOCK

WHAT's riches to him That has made a great peacock With the pride of his eye? The wind-beaten, stone-grey, And desolate Three Rock Would nourish his whim. Live he or die Amid wet rocks and heather, His ghost will be gay Adding feather to feather For the pride of his eye.

THE MOUNTAIN TOMB

Pour wine and dance if manhood still have pride, Bring roses if the rose be yet in bloom; The cataract smokes upon the mountain side, Our Father Rosicross is in his tomb.

Pull down the blinds, bring fiddle and clarionet That there be no foot silent in the room Nor mouth from kissing, nor from wine unwet; Our Father Rosicross is in his tomb.

In vain, in vain; the cataract still cries; The everlasting taper lights the gloom; All wisdom shut into his onyx eyes, Our Father Rosicross sleeps in his tomb.

I

TO A CHILD DANCING IN THE WIND

DANCE there upon the shore; What need have you to care For wind or water's roar? And tumble out your hair * *

The f Love Nor t And a What The n

That

Being

HAS no or Kind eyes Or warned The moths I could hav So we spea

O you will And dream Suffer as yo Be as broke But I am ol And I speak

AN

THE mom I had the I had my And yet fo That the salt drops have wet;
Being young you have not known
The fool's triumph, nor yet
Love lost as soon as won,
Nor the best labourer dead
And all the sheaves to bind.
What need have you to dread
The monstrous crying of wind?

II

TWO YEARS LATER

Has no one said those daring
Kind eyes should be more learn'd?
Or warned you how despairing
The moths are when they are burned?
I could have warned you; but you are young,
So we speak a different tongue.

O you will take whatever's offered And dream that all the world's a friend, Suffer as your mother suffered, Be as broken in the end. But I am old and you are young, And I speak a barbarous tongue.

A MEMORY OF YOUTH

THE moments passed as at a play; I had the wisdom love brings forth; I had my share of mother-wit, And yet for all that I could say, And though I had her praise for it, A cloud blown from the cut-throat north Suddenly hid Love's moon away.

Believing every word I said,
I praised her body and her mind
Till pride had made her eyes grow bright,
And pleasure made her cheeks grow red,
And vanity her footfall light,
Yet we, for all that praise, could find
Nothing but darkness overhead.

We sat as silent as a stone,
We knew, though she'd not said a word,
That even the best of love must die,
And had been savagely undone
Were it not that Love upon the cry
Of a most ridiculous little bird
Tore from the clouds his marvellous moon.

FALLEN MAJESTY

Although crowds gathered once if she but showed her face,
And even old men's eyes grew dim, this hand alone,
Like some last courtier at a gypsy camping-place
Babbling of fallen majesty, records what's gone.

The lineaments, a heart that laughter has made sweet, These, these remain, but I record what's gone. A crowd Will gather, and not know it walks the very street Whereon a thing once walked that seemed a burning cloud.

Now: Three What One b Nor th No, no Many-Could Mind a And on Had st What r What r Youth's So chan Labouri And wh All till With so How co When d I count Being w Rememb What ea

While u

So great

I shake f

FRIENDS

Now must I these three praise-Three women that have wrought What joy is in my days: One because no thought, Nor those unpassing cares, No, not in these fifteen Many-times-troubled years, Could ever come between Mind and delighted mind; And one because her hand Had strength that could unbind What none can understand, What none can have and thrive, Youth's dreamy load, till she So changed me that I live Labouring in ecstasy. And what of her that took All till my youth was gone With scarce a pitying look? How could I praise that one? When day begins to break I count my good and bad, Being wakeful for her sake, Remembering what she had, What eagle look still shows, While up from my heart's root So great a sweetness flows I shake from head to foot.

THE COLD HEAVEN

Suddenly I saw the cold and rook-delighting heaven That seemed as though ice burned and was but the more ice,

And thereupon imagination and heart were driven So wild that every casual thought of that and this Vanished, and left but memories, that should be out of season

With the hot blood of youth, of love crossed long ago; And I took all the blame out of all sense and reason, Until I cried and trembled and rocked to and fro, Riddled with light. Ah! when the ghost begins to quicken,

Confusion of the death-bed over, is it sent Out naked on the roads, as the books say, and stricken By the injustice of the skies for punishment?

THAT THE NIGHT COME

SHE lived in storm and strife, Her soul had such desire For what proud death may bring That it could not endure The common good of life, But lived as 'twere a king That packed his marriage day With banneret and pennon, Trumpet and kettledrum, And the outrageous cannon, To bundle time away That the night come.

BEING out of I took a brown where the Taking deliand he, with That is like And so to the Nor the tan Nor heavy kard that fie And threw I No government

Now as at all time In their stiff, paintd Appear and disappe With all their ancie And all their helms And all their eyes st Being by Calvary's The uncontrollable

A DOLL in Looks at th

AN APPOINTMENT

BEING out of heart with government I took a broken root to fling Where the proud, wayward squirrel went, Taking delight that he could spring; And he, with that low whinnying sound That is like laughter, sprang again And so to the other tree at a bound. Nor the tame will, nor timid brain, Nor heavy knitting of the brow Bred that fierce tooth and cleanly limb And threw him up to laugh on the bough; No government appointed him.

THE MAGI

Now as at all times I can see in the mind's eye, In their stiff, painted clothes, the pale unsatisfied ones Appear and disappear in the blue depth of the sky With all their ancient faces like rain-beaten stones, And all their helms of silver hovering side by side, And all their eyes still fixed, hoping to find once more, Being by Calvary's turbulence unsatisfied, The uncontrollable mystery on the bestial floor.

THE DOLLS

A DOLL in the doll-maker's house Looks at the cradle and bawls:

'That is an insult to us.' But the oldest of all the dolls, Who had seen, being kept for show, Generations of his sort, Out-screams the whole shelf: 'Although There's not a man can report Evil of this place, The man and the woman bring Hither, to our disgrace, A noisy and filthy thing.' Hearing him groan and stretch The doll-maker's wife is aware Her husband has heard the wretch, And crouched by the arm of his chair, She murmurs into his ear, Head upon shoulder leant: 'My dear, my dear, O dear, It was an accident.'

A COAT

I MADE my song a coat Covered with embroideries Out of old mythologies From heel to throat; But the fools caught it, Wore it in the world's eyes As though they'd wrought it. Song, let them take it, For there's more enterprise In walking naked. While I, from
Who comes at a
A clear articul
But inwardly,
Beyond the fling
—Ben Jonson's
At Kyle-na-no
A sterner consci
I can forgive ev.
Those undreamt
—Seeing that F
Being but a par
Notorious, till a
Are but a post t

While I, from that reed-throated whisperer
Who comes at need, although not now as once
A clear articulation in the air,
But inwardly, surmise companions
Beyond the fling of the dull ass's hoof,
—Ben Jonson's phrase—and find when June is come
At Kyle-na-no under that ancient roof
A sterner conscience and a friendlier home,
I can forgive even that wrong of wrongs,
Those undreamt accidents that have made me
—Seeing that Fame has perished this long while,
Being but a part of ancient ceremony—
Notorious, till all my priceless things
Are but a post the passing dogs defile.

THE W

THE WILD SWANS AT COOLE

But now they drift on the still water, Mysterious, beautiful; Among what rushes will they build, By what lake's edge or pool Delight men's eyes when I awake some day To find they have flown away?

IN MEMORY OF MAJOR ROBERT GREGORY

Now that we're almost settled in our house I'll name the friends that cannot sup with us Beside a fire of turf in th' ancient tower, And having talked to some late hour Climb up the narrow winding stair to bed: Discoverers of forgotten truth Or mere companions of my youth, All, all are in my thoughts to-night being dead.

Always we'd have the new friend meet the old And we are hurt if either friend seem cold, And there is salt to lengthen out the smart In the affections of our heart, And quarrels are blown up upon that head; But not a friend that I would bring This night can set us quarrelling, For all that come into my mind are dead.

III

Lionel Johnson comes the first to mind, That loved his learning better than mankind,

Though courte Brooded upon Till all his Gre A long blast u A little nearer A measureless

And that enqui That dying cho

And never coul

But that, long

Towards nightf

In a most desol

Towards nightf

Passionate and

And then I thin In muscular you For horsemansh That could have And solid men, But as the outra By opposition, s

They were my c A portion of my And now their b Out of some old

Having grown s

148

Though courteous to the worst; much falling he Brooded upon sanctity
Till all his Greek and Latin learning seemed
A long blast upon the horn that brought
A little nearer to his thought
A measureless consummation that he dreamed.

IV

And that enquiring man John Synge comes next, That dying chose the living world for text And never could have rested in the tomb But that, long travelling, he had come Towards nightfall upon certain set apart In a most desolate stony place, Towards nightfall upon a race Passionate and simple like his heart.

V

And then I think of old George Pollexfen, In muscular youth well known to Mayo men For horsemanship at meets or at racecourses, That could have shown how pure-bred horses And solid men, for all their passion, live But as the outrageous stars incline By opposition, square and trine; Having grown sluggish and contemplative.

VI

They were my close companions many a year, A portion of my mind and life, as it were, And now their breathless faces seem to look Out of some old picture-book; I am accustomed to their lack of breath, But not that my dear friend's dear son, Our Sidney and our perfect man, Could share in that discourtesy of death.

VII

For all things the delighted eye now sees
Were loved by him; the old storm-broken trees
That cast their shadows upon road and bridge;
The tower set on the stream's edge;
The ford where drinking cattle make a stir
Nightly, and startled by that sound
The water-hen must change her ground;
He might have been your heartiest welcomer.

VIII

When with the Galway foxhounds he would ride From Castle Taylor to the Roxborough side Or Esserkelly plain, few kept his pace; At Mooneen he had leaped a place So perilous that half the astonished meet Had shut their eyes; and where was it He rode a race without a bit? And yet his mind outran the horses' feet.

IX

We dreamed that a great painter had been born To cold Clare rock and Galway rock and thorn, To that stern colour and that delicate line That are our secret discipline Wherein the gas Soldier, scholar And yet he had To have publis

What other cou In all lovely int As he that prace All work in me In moulded pla Soldier, scholar, And all he did As though he h

Some burn dam The entire comb As though dried The bare chimn Because the wor Soldier, scholar, As 'twere all life What made us of

I had thought, so That shakes the All those that m Or boyish intelle Wherein the gazing heart doubles her might. Soldier, scholar, horseman, he, And yet he had the intensity To have published all to be a world's delight.

x

What other could so well have counselled us In all lovely intricacies of a house As he that practised or that understood All work in metal or in wood, In moulded plaster or in carven stone? Soldier, scholar, horseman, he, And all he did done perfectly As though he had but that one trade alone.

XI

Some burn damp faggots, others may consume The entire combustible world in one small room As though dried straw, and if we turn about The bare chimney is gone black out Because the work had finished in that flare. Soldier, scholar, horseman, he, As 'twere all life's epitome. What made us dream that he could comb grey hair?

XII

I had thought, seeing how bitter is that wind That shakes the shutter, to have brought to mind All those that manhood tried, or childhood loved Or boyish intellect approved, With some appropriate commentary on each; Until imagination brought A fitter welcome; but a thought Of that late death took all my heart for speech.

AN IRISH AIRMAN FORESEES HIS DEATH

I know that I shall meet my fate Somewhere among the clouds above; Those that I fight I do not hate, Those that I guard I do not love; My country is Kiltartan Cross, My countrymen Kiltartan's poor, No likely end could bring them loss Or leave them happier than before. Nor law, nor duty bade me fight, Nor public men, nor cheering crowds, A lonely impulse of delight Drove to this tumult in the clouds; I balanced all, brought all to mind, The years to come seemed waste of breath, A waste of breath the years behind In balance with this life, this death.

MEN IMPROVE WITH THE YEARS

I AM worn out with dreams; A weather-worn, marble triton Among the streams; And all day long I look Upon this lady's beauty As though I had found in a book A pictu Pleased Or the Delight For me And ye Is this to O woul When I But I go A weath Among

THE CO

Would I could cat Where many a kin And many a king's And alight at the Cathe playing upon playing upon the playing upon the Cathe Ca

I would find by the The collar-bone of Worn thin by the I And pierce it throu At the old bitter we And laugh over the At all who marry in Through the white

A pictured beauty,
Pleased to have filled the eyes
Or the discerning ears,
Delighted to be but wise,
For men improve with the years;
And yet, and yet,
Is this my dream, or the truth?
O would that we had met
When I had my burning youth!
But I grow old among dreams,
A weather-worn, marble triton
Among the streams.

THE COLLAR-BONE OF A HARE

Would I could cast a sail on the water Where many a king has gone And many a king's daughter, And alight at the comely trees and the lawn, The playing upon pipes and the dancing, And learn that the best thing is To change my loves while dancing And pay but a kiss for a kiss.

I would find by the edge of that water
The collar-bone of a hare
Worn thin by the lapping of water,
And pierce it through with a gimlet and stare
At the old bitter world where they marry in churches,
And laugh over the untroubled water
At all who marry in churches,
Through the white thin bone of a hare.

UNDER THE ROUND TOWER

'ALTHOUGH I'd lie lapped up in linen A deal I'd sweat and little carn If I should live as live the neighbours,' Cried the beggar, Billy Byrne; 'Stretch bones till the daylight come On great-grandfather's battered tomb.'

Upon a grey old battered tombstone In Glendalough beside the stream, Where the O'Byrnes and Byrnes are buried, He stretched his bones and fell in a dream Of sun and moon that a good hour Bellowed and pranced in the round tower;

Of golden king and silver lady, Bellowing up and bellowing round, Till toes mastered a sweet measure, Mouth mastered a sweet sound, Prancing round and prancing up Until they pranced upon the top.

That golden king and that wild lady Sang till stars began to fade, Hands gripped in hands, toes close together, Hair spread on the wind they made; That lady and that golden king Could like a brace of blackbirds sing.

'It's certain that my luck is broken,' That rambling jailbird Billy said; Before night And snug it I cannot find On great-gra

SOI

SANG Solo: And kissed 'All day lo We have to All day lor We have g In the narr Like an old

To Solomo Planted on 'If you had That might You had be Our shadov Discovered Are but a r

Said Solome And kissed 'There's no Born under Dare match And all day There's not The world a 'Before nightfall I'll pick a pocket And snug it in a feather-bed. I cannot find the peace of home On great-grandfather's battered tomb.'

SOLOMON TO SHEBA

SANG Solomon to Sheba, And kissed her dusky face, 'All day long from mid-day We have talked in the one place, All day long from shadowless noon We have gone round and round In the narrow theme of love Like an old horse in a pound.'

To Solomon sang Sheba, Planted on his knees, 'If you had broached a matter That might the learned please, You had before the sun had thrown Our shadows on the ground Discovered that my thoughts, not it, Are but a narrow pound.'

Said Solomon to Sheba,
And kissed her Arab eyes,
'There's not a man or woman
Born under the skies
Dare match in learning with us two,
And all day long we have found
There's not a thing but love can make
The world a narrow pound.'

THE LIVING BEAUTY

I BADE, because the wick and oil are spent And frozen are the channels of the blood, My discontented heart to draw content From beauty that is cast out of a mould In bronze, or that in dazzling marble appears, Appears, but when we have gone is gone again, Being more indifferent to our solitude Than 'twere an apparition. O heart, we are old; The living beauty is for younger men: We cannot pay its tribute of wild tears.

A SONG

I THOUGHT no more was needed Youth to prolong
Than dumb-bell and foil
To keep the body young.
O who could have foretold
That the heart grows old?

Though I have many words, What woman's satisfied, I am no longer faint Because at her side? O who could have foretold That the heart grows old?

I have not lost desire But the heart that I had; I though Laid on For who That the

TO

DEAR fello With every With every Choose you Who draws Soon toppl

You may, and Be passional As common Who were With old E But those of

I know what How hard a Yet praise to There is no And I may With Lando

TO

My dea More th I thought 'twould burn my body Laid on the death-bed, For who could have foretold That the heart grows old?

TO A YOUNG BEAUTY

DEAR fellow-artist, why so free With every sort of company, With every Jack and Jill? Choose your companions from the best; Who draws a bucket with the rest Soon topples down the hill.

You may, that mirror for a school, Be passionate, not bountiful As common beauties may, Who were not born to keep in trim With old Ezekiel's cherubim But those of Beauvarlet.

I know what wages beauty gives, How hard a life her servant lives, Yet praise the winters gone: There is not a fool can call me friend, And I may dine at journey's end With Landor and with Donne.

TO A YOUNG GIRL

My dear, my dear, I know More than another What makes your heart beat so; Not even your own mother Can know it as I know, Who broke my heart for her When the wild thought, That she denies And has forgot, Set all her blood astir And glittered in her eyes.

THE SCHOLARS

BALD heads forgetful of their sins, Old, learned, respectable bald heads Edit and annotate the lines That young men, tossing on their beds, Rhymed out in love's despair To flatter beauty's ignorant car.

All shuffle there; all cough in ink; All wear the carpet with their shoes; All think what other people think; All know the man their neighbour knows. Lord, what would they say Did their Catullus walk that way?

TOM O'ROUGHLEY

'Though logic-choppers rule the town, And every man and maid and boy Has marked a distant object down, An aimless joy is a pure joy,' Or so di That sav 'And wi And not

'If little

But little What's of How but Could troop Or some 'And if I'd dance

SHEP

Shepherd. That cry I wished before

Goatherd.

Could make me Being old, but the And that would Let the young we Never until this Where my goats From stone to s

Shepherd.

Something has t I let them stray. For rhyme can h And make the d Or so did Tom O'Roughley say That saw the surges running by, 'And wisdom is a butterfly And not a gloomy bird of prey.

'If little planned is little sinned
But little need the grave distress.
What's dying but a second wind?
How but in zig-zag wantonness
Could trumpeter Michael be so brave?'
Or something of that sort he said,
'And if my dearest friend were dead
I'd dance a measure on his grave.'

SHEPHERD AND GOATHERD

Shepherd. That cry's from the first cuckoo of the year. I wished before it ceased.

Goatherd. Nor bird nor beast
Could make me wish for anything this day,
Being old, but that the old alone might die,
And that would be against God's Providence.
Let the young wish. But what has brought you here?
Never until this moment have we met
Where my goats browse on the scarce grass or leap
From stone to stone.

Shepherd. I am looking for strayed sheep; Something has troubled me and in my trouble I let them stray. I thought of rhyme alone, For rhyme can beat a measure out of trouble And make the daylight sweet once more; but when I had driven every rhyme into its place The sheep had gone from theirs.

Goatherd. I know right well What turned so good a shepherd from his charge.

Shepherd. He that was best in every country sport And every country craft, and of us all Most courteous to slow age and hasty youth, Is dead.

Goatherd. The boy that brings my griddle-cake Brought the bare news.

Shepherd. He had thrown the crook away And died in the great war beyond the sea.

Goatherd. He had often played his pipes among my hills, And when he played it was their loneliness, The exultation of their stone, that cried Under his fingers.

Shepherd. I had it from his mother, And his own flock was browsing at the door.

Goatherd. How does she bear her grief? There is not a shepherd

But grows more gentle when he speaks her name, Remembering kindness done, and how can I, That found when I had neither goat nor grazing New welcome and old wisdom at her fire Till winter blasts were gone, but speak of her Even before his children and his wife.

Shepherd. She goes about her house erect and calm Between the pantry and the linen-chest, Or else at meadow or at grazing overlooks Her labouring men, as though her darling lived, But for her grandson now; there is no change But such as I has Watching our sh When her son's

Goatherd.

I too have rhyme Is hot to show w And till that's do Old goatherds an Youth can excel Are learned in w

Shepherd.

Set carpenters to On no long bench As others will, we But left the hous As though he known No settled man. There's nothing of sorrowful, aus

That he alone ha

Goatherd. You have

Shepherd.

And when 'twas of That maybe 'I am Had sounded bett

'Like the speckled Thousands of leag And runs or a whi On his yellow legs He stayed for a w But such as I have seen upon her face Watching our shepherd sports at harvest-time When her son's turn was over.

Goatherd. Sing your song. I too have rhymed my reveries, but youth Is hot to show whatever it has found, And till that's done can neither work nor wait. Old goatherds and old goats, if in all else Youth can excel them in accomplishment, Are learned in waiting.

Shepherd. You cannot but have seen That he alone had gathered up no gear, Set carpenters to work on no wide table, On no long bench nor lofty milking shed As others will, when first they take possession, But left the house as in his father's time As though he knew himself, as it were, a cuckoo, No settled man. And now that he is gone There's nothing of him left but half a score Of sorrowful, austere, sweet, lofty pipe tunes.

Goatherd. You have put the thought in rhyme.

Shepherd. I worked all day,
And when 'twas done so little had I done
That maybe 'I am sorry' in plain prose
Had sounded better to your mountain fancy.

'Like the speckled bird that steers
Thousands of leagues oversea,
And runs or a while half-flies
On his yellow legs through our meadows,
He stayed for a while; and we

Had scarcely accustomed our ears
To his speech at the break of day,
Had scarcely accustomed our eyes
To his shape at the rinsing pool
Among the evening shadows,
When he vanished from ears and eyes.
I might have wished on the day
He came, but man is a fool.'

Goatherd. You sing as always of the natural life, And I that made like music in my youth Hearing it now have sighed for that young man And certain lost companions of my own.

Shepherd. They say that on your barren mountain ridge You have measured out the road that the soul treads When it has vanished from our natural eyes; That you have talked with apparitions.

Goatherd.

Indeed

My daily thoughts since the first stupor of youth

Have found the path my goats' feet cannot find.

Shepherd. Sing, for it may be that your thoughts have plucked

Some medicable herb to make our grief

Less bitter.

Goatherd. They have brought me from that ridge Seed-pods and flowers that are not all wild poppy.

[Sings.]

'He grows younger every second That were all his birthdays reckoned Much too solemn seemed; Because of what he had dreamed,

Or the ambition Much too soles Jaunting, journ To his own day He unpacks th Of all 'twas pa Of all that he The outrageous At some old wi He'll practise o Or on the close Court his shep! Or put his hear Till daytime, p Knowledge he s Through victori Till, clambering He dreams him All knowledge 1

Shepherd. When I I Into the fold, we cut out our rhy But put no name To know the me May be a quiet And children where the sheet and the sheet

Of sweeter igno

LINES 7

WHEN have I la The round greer

Or the ambitions that he served, Much too solemn and reserved. Jaunting, journeying To his own dayspring, He unpacks the loaded pern Of all 'twas pain or joy to learn, Of all that he had made. The outrageous war shall fade; At some old winding whitethorn root He'll practise on the shepherd's flute, Or on the close-cropped grass Court his shepherd lass, Or put his heart into some game Till daytime, playtime seem the same; Knowledge he shall unwind Through victories of the mind, Till, clambering at the cradle-side, He dreams himself his mother's pride, All knowledge lost in trance Of sweeter ignorance.'

Shepherd. When I have shut these ewes and this old ram Into the fold, we'll to the woods and there Cut out our rhymes on strips of new-torn bark But put no name and leave them at her door. To know the mountain and the valley have grieved May be a quiet thought to wife and mother, And children when they spring up shoulder-high.

LINES WRITTEN IN DEJECTION

When have I last looked on The round green eyes and the long wavering bodies Of the dark leopards of the moon? All the wild witches, those most noble ladies, For all their broom-sticks and their tears, Their angry tears, are gone.

The holy centaurs of the hills are vanished; I have nothing but the embittered sun; Banished heroic mother moon and vanished, And now that I have come to fifty years I must endure the timid sun.

THE DAWN

I would be ignorant as the dawn
That has looked down
On that old queen measuring a town
With the pin of a brooch,
Or on the withered men that saw
From their pedantic Babylon
The careless planets in their courses,
The stars fade out where the moon comes,
And took their tablets and did sums;
I would be ignorant as the dawn
That merely stood, rocking the glittering coach
Above the cloudy shoulders of the horses;
I would be—for no knowledge is worth a straw—
Ignorant and wanton as the dawn.

ON WOMAN

MAY God be praised for woman That gives up all her mind, A man may find in no man A friendship of her kind That co As with Nor qua Because

Though It's plai That So While t Yet nev They sa Count a When S When sl When fi It shudd Harshne That ma Pleasure Shudder What el God gran For I am To hope Now I a But whe The Pesi That pos Brings n To find

And kno

Until I a

Sleep dr

That covers all he has brought As with her flesh and bone, Nor quarrels with a thought Because it is not her own.

Though pedantry denies, It's plain the Bible means That Solomon grew wise While talking with his queens, Yet never could, although They say he counted grass, Count all the praises due When Sheba was his lass. When she the iron wrought, or When from the smithy fire It shuddered in the water: Harshness of their desire That made them stretch and yawn, Pleasure that comes with sleep, Shudder that made them one. What else He give or keep God grant me-no, not here, For I am not so bold To hope a thing so dear Now I am growing old, But when, if the tale's true. The Pestle of the moon That pounds up all anew Brings me to birth again-To find what once I had And know what once I have known, Until I am driven mad, Sleep driven from my bed,

By tenderness and care, Pity, an aching head, Gnashing of teeth, despair; And all because of some one Perverse creature of chance, And live like Solomon That Sheba led a dance.

THE FISHERMAN

ALTHOUGH I can see him still. The freckled man who goes To a grey place on a hill In grey Connemara clothes At dawn to cast his flies, It's long since I began To call up to the eyes This wise and simple man. All day I'd looked in the face What I had hoped 'twould be To write for my own race And the reality; The living men that I hate, The dead man that I loved, The craven man in his seat, The insolent unreproved, And no knave brought to book Who has won a drunken cheer, The witty man and his joke Aimed at the commonest ear, The clever man who cries The catch-cries of the clown,

The bea

Maybe
Sudden
In scorn
Imagini
And his
And gre
Climbir
Where s
And the
When t
A man
A man
And crie
I shall h

'CALL dow Let him b Till the ye For larder The old co The scullio

And pas

'I will not Nor a cage Now I hav The beating down of the wise And great Art beaten down.

Maybe a twelvemonth since Suddenly I began, In scorn of this audience. Imagining a man, And his sun-freckled face, And grey Connemara cloth, Climbing up to a place Where stone is dark under froth, And the down-turn of his wrist When the flies drop in the stream; A man who does not exist. A man who is but a dream: And cried, 'Before I am old I shall have written him one Poem maybe as cold And passionate as the dawn.'

THE HAWK

'CALL down the hawk from the air; Let him be hooded or caged Till the yellow eye has grown mild, For larder and spit are bare, The old cook enraged, The scullion gone wild.'

'I will not be clapped in a hood, Nor a cage, nor alight upon wrist, Now I have learnt to be proud Hovering over the wood In the broken mist Or tumbling cloud.'

'What tumbling cloud did you cleave, Yellow-eyed hawk of the mind, Last evening? that I, who had sat Dumbfounded before a knave, Should give to my friend A pretence of wit.'

MEMORY

One had a lovely face, And two or three had charm, But charm and face were in vain Because the mountain grass Cannot but keep the form Where the mountain hare has lain.

HER PRAISE

SHE is foremost of those that I would hear praised. I have gone about the house, gone up and down As a man does who has published a new book, Or a young girl dressed out in her new gown, And though I have turned the talk by hook or crook Until her praise should be the uppermost theme, A woman spoke of some new tale she had read, A man confusedly in a half dream As though some other name ran in his head. She is foremost of those that I would hear praised.

I will talk no more But walk by the dr Some beggar shelte Manage the talk us If there be rags end And be well pleas days,
Though she had y blame,

Among the poor bo

'WHAT have I earn 'For all that I have The daily spite of t Where who has serv The reputation of h Between the night a And you know well Where every day m In the green shadow Or climbed among The unperturbed ar Evening and morning To where the duche The stately midnigh In their great windo I might have had no Courtesy and passio That saw the wicks I might have used t I will talk no more of books or the long war
But walk by the dry thorn until I have found
Some beggar sheltering from the wind, and there
Manage the talk until her name come round.
If there be rags enough he will know her name
And be well pleased remembering it, for in the old
days,

Though she had young men's praise and old men's blame,

Among the poor both old and young gave her praise.

THE PEOPLE

'WHAT have I earned for all that work,' I said, 'For all that I have done at my own charge? The daily spite of this unmannerly town, Where who has served the most is most defamed, The reputation of his lifetime lost Between the night and morning. I might have lived, And you know well how great the longing has been, Where every day my footfall should have lit In the green shadow of Ferrara wall; Or climbed among the images of the past— The unperturbed and courtly images-Evening and morning, the steep street of Urbino To where the duchess and her people talked The stately midnight through until they stood In their great window looking at the dawn; I might have had no friend that could not mix Courtesy and passion into one like those That saw the wicks grow yellow in the dawn; I might have used the one substantial right

My trade allows: chosen my company,
And chosen what scenery had pleased me best.'
Thereon my phoenix answered in reproof,
'The drunkards, pilferers of public funds,
All the dishonest crowd I had driven away,
When my luck changed and they dared meet my face,
Crawled from obscurity, and set upon me
Those I had served and some that I had fed;
Yet never have I, now nor any time,
Complained of the people.'

All I could reply Was: 'You, that have not lived in thought but deed, Can have the purity of a natural force, But I, whose virtues are the definitions Of the analytic mind, can neither close The eye of the mind nor keep my tongue from speech.' And yet, because my heart leaped at her words, I was abashed, and now they come to mind After nine years, I sink my head abashed.

HIS PHOENIX

THERE is a queen in China, or maybe it's in Spain, And birthdays and holidays such praises can be heard Of her unblemished lineaments, a whiteness with no stain,

That she might be that sprightly girl trodden by a bird;

And there's a score of duchesses, surpassing woman-kind,

Or who have found a painter to make them so for pay

And smooth out state of his mind:

I knew a phoenix in day.

The young men e

laughing eye,

And Ruth St. Denis
poor luck;
From nineteen hund
cry,
And there's a player
cloak
And flings herself o

With all a woman's And there are—but 1 I knew a phoenix in day.

be bride

There's Margaret an A Daphne and a Ma One's had her fill of Another boasts, 'I p or three.'

If head and limb hav

They can spread out to say,

Be but the breaker delight:

I knew a phoenix in day.

And smooth out stain and blemish with the elegance of his mind:

I knew a phoenix in my youth, so let them have their day.

The young men every night applaud their Gaby's laughing eye,

And Ruth St. Denis had more charm although she had poor luck;

From nineteen hundred nine or ten, Pavlova's had the cry,

And there's a player in the States who gathers up her cloak

And flings herself out of the room when Juliet would be bride

With all a woman's passion, a child's imperious way, And there are—but no matter if there are scores beside: I knew a phoenix in my youth, so let them have their day.

There's Margaret and Marjorie and Dorothy and Nan, A Daphne and a Mary who live in privacy;

One's had her fill of lovers, another's had but one, Another boasts, 'I pick and choose and have but two

or three.'

If head and limb have beauty and the instep's high and light

They can spread out what sail they please for all I have to say,

Be but the breakers of men's hearts or engines of delight:

I knew a phoenix in my youth, so let them have their day.

There'll be that crowd, that barbarous crowd, through all the centuries,

And who can say but some young belle may walk and talk men wild

Who is my beauty's equal, though that my heart denies, But not the exact likeness, the simplicity of a child,

And that proud look as though she had gazed into the burning sun,

And all the shapely body no tittle gone astray.

I mourn for that most lonely thing; and yet God's will be done:

I knew a phoenix in my youth, so let them have their day.

A THOUGHT FROM PROPERTIUS

SHE might, so noble from head To great shapely knees The long flowing line, Have walked to the altar Through the holy images At Pallas Athena's side, Or been fit spoil for a centaur Drunk with the unmixed wine.

BROKEN DREAMS

THERE is grey in your hair. Young men no longer suddenly catch their breath When you are passing; But maybe some old gaffer mutters a blessing Because it was your prayer Recovered him upor For your sole sake— And given to others From meagre girlho Burdensome beauty— Heaven has put awa So great her portion By merely walking i

Your beauty can buvague memories, not A young man when Will say to an old r. The poet stubborn when age might we

Vague memories, no But in the grave all, The certainty that I Leaning or standing In the first lovelines And with the fervor Has set me muttering

You are more beauti And yet your body I Your small hands we And I am afraid tha And paddle to the w In that mysterious, a Where those that ha Paddle and are perfe The hands that I have

For old sakes' sake.

Recovered him upon the bed of death.

For your sole sake—that all heart's ache have known, And given to others all heart's ache,

From meagre girlhood's putting on

Burdensome beauty—for your sole sake

Heaven has put away the stroke of her doom,

So great her portion in that peace you make

By merely walking in a room.

Your beauty can but leave among us Vague memories, nothing but memories. A young man when the old men are done talking Will say to an old man, 'Tell me of that lady The poet stubborn with his passion sang us When age might well have chilled his blood.'

Vague memories, nothing but memories, But in the grave all, all, shall be renewed. The certainty that I shall see that lady Leaning or standing or walking In the first loveliness of womanhood, And with the fervour of my youthful eyes, Has set me muttering like a fool.

You are more beautiful than any one, And yet your body had a flaw:
Your small hands were not beautiful, And I am afraid that you will run And paddle to the wrist
In that mysterious, always brimming lake Where those that have obeyed the holy law Paddle and are perfect. Leave unchanged The hands that I have kissed, For old sakes' sake.

The last stroke of midnight dies.

All day in the one chair

From dream to dream and rhyme to rhyme I have ranged

In rambling talk with an image of air:

Vague memories, nothing but memories.

A DEEP-SWORN VOW

OTHERS because you did not keep
That deep-sworn vow have been friends of mine;
Yet always when I look death in the face,
When I clamber to the heights of sleep,
Or when I grow excited with wine,
Suddenly I meet your face.

PRESENCES

THIS night has been so strange that it seemed As if the hair stood up on my head. From going-down of the sun I have dreamed That women laughing, or timid or wild, In rustle of lace or silken stuff, Climbed up my creaking stair. They had read All I had rhymed of that monstrous thing Returned and yet unrequited love. They stood in the door and stood between My great wood lectern and the fire Till I could hear their hearts beating: One is a harlot, and one a child That never looked upon man with desire, And one, it may be, a queen.

THE BAI

Hands, of Bring the That bell Into its n

TO A SQL

Why Thro As th To s Whe

Is to

And

Сом

ON BEING

I THINK it bett A poet's mouth We have no gir He has had end A young girl in Or an old man

IN MEMOR

FIVE-AND-Since old

THE BALLOON OF THE MIND

HANDS, do what you're bid: Bring the balloon of the mind That bellies and drags in the wind Into its narrow shed.

TO A SQUIRREL AT KYLE-NA-NO

COME play with me; Why should you run Through the shaking tree As though I'd a gun To strike you dead? When all I would do Is to scratch your head And let you go.

ON BEING ASKED FOR A WAR POEM

I THINK it better that in times like these A poet's mouth be silent, for in truth We have no gift to set a statesman right; He has had enough of meddling who can please A young girl in the indolence of her youth, Or an old man upon a winter's night.

IN MEMORY OF ALFRED POLLEXFEN

FIVE-AND-TWENTY years have gone Since old William Pollexfen

Laid his strong bones down in death By his wife Elizabeth In the grey stone tomb he made. And after twenty years they laid In that tomb by him and her His son George, the astrologer; And Masons drove from miles away To scatter the Acacia spray Upon a melancholy man Who had ended where his breath began. Many a son and daughter lies Far from the customary skies, The Mall and Eades's grammar school, In London or in Liverpool; But where is laid the sailor John That so many lands had known, Quiet lands or unquiet seas Where the Indians trade or Japanese? He never found his rest ashore, Moping for one voyage more. Where have they laid the sailor John? And yesterday the youngest son, A humorous, unambitious man, Was buried near the astrologer, Yesterday in the tenth year Since he who had been contented long, A nobody in a great throng, Decided he must journey home, Now that his fiftieth year had come, And 'Mr. Alfred' be again Upon the lips of common men Who carried in their memory His childhood and his family.

At all these A visionary Lamenting And with t

UPO

WITH the old kinds She lies, her lovely Propped upon pillor She would not have And when she meet Her speech a wicked Matching our broke Thinking of saints a

Certain Artists

Bring where our Bez A new modelled do. With a friend's or a Features, or maybe Her features when a Of dull red hair wa Over some silken do. Cut in the Turkish Or, it may be, like At all these death-beds women heard A visionary white sea-bird Lamenting that a man should die; And with that cry I have raised my cry.

UPON A DYING LADY

Ι

Her Courtesy

WITH the old kindness, the old distinguished grace, She lies, her lovely piteous head amid dull red hair Propped upon pillows, rouge on the pallor of her face. She would not have us sad because she is lying there, And when she meets our gaze her eyes are laughter-lit, Her speech a wicked tale that we may vie with her, Matching our broken-hearted wit against her wit, Thinking of saints and of Petronius Arbiter.

Π

Certain Artists bring her Dolls and Drawings

Bring where our Beauty lies
A new modelled doll, or drawing,
With a friend's or an enemy's
Features, or maybe showing
Her features when a tress
Of dull red hair was flowing
Over some silken dress
Cut in the Turkish fashion,
Or, it may be, like a boy's.

We have given the world our passion, We have naught for death but toys.

III

She turns the Dolls' Faces to the Wall

Because to-day is some religious festival
They had a priest say Mass, and even the Japanese,
Heel up and weight on toe, must face the wall
—Pedant in passion, learned in old courtesies,
Vehement and witty she had seemed—; the Venetian
lady

Who had seemed to glide to some intrigue in her red shoes,

Her domino, her panniered skirt copied from Longhi; The meditative critic; all are on their toes, Even our Beauty with her Turkish trousers on. Because the priest must have like every dog his day Or keep us all awake with baying at the moon, We and our dolls being but the world were best away.

IV

The End of Day

She is playing like a child
And penance is the play,
Fantastical and wild
Because the end of day
Shows her that some one soon
Will come from the house, and say—
Though play is but half done—
'Come in and leave the play.'

She has not grown As narrow natures and called the please Happier days though She knows herself and white of the correction of the correct

When her soul flies (I have no speech be Amid the dreams of Amid that first asto All but the terrors That made her Dia Pacing with half-cl Who had murmure Aye, and Achilles, Who have lived in Death.

Her Friend Pardon, great enem Without an angry Her Race

She has not grown uncivil
As narrow natures would
And called the pleasures evil
Happier days thought good;
She knows herself a woman,
No red and white of a face,
Or rank, raised from a common
Unreckonable race;
And how should her heart fail her
Or sickness break her will
With her dead brother's valour
For an example still?

VI

Her Courage

When her soul flies to the predestined dancing-place (I have no speech but symbol, the pagan speech I made Amid the dreams of youth) let her come face to face, Amid that first astonishment, with Grania's shade, All but the terrors of the woodland flight forgot That made her Diarmuid dear, and some old cardinal Pacing with half-closed eyelids in a sunny spot Who had murmured of Giorgione at his latest breath—Aye, and Achilles, Timor, Babar, Barhaim, all Who have lived in joy and laughed into the face of Death.

VII

Her Friends bring her a Christmas Tree

Pardon, great enemy, Without an angry thought We've carried in our tree,
And here and there have bought
Till all the boughs are gay,
And she may look from the bed
On pretty things that may
Please a fantastic head.
Give her a little grace,
What if a laughing eye
Have looked into your face?
It is about to die.

EGO DOMINUS TUUS

Hic. On the grey sand beside the shallow stream
Under your old wind-beaten tower, where still
A lamp burns on beside the open book
That Michael Robartes left, you walk in the moon
And though you have passed the best of life still
trace,
Enthralled by the unconquerable delusion,
Magical shapes.

Ille. By the help of an image I call to my own opposite, summon all That I have handled least, least looked upon.

Hie. And I would find myself and not an image.

Ille. That is our modern hope and by its light We have lit upon the gentle, sensitive mind And lost the old nonchalance of the hand; Whether we have chosen chisel, pen or brush, We are but critics, or but half create, Timid, entangled, empty and abashed, Lacking the countenance of our friends.

Hic.

The chief imagir Dante Alighieri, That he has mad More plain to th But that of Chris

Ille.

Or was the hung A hunger for the Most out of reach The man that La I think he fashion An image that m Staring upon a Befrom doored and Among the coarse He set his chisel Being mocked by Derided and derivation of the coancillation of the coancillation of the set his chief To climb that start He found the un

Hic. Yet surely the Out of no tragic Impulsive men the And sing when t

The most exalted

Ille.

For those that lo Grow rich, popul And should they The struggle of t Hic. And yet
The chief imagination of Christendom,
Dante Alighieri, so utterly found himself
That he has made that hollow face of his
More plain to the mind's eye than any face
But that of Christ.

Ille. And did he find himself Or was the hunger that had made it hollow A hunger for the apple on the bough Most out of reach? and is that spectral image The man that Lapo and that Guido knew? I think he fashioned from his opposite An image that might have been a stony face Staring upon a Bedouin's horse-hair roof From doored and windowed cliff, or half upturned Among the coarse grass and the camel-dung. He set his chisel to the hardest stone. Being mocked by Guido for his lecherous life, Derided and deriding, driven out To climb that stair and eat that bitter bread. He found the unpersuadable justice, he found The most exalted lady loved by a man.

Hic. Yet surely there are men who have made their art
Out of no tragic war, lovers of life,
Impulsive men that look for happiness
And sing when they have found it.

Ille. No, not sing, For those that love the world serve it in action, Grow rich, popular and full of influence, And should they paint or write, still it is action: The struggle of the fly in marmalade.

The rhetorician would deceive his neighbours, The sentimentalist himself; while art Is but a vision of reality. What portion in the world can the artist have Who has awakened from the common dream But dissipation and despair?

Hic. And yet

No one denies to Keats love of the world;

Remember his deliberate happiness.

Ille. His art is happy, but who knows his mind?

I see a schoolboy when I think of him,

With face and nose pressed to a sweet-shop window,

For certainly he sank into his grave

His senses and his heart unsatisfied,

And made—being poor, ailing and ignorant,

Shut out from all the luxury of the world,

The coarse-bred son of a livery-stable keeper—

Luxuriant song.

Hic. Why should you leave the lamp Burning alone beside an open book, And trace these characters upon the sands? A style is found by sedentary toil And by the imitation of great masters.

Ille. Because I seek an image, not a book.

Those men that in their writings are most wise

Own nothing but their blind, stupefied hearts.

I call to the mysterious one who yet

Shall walk the wet sands by the edge of the stream

And look most like me, being indeed my double,

And prove of all imaginable things

The most unlike, being my anti-self,

And standing by All that I seek; a He were afraid t Their momentary Would carry it a

A PRAYER C

God grant a blessi And on my heirs, No table or chair of For shepherd lads That I myself for May handle nothing But what the great Throughout so man We take it for the Sinbad the sailor's Or image, from be That dream is a madevil

Destroy the view b That shades the ro. Planned in a gover Manacle his soul u

THE P

An old man c He and his fr Had trod the Their Connen And standing by these characters disclose All that I seek; and whisper it as though He were afraid the birds, who cry aloud Their momentary cries before it is dawn, Would carry it away to blasphemous men.

A PRAYER ON GOING INTO MY HOUSE

God grant a blessing on this tower and cottage
And on my heirs, if all remain unspoiled,
No table or chair or stool not simple enough
For shepherd lads in Galilee; and grant
That I myself for portions of the year
May handle nothing and set eyes on nothing
But what the great and passionate have used
Throughout so many varying centuries
We take it for the norm; yet should I dream
Sinbad the sailor's brought a painted chest,
Or image, from beyond the Loadstone Mountain,
That dream is a norm; and should some limb of the
devil

Destroy the view by cutting down an ash That shades the road, or setting up a cottage Planned in a government office, shorten his life, Manacle his soul upon the Red Sea bottom.

THE PHASES OF THE MOON

An old man cocked his ear upon a bridge; He and his friend, their faces to the South, Had trod the uneven road. Their boots were soiled, Their Connemara cloth worn out of shape; They had kept a steady pace as though their beds, Despite a dwindling and late-risen moon, Were distant still. An old man cocked his ear,

Aberne. What made that sound?

Robartes. A rat or water-hen Splashed, or an otter slid into the stream. We are on the bridge; that shadow is the tower, And the light proves that he is reading still. He has found, after the manner of his kind, Mere images; chosen this place to live in Because, it may be, of the candle-light From the far tower where Milton's Platonist Sat late, or Shelley's visionary prince: The lonely light that Samuel Palmer engraved, An image of mysterious wisdom won by toil; And now he seeks in book or manuscript What he shall never find.

Aherne. Why should not you Who know it all ring at his door, and speak Just truth enough to show that his whole life Will scarcely find for him a broken crust Of all those truths that are your daily bread; And when you have spoken take the roads again?

Robartes. He wrote of me in that extravagant style He had learnt from Pater, and to round his tale Said I was dead; and dead I choose to be.

Aherne. Sing me the changes of the moon once more; True song, though speech: 'mine author sung it me.'

Robartes. Twenty-and-eight the phases of the moon, The full and the moon's dark and all the crescents, Twenty-and-eigh The cradles that For there's no hu From the first cre But summons to Is always happy ! But while the me He follows what Among whims n As with the cat-o His body mould Grows comelier. Athena takes Acl Hector is in the Because the hero And yet, twice b Before the full n The thirteenth n In its own being There is no muse Under the frenzy The soul begins To die into the l

Aherne. Sing out th

Robartes. All though Becomes a body: Too perfect at th Too lonely for th Body and soul ca Beyond the visib Twenty-and-eight, and yet but six-and-twenty The cradles that a man must needs be rocked in: For there's no human life at the full or the dark. From the first crescent to the half, the dream But summons to adventure and the man Is always happy like a bird or a beast; But while the moon is rounding towards the full He follows whatever whim's most difficult Among whims not impossible, and though scarred, As with the cat-o'-nine-tails of the mind, His body moulded from within his body Grows comelier. Eleven pass, and then Athena takes Achilles by the hair, Hector is in the dust, Nietzsche is born. Because the heroes' crescent is the twelfth. And yet, twice born, twice buried, grow he must, Before the full moon, helpless as a worm. The thirteenth moon but sets the soul at war In its own being, and when that war's begun There is no muscle in the arm; and after, Under the frenzy of the fourteenth moon The soul begins to tremble into stillness, To die into the labyrinth of itself!

Aherne. Sing out the song; sing to the end, and sing The strange reward of all that discipline.

Robartes. All thought becomes an image and the soul Becomes a body: that body and that soul Too perfect at the full to lie in a cradle, Too lonely for the traffic of the world: Body and soul cast out and cast away Beyond the visible world.

Aberne. All dreams of the soul End in a beautiful man's or woman's body.

Robartes. Have you not always known it?

Aberne. The song will have it That those that we have loved got their long fingers From death, and wounds, or on Sinai's top, Or from some bloody whip in their own hands. They ran from cradle to cradle till at last Their beauty dropped out of the loneliness Of body and soul.

Robartes.

The lover's heart knows that.

Aherne. It must be that the terror in their eyes Is memory or foreknowledge of the hour When all is fed with light and heaven is bare.

Robartes. When the moon's full those creatures of the full

Are met on the waste hills by country men Who shudder and hurry by: body and soul Estranged amid the strangeness of themselves, Caught up in contemplation, the mind's eye Fixed upon images that once were thought; For separate, perfect, and immovable Images can break the solitude Of lovely, satisfied, indifferent eyes.

And thereupon with aged, high-pitched voice Aherne laughed, thinking of the man within, His sleepless candle and laborious pen.

Robartes. And after that the crumbling of the moon. The soul remembering its loneliness

Shudders in man It would be the v Choosing whatev Among tasks not Upon the body a The coarseness of

Aberne.

It sought itself a

Robartes. Because you
And never wrote
Reformer, merch
Dutiful husband,
Cradle upon crad
Deformed becaus
But saves us from

Aberne.

That the last ser

Robartes. Because al They are cast be Crying to one an And having no d What's good or At the perfection And yet they spe

> Deformed beyon Insipid as the do

They change the

Aberne.

Robartes. When all That it can take The first thin cr Shudders in many cradles; all is changed, It would be the world's servant, and as it serves, Choosing whatever task's most difficult Among tasks not impossible, it takes Upon the body and upon the soul The coarseness of the drudge.

Aherne. Before the full It sought itself and afterwards the world.

Robartes. Because you are forgotten, half out of life, And never wrote a book, your thought is clear. Reformer, merchant, statesman, learned man, Dutiful husband, honest wife by turn, Cradle upon cradle, and all in flight and all Deformed because there is no deformity But saves us from a dream.

Aherne. And what of those That the last servile crescent has set free?

Robartes. Because all dark, like those that are all light, They are cast beyond the verge, and in a cloud, Crying to one another like the bats; And having no desire they cannot tell What's good or bad, or what it is to triumph At the perfection of one's own obedience; And yet they speak what's blown into the mind; Deformed beyond deformity, unformed, Insipid as the dough before it is baked, They change their bodies at a word.

Aherne. And then?

Robartes. When all the dough has been so kneaded up

That it can take what form cook Nature fancy,

The first thin crescent is wheeled round once more.

Aberne. But the escape; the song's not finished yet.

Robartes. Hunchback and saint and fool are the last crescents.

The burning bow that once could shoot an arrow Out of the up and down, the wagon-wheel Of beauty's cruelty and wisdom's chatter—Out of that raving tide—is drawn betwixt Deformity of body and of mind.

Aberne. Were not our beds far off I'd ring the bell, Stand under the rough roof-timbers of the hall Beside the castle door, where all is stark Austerity, a place set out for wisdom That he will never find; I'd play a part; He would never know me after all these years But take me for some drunken country man; I'd stand and mutter there until he caught 'Hunchback and saint and fool,' and that they came Under the three last crescents of the moon, And then I'd stagger out. He'd crack his wits Day after day, yet never find the meaning.

And then he laughed to think that what scenned hard Should be so simple—a bat rose from the hazels And circled round him with its squeaky cry, The light in the tower window was put out.

THE CAT AND THE MOON

THE cat went here and there And the moon spun round like a top, And the nearest kin of the moon, The creeping cat, looked up. Black Minna For, wander The pure col Troubled his Minnaloushe Lifting his d Do you danc When two c What better Maybe the n Tired of that A new dance Minnaloushe From moonl The sacred r Has taken a Does Minna Will pass fro And that fro From crescer Minnaloushe Alone, impo And lifts to His changing

THE SAIN

Hunchback. Stand w A man that finds In thinking of h A Roman Caesar Under this hump Black Minnaloushe stared at the moon, For, wander and wail as he would, The pure cold light in the sky Troubled his animal blood. Minnaloushe runs in the grass Lifting his delicate feet. Do you dance, Minnaloushe, do you dance? When two close kindred meet. What better than call a dance? Maybe the moon may learn, Tired of that courtly fashion, A new dance turn. Minnaloushe creeps through the grass From moonlit place to place, The sacred moon overhead Has taken a new phase. Does Minnaloushe know that his pupils Will pass from change to change, And that from round to crescent. From crescent to round they range? Minnaloushe creeps through the grass Alone, important and wise, And lifts to the changing moon His changing eyes.

THE SAINT AND THE HUNCHBACK

Hunchback. Stand up and lift your hand and bless A man that finds great bitterness. In thinking of his lost renown.
A Roman Caesar is held down Under this hump.

Saint.

God tries each man

According to a different plan. I shall not cease to bless because I lay about me with the taws
That night and morning I may thrash Greek Alexander from my flesh,
Augustus Caesar, and after these
That great rogue Alcibiades.

Hunchback. To all that in your flesh have stood And blessed, I give my gratitude, Honoured by all in their degrees, But most to Alcibiades.

TWO SONGS OF A FOOL

Ī

A SPECKLED cat and a tame hare Eat at my hearthstone And sleep there; And both look up to me alone For learning and defence As I look up to Providence.

I start out of my sleep to think
Some day I may forget
Their food and drink;
Or, the house door left unshut,
The hare may run till it's found
The horn's sweet note and the tooth of the hound.

I bear a burden that might well try Men that do all by rule, And what can I That am a wand But pray to God My great respon

I slept on my the The speckled can We never though Where the brown And whether the Who knows how Stretched up on Before she had so To drum with he Had I but awake And called her rought It may be, and he That now, it may the horn's sweether the Market Stretched up on Before she had so To drum with he Had I but awake And called her rought It may be, and he That now, it may the horn's sweether thought Market Stretched up on Before the Market Stretched up on Before she had so To drum with he Had I but awaket Stretched up on Before she had so To drum with he Had I but awaket Stretched up on Before she had so To drum with he Had I but awaket Stretched up on Before she had so To drum with he Had I but awaket Stretched up on Before she had so To drum with he Had I but awaket Stretched up on Before she had so To drum with he Had I but awaket Stretched up on Before she had so To drum with he Had I but awaket Stretched up on Before she had so To drum with he Had I but awaket Stretched up on Before she had so To drum with he Had I but awaket Stretched up on Before she had so To drum with he Had I but awaket Stretched up on Before she had so To drum with he had

ANOT

THIS great In the print Has a lear Not a poor

Once he I
With a st
A string of
Of his gre

And what can I
That am a wandering-witted fool
But pray to God that He ease
My great responsibilities?

II

I slept on my three-legged stool by the fire,
The speckled cat slept on my knee;
We never thought to enquire
Where the brown hare might be,
And whether the door were shut.
Who knows how she drank the wind
Stretched up on two legs from the mat,
Before she had settled her mind
To drum with her heel and to leap?
Had I but awakened from sleep
And called her name, she had heard,
It may be, and had not stirred,
That now, it may be, has found
The horn's sweet note and the tooth of the hound.

ANOTHER SONG OF A FOOL

THIS great purple butterfly, In the prison of my hands, Has a learning in his eye Not a poor fool understands.

Once he lived a schoolmaster With a stark, denying look; A string of scholars went in fear Of his great birch and his great book. Like the clangour of a bell, Sweet and harsh, harsh and sweet, That is how he learnt so well To take the roses for his meat.

THE DOUBLE VISION OF MICHAEL ROBARTES

.

On the grey rock of Cashel the mind's eye Has called up the cold spirits that are born When the old moon is vanished from the sky And the new still hides her horn.

Under blank eyes and fingers never still The particular is pounded till it is man. When had I my own will?
O not since life began.

Constrained, arraigned, baffled, bent and unbent By these wire-jointed jaws and limbs of wood, Themselves obedient, Knowing not evil and good;

Obedient to some hidden magical breath. They do not even feel, so abstract are they, So dead beyond our death, Triumph that we obey.

Π

On the grey rock of Cashel I suddenly saw A Sphinx with woman breast and lion paw, A Buddha, hand Hand lifted up

And right betwee That, it may be For now being of That she of dans

Although I saw There can be no I saw by the mo Now at its fiftee

One lashed her Gazed upon all In triumph of ir With motionless

That other's mo Being fixed on a Yet little peace For those that lo

O little did they And little she by So she had outd Body perfection

For what but eye With the minute Mind moved yet As 'twere a spin

A Buddha, hand at rest, Hand lifted up that blest;

And right between these two a girl at play That, it may be, had danced her life away, For now being dead it seemed That she of dancing dreamed.

Although I saw it all in the mind's eye There can be nothing solider till I die; I saw by the moon's light Now at its fifteenth night.

One lashed her tail; her eyes lit by the moon Gazed upon all things known, all things unknown, In triumph of intellect With motionless head erect.

That other's moonlit eyeballs never moved, Being fixed on all things loved, all things unloved, Yet little peace he had, For those that love are sad.

O little did they care who danced between, And little she by whom her dance was seen So she had outdanced thought. Body perfection brought,

For what but eye and ear silence the mind With the minute particulars of mankind? Mind moved yet seemed to stop As 'twere a spinning-top.

In contemplation had those three so wrought Upon a moment, and so stretched it out That they, time overthrown, Were dead yet flesh and bone.

TIT

I knew that I had seen, had seen at last That girl my unremembering nights hold fast Or else my dreams that fly If I should rub an eye,

And yet in flying fling into my meat A crazy juice that makes the pulses beat As though I had been undone By Homer's Paragon

Who never gave the burning town a thought; To such a pitch of folly I am brought, Being caught between the pull Of the dark moon and the full,

The commonness of thought and images That have the frenzy of our western seas. Thereon I made my moan, And after kissed a stone,

And after that arranged it in a song Seeing that I, ignorant for so long, Had been rewarded thus In Cormac's ruined house.

MICHAEL ROBARTES AND THE DANCER

MICHAEL RC

MICHAEL F

He. Opinion is
In this altar-p
Who grips hi
That dragon
Loved the lac
The half-deac
That every m
And dug its c
Could the im

Her lover the And on the in She. You mean

She would ha

He.

But bear in n Is what your And that he

At all that is

She. May I not He. Go pluck A

For what mer With an impa Appropriate t That vigorous

And may the

MICHAEL ROBARTES AND THE DANCER

MICHAEL ROBARTES AND THE DANCER

He. Opinion is not worth a rush;
In this altar-piece the knight,
Who grips his long spear so to push
That dragon through the fading light,
Loved the lady; and it's plain
The half-dead dragon was her thought,
That every morning rose again
And dug its claws and shrieked and fought.
Could the impossible come to pass
She would have time to turn her eyes,
Her lover thought, upon the glass
And on the instant would grow wise.

She. You mean they argued.

He. Put it so;
But bear in mind your lover's wage
Is what your looking-glass can show,
And that he will turn green with rage
At all that is not pictured there.

She. May I not put myself to college?

He. Go pluck Athena by the hair;
For what mere book can grant a knowledge
With an impassioned gravity
Appropriate to that beating breast,
That vigorous thigh, that dreaming eye?
And may the devil take the rest.

She. And must no beautiful woman be Learned like a man?

He. Paul Veronese
And all his sacred company
Imagined bodies all their days
By the lagoon you love so much,
For proud, soft, ceremonious proof
That all must come to sight and touch;
While Michael Angelo's Sistine roof,
His 'Morning' and his 'Night' disclose
How sinew that has been pulled tight,
Or it may be loosened in repose,
Can rule by supernatural right
Yet be but sinew.

She. I have heard said There is great danger in the body.

He. Did God in portioning wine and bread Give man His thought or His mere body?

She. My wretched dragon is perplexed.

He. I have principles to prove me right.

It follows from this Latin text
That blest souls are not composite,
And that all beautiful women may
Live in uncomposite blessedness,
And lead us to the like—if they
Will banish every thought, unless
The lineaments that please their view
When the long looking-glass is full,
Even from the foot-sole think it too.

She. They say such different things at school.

SOLON

AND thus declared 'Last night, where On grassy mattress Within my arms g I suddenly cried or Not his, not mine

Whatever has been Howled, miau-d, l crowed,

Thereon replied: ' Crew from a bloss Three hundred year And never crew ag And would not no Chance being at or All that the brigar And this foul worl He that crowed ou Thought to have c For though love ha To find out some a Aye, though all pa For every nerve, ar With cruelties of And when at last t Maybe the bride-b For each an imagir And finds a real in Yet the world ends

SOLOMON AND THE WITCH

AND thus declared that Arab lady: 'Last night, where under the wild moon On grassy mattress I had laid me, Within my arms great Solomon, I suddenly cried out in a strange tongue Not his, not mine.'

Who understood Whatever has been said, sighed, sung, Howled, miau-d, barked, brayed, belled, yelled, cried, crowed,

Thereon replied: 'A cockerel Crew from a blossoming apple bough Three hundred years before the Fall, And never crew again till now, And would not now but that he thought, Chance being at one with Choice at last, All that the brigand apple brought And this foul world were dead at last. He that crowed out eternity Thought to have crowed it in again. For though love has a spider's eye To find out some appropriate pain-Aye, though all passion's in the glance-For every nerve, and tests a lover With cruelties of Choice and Chance; And when at last that murder's over Maybe the bride-bed brings despair, For each an imagined image brings And finds a real image there; Yet the world ends when these two things, Though several, are a single light, When oil and wick are burned in one; Therefore a blessed moon last night Gave Sheba to her Solomon.'

'Yet the world stays.'

'If that be so, Your cockerel found us in the wrong Although he thought it worth a crow. Maybe an image is too strong Or maybe is not strong enough.'

'The night has fallen; not a sound
In the forbidden sacred grove
Unless a petal hit the ground,
Nor any human sight within it
But the crushed grass where we have lain;
And the moon is wilder every minute.
O! Solomon! let us try again.'

AN IMAGE FROM A PAST LIFE

He. Never until this night have I been stirred. The elaborate star-light throws a reflection On the dark stream,
Till all the eddies gleam;
And thereupon there comes that scream From terrified, invisible beast or bird: Image of poignant recollection.

She. An image of my heart that is smitten through Out of all likelihood, or reason, And when at last, Youth's bitterness being past,

I had though Amid most I It had not le

He. Why have
What can ha
Whereon 'tw
My eyes show
What is ther
The river image.
All that to the

She. A sweethea
As though sh
From vague of
Or arrogant I
Merely to loo
Among the sa
Upon the pal

He. But why sh And start—I Imagining That any nigh An image up, Even to eyes But images to

She. Now she h. Whether she Or but to fin Now that no That her hair I do not know Of the hover

I had thought that all my days were cast Amid most lovely places; smitten as though It had not learned its lesson.

He. Why have you laid your hands upon my eyes? What can have suddenly alarmed you Whereon 'twere best My eyes should never rest? What is there but the slowly fading west, The river imaging the flashing skies, All that to this moment charmed you?

She. A sweetheart from another life floats there As though she had been forced to linger From vague distress
Or arrogant loveliness,
Merely to loosen out a tress
Among the starry eddies of her hair
Upon the paleness of a finger.

He. But why should you grow suddenly afraid And start—I at your shoulder—
Imagining
That any night could bring
An image up, or anything
Even to eyes that beauty had driven mad,
But images to make me fonder?

She. Now she has thrown her arms above her head; Whether she threw them up to flout me, Or but to find,
Now that no fingers bind,
That her hair streams upon the wind,
I do not know, that know I am afraid
Of the hovering thing night brought me.

UNDER SATURN

Do not because this day I have grown saturnine
Imagine that lost love, inseparable from my thought
Because I have no other youth, can make me pine;
For how should I forget the wisdom that you brought,
The comfort that you made? Although my wits have gone
On a fantastic ride, my horse's flanks are spurred
By childish memories of an old cross Pollexfen,
And of a Middleton, whose name you never heard,
And of a red-haired Yeats whose looks, although he died
Before my time, seem like a vivid memory.
You heard that labouring man who had served my
people. He said

Upon the open road, near to the Sligo quay— No, no, not said, but cried it out—'You have come

again,

And surely after twenty years it was time to come.' I am thinking of a child's vow sworn in vain Never to leave that valley his fathers called their home.

November 1919

EASTER, 1916

I HAVE met them at close of day Coming with vivid faces From counter or desk among grey Eighteenth-century houses. I have passed with a nod of the head Or polite meaningless words, Or have lingered awhile and said Polite meaningless words, Of a mo To plead Around Being co But live All char A terrib

And the

That wo In ignora Her nigl Until he What vo When, y She rode This man And rode This oth Was con He migh So sensit So daring This oth A drunk He had To some Yet I nu He, too, In the ca He, too,

Transform

A terribl

And thought before I had done
Of a mocking tale or a gibe
To please a companion
Around the fire at the club,
Being certain that they and I
But lived where motley is worn:
All changed, changed utterly:
A terrible beauty is born.

That woman's days were spent In ignorant good-will, Her nights in argument Until her voice grew shrill. What voice more sweet than hers When, young and beautiful, She rode to harriers? This man had kept a school And rode our winged horse; This other his helper and friend Was coming into his force; He might have won fame in the end, So sensitive his nature seemed, So daring and sweet his thought. This other man I had dreamed A drunken, vainglorious lout. He had done most bitter wrong To some who are near my heart, Yet I number him in the song; He, too, has resigned his part In the casual comedy; He, too, has been changed in his turn, Transformed utterly: A terrible beauty is born.

Hearts with one purpose alone Through summer and winter seem Enchanted to a stone To trouble the living stream. The horse that comes from the road, The rider, the birds that range From cloud to tumbling cloud, Minute by minute they change; A shadow of cloud on the stream Changes minute by minute; A horse-hoof slides on the brim, And a horse plashes within it; The long-legged moor-hens dive, And hens to moor-cocks call: Minute by minute they live: The stone's in the midst of all.

Too long a sacrifice Can make a stone of the heart. O when may it suffice? That is Heaven's part, our part To murmur name upon name, As a mother names her child When sleep at last has come On limbs that had run wild. What is it but nightfall? No, no, not night but death; Was it needless death after all? For England may keep faith For all that is done and said. We know their dream; enough To know they dreamed and are dead; And what if excess of love

Bewilde
I write
MacDon
And Co
Now an
Whereve
Are chan
A terrib

Septem

O BUT we
The sixteer
But who ca
What shou
While thos
To stir the

You say the Till Germa But who is Now Pears And is their MacDonagi

How could That have a For those n Lord Edwar Or meddle That conver Bewildered them till they died? I write it out in a verse—
MacDonagh and MacBride
And Connolly and Pearse
Now and in time to be,
Wherever green is worn,
Are changed, changed utterly:
A terrible beauty is born.

September 25, 1916

Cap (Ca)

SIXTEEN DEAD MEN

O BUT we talked at large before The sixteen men were shot, But who can talk of give and take, What should be and what not While those dead men are loitering there To stir the boiling pot?

You say that we should still the land Till Germany's overcome;
But who is there to argue that
Now Pearse is deaf and dumb?
And is their logic to outweigh
MacDonagh's bony thumb?

How could you dream they'd listen
That have an ear alone
For those new comrades they have found,
Lord Edward and Wolfe Tone,
Or meddle with our give and take
That converse bone to bone?

THE ROSE TREE

'O words are lightly spoken,'
Said Pearse to Connolly,
'Maybe a breath of politic words
Has withered our Rose Tree;
Or maybe but a wind that blows
Across the bitter sea.'

'It needs to be but watered,'
James Connolly replied,
'To make the green come out again
And spread on every side,
And shake the blossom from the bud
To be the garden's pride.'

'But where can we draw water,'
Said Pearse to Connolly,
'When all the wells are parched away?
O plain as plain can be
There's nothing but our own red blood
Can make a right Rose Tree.'

ON A POLITICAL PRISONER

SHE that but little patience knew, From childhood on, had now so much A grey gull lost its fear and flew Down to her cell and there alit, And there endured her fingers' touch And from her fingers ate its bit. Did she i Recall the Became a Her though Blind and Drinking

When Ion Under Ber The beaut With all y She seeme Like any r

Sea-borne, When first Upon some Upon the While und Cried out

THE L

They must to ke All that are differ Pull down establi Whatever their lo And murmur it w The abounding go Or calumny a son Truth flourishes w

Did she in touching that lone wing Recall the years before her mind Became a bitter, an abstract thing, Her thought some popular enmity: Blind and leader of the blind Drinking the foul ditch where they lie?

When long ago I saw her ride Under Ben Bulben to the meet, The beauty of her country-side With all youth's lonely wildness stirred, She seemed to have grown clean and sweet Like any rock-bred, sea-borne bird:

Sea-borne, or balanced on the air When first it sprang out of the nest Upon some lofty rock to stare Upon the cloudy canopy, While under its storm-beaten breast Cried out the hollows of the sea.

THE LEADERS OF THE CROWD

They must to keep their certainty accuse
All that are different of a base intent;
Pull down established honour; hawk for news
Whatever their loose phantasy invent
And murmur it with bated breath, as though
The abounding gutter had been Helicon
Or calumny a song. How can they know
Truth flourishes where the student's lamp has shone,

And there alone, that have no solitude? So the crowd come they care not what may come. They have loud music, hope every day renewed And heartier loves; that lamp is from the tomb.

TOWARDS BREAK OF DAY

Was it the double of my dream The woman that by me lay Dreamed, or did we halve a dream Under the first cold gleam of day?

I thought: 'There is a waterfall Upon Ben Bulben side
That all my childhood counted dear;
Were I to travel far and wide
I could not find a thing so dear.'
My memories had magnified
So many times childish delight.

I would have touched it like a child But knew my finger could but have touched Cold stone and water. I grew wild Even accusing Heaven because It had set down among its laws:

Nothing that we love over-much Is ponderable to our touch.

I dreamed towards break of day, The cold blown spray in my nostril. But she that beside me lay Had watched in bitterer sleep The market lo From r

For cer That cr That pl

Ι

Ran ou Though Betweer I saw m And all

The glit

Of old Welcom Nodded And eve It made I unders Now the There w But beck

For all r

Being de

But soor For aim! Beside the To watch The marvellous stag of Arthur, That lofty white stag, leap From mountain steep to steep.

DEMON AND BEAST

For certain minutes at the least
That crafty demon and that loud beast
That plague me day and night
Ran out of my sight;
Though I had long perned in the gyre,
Between my hatred and desire,
I saw my freedom won
And all laugh in the sun.

The glittering eyes in a death's head Of old Luke Wadding's portrait said Welcome, and the Ormondes all Nodded upon the wall, And even Strafford smiled as though It made him happier to know I understood his plan.

Now that the loud beast ran There was no portrait in the Gallery But beckoned to sweet company, For all men's thoughts grew clear Being dear as mine are dear.

But soon a tear-drop started up, For aimless joy had made me stop Beside the little lake To watch a white gull take A bit of bread thrown up into the air; Now gyring down and perning there He splashed where an absurd Portly green-pated bird Shook off the water from his back; Being no more demoniac A stupid happy creature Could rouse my whole nature.

Yet I am certain as can be
That every natural victory
Belongs to beast or demon,
That never yet had freeman
Right mastery of natural things,
And that mere growing old, that brings
Chilled blood, this sweetness brought;
Yet have no dearer thought
Than that I may find out a way
To make it linger half a day.

O what a sweetness strayed
Through barren Thebaid,
Or by the Mareotic sea
When that exultant Anthony
And twice a thousand more
Starved upon the shore
And withered to a bag of bones!
What had the Caesars but their thrones?

THE SECOND COMING

TURNING and turning in the widening gyre The falcon cannot hear the falconer;

Things fall ap Mere anarchy The blood-din The ceremony The best lack Are full of par

Surely some re Surely the Sec The Second C When a vast in Troubles my s A shape with had a gaze blank a Is moving its s Reel shadows of The darkness of That twenty of Were vexed to And what roug Slouches towar

A PI

Once more the Under this crace My child sleep But Gregory's Whereby the hard on the At And for an houbecause of the

Things fall apart; the centre cannot hold; Mere anarchy is loosed upon the world, The blood-dimmed tide is loosed, and everywhere The ceremony of innocence is drowned; The best lack all conviction, while the worst Are full of passionate intensity.

Surely some revelation is at hand;
Surely the Second Coming is at hand.
The Second Coming! Hardly are those words out
When a vast image out of Spiritus Mundi
Troubles my sight: somewhere in sands of the desert
A shape with lion body and the head of a man,
A gaze blank and pitiless as the sun,
Is moving its slow thighs, while all about it
Reel shadows of the indignant desert birds.
The darkness drops again; but now I know
That twenty centuries of stony sleep
Were vexed to nightmare by a rocking cradle,
And what rough beast, its hour come round at last,
Slouches towards Bethlehem to be born?

A PRAYER FOR MY DAUGHTER

ONCE more the storm is howling, and half hid Under this cradle-hood and coverlid My child sleeps on. There is no obstacle But Gregory's wood and one bare hill Whereby the haystack- and roof-levelling wind, Bred on the Atlantic, can be stayed; And for an hour I have walked and prayed Because of the great gloom that is in my mind.

I have walked and prayed for this young child an hour And heard the sea-wind scream upon the tower, And under the arches of the bridge, and scream In the elms above the flooded stream; Imagining in excited reverie That the future years had come, Dancing to a frenzied drum, Out of the murderous innocence of the sea.

May she be granted beauty and yet not Beauty to make a stranger's eye distraught, Or hers before a looking-glass, for such, Being made beautiful overmuch, Consider beauty a sufficient end, Lose natural kindness and maybe The heart-revealing intimacy That chooses right, and never find a friend.

Helen being chosen found life flat and dull And later had much trouble from a fool, While that great Queen, that rose out of the spray, Being fatherless could have her way Yet chose a bandy-legged smith for man. It's certain that fine women eat A crazy salad with their meat Whereby the Horn of Plenty is undone.

In courtesy I'd have her chiefly learned;
Hearts are not had as a gift but hearts are earned
By those that are not entirely beautiful;
Yet many, that have played the fool
For beauty's very self, has charm made wise,
And many a poor man that has roved,

Loved and From a glad

May she be That all her And have n Their magn Nor but in Nor but in O may she Rooted in o

My mind, he The sort of Prosper but Yet knows to May well be If there's not Assault and Can never to

An intellecting So let her the Have I not so Out of the research Because of her Beater that he By quiet national by for an old be so let her the beat her and be so let her the beat her beat

Considering The soul rec Loved and thought himself beloved, From a glad kindness cannot take his eyes.

May she become a flourishing hidden tree That all her thoughts may like the linnet be, And have no business but dispensing round Their magnanimities of sound, Nor but in merriment begin a chase, Nor but in merriment a quarrel. O may she live like some green laurel Rooted in one dear perpetual place.

My mind, because the minds that I have loved, The sort of beauty that I have approved, Prosper but little, has dried up of late, Yet knows that to be choked with hate May well be of all evil chances chief. If there's no hatred in a mind Assault and battery of the wind Can never tear the linnet from the leaf.

An intellectual hatred is the worst,
So let her think opinions are accursed.
Have I not seen the loveliest woman born
Out of the mouth of Plenty's horn,
Because of her opinionated mind
Barter that horn and every good
By quiet natures understood
For an old bellows full of angry wind?

Considering that, all hatred driven hence, The soul recovers radical innocence And learns at last that it is self-delighting, Self-appeasing, self-affrighting, And that its own sweet will is Heaven's will; She can, though every face should scowl And every windy quarter howl Or every bellows burst, be happy still.

And may her bridegroom bring her to a house Where all's accustomed, ceremonious; For arrogance and hatred are the wares Peddled in the thoroughfares. How but in custom and in ceremony Are innocence and beauty born? Ceremony's a name for the rich horn, And custom for the spreading laurel tree.

June 1919

A MEDITATION IN TIME OF WAR

FOR one throb of the artery, While on that old grey stone I sat Under the old wind-broken tree, I knew that One is animate, Mankind inanimate phantasy.

TO BE CARVED ON A STONE AT THOOR BALLYLEE

I, THE poet William Yeats, With old mill boards and sea-green slates, And smithy work from the Gort forge, Restored this tower for my wife George; And may these characters remain When all is ruin once again.



THE TOWER

THAT is not In one another Those dy The salmon Fish, flesh, Whatever in Caught in Monument

An aged man A tattered of Soul clap it For every to Nor is ther Monuments

And therefore To the holy

O sages star

As in the go Come from And be the

THE TOWER

SAILING TO BYZANTIUM

Ι

That is no country for old men. The young In one another's arms, birds in the trees,
—Those dying generations—at their song,
The salmon-falls, the mackerel-crowded seas,
Fish, flesh, or fowl, commend all summer long
Whatever is begotten, born, and dies.
Caught in that sensual music all neglect
Monuments of unageing intellect.

Π

An aged man is but a paltry thing, A tattered coat upon a stick, unless Soul clap its hands and sing, and louder sing For every tatter in its mortal dress, Nor is there singing school but studying Monuments of its own magnificence; And therefore I have sailed the seas and come To the holy city of Byzantium.

III

O sages standing in God's holy fire As in the gold mosaic of a wall, Come from the holy fire, perne in a gyre, And be the singing-masters of my soul. Consume my heart away; sick with desire And fastened to a dying animal It knows not what it is; and gather me Into the artifice of eternity.

IV

Once out of nature I shall never take
My bodily form from any natural thing,
But such a form as Grecian goldsmiths make
Of hammered gold and gold enamelling
To keep a drowsy Emperor awake;
Or set upon a golden bough to sing
To lords and ladies of Byzantium
Of what is past, or passing, or to come.

THE TOWER

1

WHAT shall I do with this absurdity— O heart, O troubled heart—this caricature, Decrepit age that has been tied to me As to a dog's tail?

Never had I more
Excited, passionate, fantastical
Imagination, nor an ear and eye
That more expected the impossible—
No, not in boyhood when with rod and fly,
Or the humbler worm, I climbed Ben Bulben's back
And had the livelong summer day to spend.
It seems that I must bid the Muse go pack,
Choose Plato and Plotinus for a friend

Until imagir Can be conte In abstract to A sort of bat

I pace upon On the foun Tree, like a send im Under the da Images and r. From ruin or For I would

Beyond that:
When every:
Lit up the da
A serving-ma
That most re
Ran and with
Clipped an it
And brought

Some few ren A peasant gir Who'd lived And praised t And had the Remembering Farmers jostle So great a glo



Until imagination, ear and eye, Can be content with argument and deal In abstract things; or be derided by A sort of battered kettle at the heel.

II

I pace upon the battlements and stare
On the foundations of a house, or where
Tree, like a sooty finger, starts from the earth;
And send imagination forth
Under the day's declining beam, and call
Images and memories
From ruin or from ancient trees,
For I would ask a question of them all.

Beyond that ridge lived Mrs. French, and once When every silver candlestick or sconce Lit up the dark mahogany and the wine, A serving-man, that could divine That most respected lady's every wish, Ran and with the garden shears Clipped an insolent farmer's ears And brought them in a little covered dish.

Some few remembered still when I was young A peasant girl commended by a song, Who'd lived somewhere upon that rocky place, And praised the colour of her face, And had the greater joy in praising her, Remembering that, if walked she there, Farmers jostled at the fair So great a glory did the song confer.

And certain men, being maddened by those rhymes, Or else by toasting her a score of times, Rose from the table and declared it right To test their fancy by their sight; But they mistook the brightness of the moon For the prosaic light of day—Music had driven their wits astray—And one was drowned in the great bog of Cloone.

Strange, but the man who made the song was blind; Yet, now I have considered it, I find That nothing strange; the tragedy began With Homer that was a blind man, And Helen has all living hearts betrayed.

O may the moon and sunlight seem One inextricable beam,
For if I triumph I must make men mad.

And I myself created Hanrahan
And drove him drunk or sober through the dawn
From somewhere in the neighbouring cottages.
Caught by an old man's juggleries
He stumbled, tumbled, fumbled to and fro
And had but broken knees for hire
And horrible splendour of desire;
I thought it all out twenty years ago:

Good fellows shuffled cards in an old bawn; And when that ancient ruffian's turn was on He so bewitched the cards under his thumb That all but the one card became A pack of hounds and not a pack of cards, And that he changed into a hare. Hanrahan ros And followed

O towards I I must recall Nor music no Could, he was A figure that There's not a When he finit An ancient ba

Rough men-a
Or shod in ire
And certain n
Whose images
Come with lo
To break upon
While their g

As I would que Come old, ned And bring beat The red man of Through God-Gifted with so The man drow When mockin

Did all old me Who trod upo Whether in pu As I do now as Hanrahan rose in frenzy there And followed up those baying creatures towards—

O towards I have forgotten what—enough! I must recall a man that neither love Nor music nor an enemy's clipped ear Could, he was so harried, cheer; A figure that has grown so fabulous There's not a neighbour left to say When he finished his dog's day: An ancient bankrupt master of this house.

Before that ruin came, for centuries,
Rough men-at-arms, cross-gartered to the knees
Or shod in iron, climbed the narrow stairs,
And certain men-at-arms there were
Whose images, in the Great Memory stored,
Come with loud cry and panting breast
To break upon a sleeper's rest
While their great wooden dice beat on the board.

As I would question all, come all who can; Come old, necessitous, half-mounted man; And bring beauty's blind rambling celebrant; The red man the juggler sent Through God-forsaken meadows; Mrs. French, Gifted with so fine an ear; The man drowned in a bog's mire, When mocking muses chose the country wench.

Did all old men and women, rich and poor, Who trod upon these rocks or passed this door, Whether in public or in secret rage As I do now against old age? But I have found an answer in those eyes That are impatient to be gone; Go therefore; but leave Hanrahan, For I need all his mighty memories.

Old lecher with a love on every wind, Bring up out of that deep considering mind All that you have discovered in the grave, For it is certain that you have Reckoned up every unforeknown, unseeing Plunge, lured by a softening eye, Or by a touch or a sigh, Into the labyrinth of another's being;

Does the imagination dwell the most Upon a woman won or woman lost? If on the lost, admit you turned aside From a great labyrinth out of pride, Cowardice, some silly over-subtle thought Or anything called conscience once; And that if memory recur, the sun's Under eclipse and the day blotted out.

 \mathbf{III}

It is time that I wrote my will; I choose upstanding men
That climb the streams until
The fountain leap, and at dawn
Drop their cast at the side
Of dripping stone; I declare
They shall inherit my pride,
The pride of people that were

Neither Nor to t The peo That gav Pride, li When th Or that Or that When al Or that When th Upon a f Float out Last reac And ther And I de I mock P And cry: Death an Till man Made loc Out of h Aye, sun And furtl That, bei Dream an Transluna I have pre With lear And the p Poet's ima

And mem

Bound r

Bound neither to Cause nor to State, Neither to slaves that were spat on, Nor to the tyrants that spat, The people of Burke and of Grattan That gave, though free to refuse-Pride, like that of the morn, When the headlong light is loose, Or that of the fabulous horn, Or that of the sudden shower When all streams are dry, Or that of the hour When the swan must fix his eye Upon a fading gleam, Float out upon a long Last reach of glittering stream And there sing his last song. And I declare my faith: I mock Plotinus' thought And cry in Plato's teeth, Death and life were not Till man made up the whole, Made lock, stock and barrel Out of his bitter soul, Aye, sun and moon and star, all, And further add to that That, being dead, we rise, Dream and so create Translunar Paradise. I have prepared my peace With learned Italian things And the proud stones of Greece, Poet's imaginings And memories of love.

Memories of the words of women, All those things whereof Man makes a superhuman Mirror-resembling dream.

As at the loophole there
The daws chatter and scream,
And drop twigs layer upon layer.
When they have mounted up,
The mother bird will rest
On their hollow top,
And so warm her wild nest.

I leave both faith and pride To young upstanding men Climbing the mountain side, That under bursting dawn They may drop a fly; Being of that metal made Till it was broken by This sedentary trade.

Now shall I make my soul,
Compelling it to study
In a learned school
Till the wreck of body,
Slow decay of blood,
Testy delirium
Or dull decrepitude,
Or what worse evil come—
The death of friends, or death
Of every brilliant eye
That made a catch in the breath—

Seem b When t Or a bi Among

MEDITA

SURELY among Amid the rust Life overflows And rains dow And mounts in As though to a And never stood Or servile shap

Mere dreams, in Had he not for That out of lift The abounding As if some man Out of the obstand not a four.

Shadows the in

Some violent be Called architect Bitter and viole The sweetness to The gentleness But when the n

Seem but the clouds of the sky When the horizon fades; Or a bird's sleepy cry Among the deepening shades. 1926

MEDITATIONS IN TIME OF CIVIL WAR

Ι

Ancestral Houses

SURELY among a rich man's flowering lawns, Amid the rustle of his planted hills, Life overflows without ambitious pains; And rains down life until the basin spills, And mounts more dizzy high the more it rains As though to choose whatever shape it wills And never stoop to a mechanical Or servile shape, at others' beck and call.

Mere dreams, mere dreams! Yet Homer had not sung Had he not found it certain beyond dreams That out of life's own self-delight had sprung The abounding glittering jet; though now it seems As if some marvellous empty sea-shell flung Out of the obscure dark of the rich streams, And not a fountain, were the symbol which Shadows the inherited glory of the rich.

Some violent bitter man, some powerful man Called architect and artist in, that they, Bitter and violent men, might rear in stone The sweetness that all longed for night and day, The gentleness none there had ever known; But when the master's buried mice can play,

And maybe the great-grandson of that house, For all its bronze and marble, 's but a mouse.

O what if gardens where the peacock strays With delicate feet upon old terraces, Or else all Juno from an urn displays Before the indifferent garden deities; O what if levelled lawns and gravelled ways Where slippered Contemplation finds his ease And Childhood a delight for every sense, But take our greatness with our violence?

What if the glory of escutcheoned doors, And buildings that a haughtier age designed, The pacing to and fro on polished floors Amid great chambers and long galleries, lined With famous portraits of our ancestors; What if those things the greatest of mankind Consider most to magnify, or to bless, But take our greatness with our bitterness?

II

My House

An ancient bridge, and a more ancient tower, A farmhouse that is sheltered by its wall, An acre of stony ground, Where the symbolic rose can break in flower, Old ragged elms, old thorns innumerable, The sound of the rain or sound Of every wind that blows; The stilted water-hen Crossing stream again Scared by the splashing of a dozen cows;

A winding
A grey ston
A candle an
Il Penseroso's
In some lik
How the da
Imagined ex
Benighted t
From marke
Have seen I

Two men h
Gathered a :
In this turn
Where thro
His dwindli
Forgetting a
And I, that
My bodily h
To exalt a lo
Befitting em

Two hea Where S By pen a That it i My days A bit of Covers it

Chaucer

A winding stair, a chamber arched with stone, A grey stone fireplace with an open hearth, A candle and written page.

Il Penseroso's Platonist toiled on
In some like chamber, shadowing forth
How the daemonic rage
Imagined everything.
Benighted travellers
From markets and from fairs
Have seen his midnight candle glimmering.

Two men have founded here. A man-at-arms Gathered a score of horse and spent his days In this tumultuous spot,
Where through long wars and sudden night alarms His dwindling score and he seemed castaways Forgetting and forgot;
And I, that after me
My bodily heirs may find,
To exalt a lonely mind,
Befitting emblems of adversity.

III

My Table

Two heavy trestles, and a board Where Sato's gift, a changeless sword, By pen and paper lies, That it may moralise My days out of their aimlessness. A bit of an embroidered dress Covers its wooden sheath. Chaucer had not drawn breath

When it was forged. In Sato's house, Curved like new moon, moon-luminous. It lay five hundred years. Yet if no change appears No moon; only an aching heart Conceives a changeless work of art. Our learned men have urged That when and where 'twas forged A marvellous accomplishment, In painting or in pottery, went From father unto son And through the centuries ran And seemed unchanging like the sword. Soul's beauty being most adored, Men and their business took The soul's unchanging look; For the most rich inheritor, Knowing that none could pass Heaven's door That loved inferior art, Had such an aching heart That he, although a country's talk For silken clothes and stately walk, Had waking wits; it seemed Juno's peacock screamed.

IV

My Descendants

Having inherited a vigorous mind From my old fathers, I must nourish dreams And leave a woman and a man behind As vigorous of mind, and yet it seems Life scarce can cast a fragrance on the wind, Scarce sprea But the tor And there's

And what is Through no Through to May this last Become a romay build Her desolat

The Primur Has made to And I, that Seeing that For an old roand decked And know with these stones.

An aff A hea Comes As the

The fi

A brow Half o Scarce spread a glory to the morning beams, But the torn petals strew the garden plot; And there's but common greenness after that.

And what if my descendants lose the flower Through natural declension of the soul, Through too much business with the passing hour, Through too much play, or marriage with a fool? May this laborious stair and this stark tower Become a roofless ruin that the owl May build in the cracked masonry and cry Her desolation to the desolate sky.

The Primum Mobile that fashioned us
Has made the very owls in circles move;
And I, that count myself most prosperous,
Seeing that love and friendship are enough,
For an old neighbour's friendship chose the house
And decked and altered it for a girl's love,
And know whatever flourish and decline
These stones remain their monument and mine.

V

The Road at My Door

An affable Irregular, A heavily-built Falstaffian man, Comes cracking jokes of civil war As though to die by gunshot were The finest play under the sun.

A brown Lieutenant and his men, Half dressed in national uniform, Stand at my door, and I complain Of the foul weather, hail and rain, A pear tree broken by the storm.

I count those feathered balls of soot The moor-hen guides upon the stream, To silence the envy in my thought; And turn towards my chamber, caught In the cold snows of a dream.

VI

The Stare's Nest by My Window

The bees build in the crevices
Of loosening masonry, and there
The mother birds bring grubs and flies.
My wall is loosening; honey-bees,
Come build in the empty house of the stare.

We are closed in, and the key is turned On our uncertainty; somewhere A man is killed, or a house burned, Yet no clear fact to be discerned: Come build in the empty house of the stare.

A barricade of stone or of wood; Some fourteen days of civil war; Last night they trundled down the road That dead young soldier in his blood: Come build in the empty house of the stare.

We had fed the heart on fantasies, The heart's grown brutal from the fare; More s Than is Come l

> I see P Ful

I climb to the A mist that is Valley, river, That seems us A glittering so And those wis sweep by.

Frenzies bewil Monstrous far 'Vengeance up

'Vengeance fo in lace, The rage-drive Trooper belab Plunges towar wide

For the embra Because of all For vengeance

Their legs long eyes, Magical unicon The ladies clos Remembered o More substance in our enmities Than in our love; O honey-bees, Come build in the empty house of the stare.

VII

I see Phantoms of Hatred and of the Heart's Fullness and of the Coming Emptiness

I climb to the tower-top and lean upon broken stone, A mist that is like blown snow is sweeping over all, Valley, river, and elms, under the light of a moon That seems unlike itself, that seems unchangeable, A glittering sword out of the east. A puff of wind And those white glimmering fragments of the mist sweep by.

Frenzies bewilder, reveries perturb the mind; Monstrous familiar images swim to the mind's eye.

'Vengeance upon the murderers,' the cry goes up, 'Vengeance for Jacques Molay.' In cloud-pale rags, or in lace,

The rage-driven, rage-tormented, and rage-hungry troop, Trooper belabouring trooper, biting at arm or at face, Plunges towards nothing, arms and fingers spreading wide

For the embrace of nothing; and I, my wits astray Because of all that senseless tumult, all but cried For vengeance on the murderers of Jacques Molay.

Their legs long, delicate and slender, aquamarine their eyes,

Magical unicorns bear ladies on their backs. The ladies close their musing eyes. No prophecies, Remembered out of Babylonian almanacs, Have closed the ladies' eyes, their minds are but a pool Where even longing drowns under its own excess; Nothing but stillness can remain when hearts are full Of their own sweetness, bodies of their loveliness.

The cloud-pale unicorns, the eyes of aquamarine, The quivering half-closed eyelids, the rags of cloud or of lace,

Or eyes that rage has brightened, arms it has made lean, Give place to an indifferent multitude, give place To brazen hawks. Nor self-delighting reverie, Nor hate of what's to come, nor pity for what's gone, Nothing but grip of claw, and the eye's complacency, The innumerable clanging wings that have put out the moon.

I turn away and shut the door, and on the stair Wonder how many times I could have proved my worth

In something that all others understand or share; But O! ambitious heart, had such a proof drawn forth A company of friends, a conscience set at ease, It had but made us pine the more. The abstract joy, The half-read wisdom of daemonic images, Suffice the ageing man as once the growing boy.

1923

NINETEEN HUNDRED AND NINETEEN

Ι

Many ingenious lovely things are gone That seemed sheer miracle to the multitude, Protected from That pitches co Amid the orna An ancient ima And gone are F And all the gol

We too had mad A law indiffere To bribe or thr Melt down, as Public opinion We thought it O what fine the That the worst

All teeth were of And a great arm What matter the Into a ploughsh Thought that us The trumpeters And yet it lack The guardsmen'

Now days are di Rides upon sleet Can leave the m To crawl in her The night can so We pieced our t And planned to Who are but we Protected from the circle of the moon
That pitches common things about. There stood
Amid the ornamental bronze and stone
An ancient image made of olive wood—
And gone are Phidias' famous ivories
And all the golden grasshoppers and bees.

We too had many pretty toys when young; A law indifferent to blame or praise, To bribe or threat; habits that made old wrong Melt down, as it were wax in the sun's rays; Public opinion ripening for so long We thought it would outlive all future days. O what fine thought we had because we thought That the worst rogues and rascals had died out.

All teeth were drawn, all ancient tricks unlearned, And a great army but a showy thing; What matter that no cannon had been turned Into a ploughshare? Parliament and king Thought that unless a little powder burned The trumpeters might burst with trumpeting And yet it lack all glory; and perchance The guardsmen's drowsy chargers would not prance.

Now days are dragon-ridden, the nightmare Rides upon sleep: a drunken soldiery Can leave the mother, murdered at her door, To crawl in her own blood, and go scot-free; The night can sweat with terror as before We pieced our thoughts into philosophy, And planned to bring the world under a rule, Who are but weasels fighting in a hole.

He who can read the signs nor sink unmanned Into the half-deceit of some intoxicant From shallow wits; who knows no work can stand, Whether health, wealth or peace of mind were spent On master-work of intellect or hand, No honour leave its mighty monument, Has but one comfort left: all triumph would But break upon his ghostly solitude.

But is there any comfort to be found? Man is in love and loves what vanishes, What more is there to say? That country round None dared admit, if such a thought were his, Incendiary or bigot could be found To burn that stump on the Acropolis, Or break in bits the famous ivories Or traffic in the grasshoppers or bees.

When Loie Fuller's Chinese dancers enwound A shining web, a floating ribbon of cloth, It seemed that a dragon of air Had fallen among dancers, had whirled them round Or hurried them off on its own furious path; So the Platonic Year Whirls out new right and wrong, Whirls in the old instead; All men are dancers and their tread Goes to the barbarous clangour of a gong.

III

Some moralist or mythological poet Compares the solitary soul to a swan; I am satisfied w

Satisfied if a tro Before that brie An image of its The wings half The breast thru Whether to play Those winds the

A man in his o Is lost amid the In art or politic Some Platonist Where we shoul The ancient hab And that if our But vanish with That were a luc For triumph can

The swan has le That image can To end all thing What my labori The half-imagin O but we dream Whatever misch To afflict manki That winds of w Learn that we w

We, who seven Talked of honou I am satisfied with that,
Satisfied if a troubled mirror show it,
Before that brief gleam of its life be gone,
An image of its state;
The wings half spread for flight,
The breast thrust out in pride
Whether to play, or to ride
Those winds that clamour of approaching night.

A man in his own secret meditation
Is lost amid the labyrinth that he has made
In art or politics;
Some Platonist affirms that in the station
Where we should cast off body and trade
The ancient habit sticks,
And that if our works could
But vanish with our breath
That were a lucky death,
For triumph can but mar our solitude.

The swan has leaped into the desolate heaven:
That image can bring wildness, bring a rage
To end all things, to end
What my laborious life imagined, even
The half-imagined, the half-written page;
O but we dreamed to mend
Whatever mischief seemed
To afflict mankind, but now
That winds of winter blow
Learn that we were crack-pated when we dreamed.

IV

We, who seven years ago Talked of honour and of truth, Shriek with pleasure if we show The weasel's twist, the weasel's tooth.

Come let us mock at the great That had such burdens on the mind And toiled so hard and late To leave some monument behind, Nor thought of the levelling wind.

Come let us mock at the wise: With all those calendars whereon They fixed old aching eyes, They never saw how seasons run, And now but gape at the sun.

Come let us mock at the good That fancied goodness might be gay, And sick of solitude Might proclaim a holiday: Wind shrieked—and where are they?

Mock mockers after that That would not lift a hand maybe To help good, wise or great To bar that foul storm out, for we Traffic in mockery.

VI

Violence upon the roads: violence of horses; Some few have handsome riders, are garlanded On delicate sensitive ear or tossing mane, But wearied running round and round in their courses

All break and v Herodias' daugl A sudden blast Thunder of feet Their purpose in And should som All turn with an According to the But now wind d There lurches pa Under the shado That insolent fie To whom the lo Bronzed peacock

1919

Through And throu And when Declare th And after Because th Nor know Is but its !

> Mu Beir But It sp

All break and vanish, and evil gathers head:
Herodias' daughters have returned again,
A sudden blast of dusty wind and after
Thunder of feet, tumult of images,
Their purpose in the labyrinth of the wind;
And should some crazy hand dare touch a daughter
All turn with amorous cries, or angry cries,
According to the wind, for all are blind.
But now wind drops, dust settles; thereupon
There lurches past, his great eyes without thought
Under the shadow of stupid straw-pale locks,
That insolent fiend Robert Artisson
To whom the love-lorn Lady Kyteler brought
Bronzed peacock feathers, red combs of her cocks.

THE WHEEL

Through winter-time we call on spring, And through the spring on summer call, And when abounding hedges ring Declare that winter's best of all; And after that there's nothing good Because the spring-time has not come—Nor know that what disturbs our blood Is but its longing for the tomb.

YOUTH AND AGE

Much did I rage when young, Being by the world oppressed, But now with flattering tongue It speeds the parting guest.

1924

THE NEW FACES

If you, that have grown old, were the first dead, Neither catalpa tree nor scented lime Should hear my living feet, nor would I tread Where we wrought that shall break the teeth of Time. Let the new faces play what tricks they will In the old rooms; night can outbalance day, Our shadows rove the garden gravel still, The living seem more shadowy than they.

A PRAYER FOR MY SON

BID a strong ghost stand at the head That my Michael may sleep sound, Nor cry, nor turn in the bed Till his morning meal come round; And may departing twilight keep All dread afar till morning's back, That his mother may not lack Her fill of sleep.

Bid the ghost have sword in fist:
Some there are, for I avow
Such devilish things exist,
Who have planned his murder, for they know
Of some most haughty deed or thought
That waits upon his future days,
And would through hatred of the bays
Bring that to nought.

Though Yo From nothing The morning You have la To tell You Wailing up All of that Of flesh and

And when to The servant A woman as Unless the I Hurried through Protecting, With human

TW

I SAW a Where I And tea And lay And bea And the

Another Another

Of Mag

As thou

Though You can fashion everything From nothing every day, and teach The morning stars to sing, You have lacked articulate speech To tell Your simplest want, and known, Wailing upon a woman's knee, All of that worst ignominy Of flesh and bone;

And when through all the town there ran The servants of Your enemy, A woman and a man, Unless the Holy Writings lie, Hurried through the smooth and rough And through the fertile and waste, Protecting, till the danger past, With human love.

TWO SONGS FROM A PLAY

Ι

I saw a staring virgin stand Where holy Dionysus died, And tear the heart out of his side, And lay the heart upon her hand And bear that beating heart away; And then did all the Muses sing Of Magnus Annus at the spring, As though God's death were but a play.

Another Troy must rise and set, Another lineage feed the crow, Another Argo's painted prow Drive to a flashier bauble yet. The Roman Empire stood appalled: It dropped the reins of peace and war When that fierce virgin and her Star Out of the fabulous darkness called.

H

In pity for man's darkening thought He walked that room and issued thence In Galilean turbulence; The Babylonian starlight brought A fabulous, formless darkness in; Odour of blood when Christ was slain Made all Platonic tolerance vain And vain all Doric discipline.

Everything that man esteems
Endures a moment or a day.
Love's pleasure drives his love away,
The painter's brush consumes his dreams;
The herald's cry, the soldier's tread
Exhaust his glory and his might:
Whatever flames upon the night
Man's own resinous heart has fed.

FRAGMENTS

1

LOCKE sank into a swoon; The Garden died; God took the spinning-jenny Out of his side.

av-lenny

A SUDDEN
Above the
By the dark
He holds h

T

How can to The feather And how co But feel the

A shudder The broken And Agame

So mastered Did she put Before the i

1923

Where got I that truth? Out of a medium's mouth, Out of nothing it came, Out of the forest loam, Out of dark night where lay The crowns of Nineveh.

LEDA AND THE SWAN

A SUDDEN blow: the great wings beating still Above the staggering girl, her thighs caressed By the dark webs, her nape caught in his bill, He holds her helpless breast upon his breast.

How can those terrified vague fingers push The feathered glory from her loosening thighs? And how can body, laid in that white rush, But feel the strange heart beating where it lies?

A shudder in the loins engenders there The broken wall, the burning roof and tower And Agamemnon dead.

Being so caught up, So mastered by the brute blood of the air, Did she put on his knowledge with his power Before the indifferent beak could let her drop?

1923

ON A PICTURE OF A BLACK CENTAUR BY EDMUND DULAC

Your hooves have stamped at the black margin of the wood,

Even where horrible green parrots call and swing. My works are all stamped down into the sultry mud. I knew that horse-play, knew it for a murderous thing. What wholesome sun has ripened is wholesome food to eat,

And that alone; yet I, being driven half insane Because of some green wing, gathered old mummy wheat

In the mad abstract dark and ground it grain by grain And after baked it slowly in an oven; but now I bring full-flavoured wine out of a barrel found Where seven Ephesian topers slept and never knew When Alexander's empire passed, they slept so sound. Stretch out your limbs and sleep a long Saturnian sleep; I have loved you better than my soul for all my words, And there is none so fit to keep a watch and keep Unwearied eyes upon those horrible green birds.

AMONG SCHOOL CHILDREN

T

I WALK through the long schoolroom questioning; A kind old nun in a white hood replies; The children learn to cipher and to sing, To study reading-books and history, To cut and sew, be neat in everything

In the be In mome A sixty-y

I dream of Above a same Told of a That chart Told, and Into a sph Or else, the Into the years.

And think I look upo And wond For even of Something And had there She stands

Her prese Did Quat Hollow of And took And I tho Had prett Better to s There is a In the best modern way—the children's eyes In momentary wonder stare upon A sixty-year-old smiling public man.

TT

I dream of a Ledaean body, bent Above a sinking fire, a tale that she Told of a harsh reproof, or trivial event That changed some childish day to tragedy— Told, and it seemed that our two natures blent Into a sphere from youthful sympathy, Or else, to alter Plato's parable, Into the yolk and white of the one shell.

III

And thinking of that fit of grief or rage I look upon one child or t'other there And wonder if she stood so at that age—For even daughters of the swan can share Something of every paddler's heritage—And had that colour upon cheek or hair, And thereupon my heart is driven wild: She stands before me as a living child.

IV

Her present image floats into the mind—Did Quattrocento finger fashion it
Hollow of cheek as though it drank the wind
And took a mess of shadows for its meat?
And I though never of Ledaean kind
Had pretty plumage once—enough of that,
Better to smile on all that smile, and show
There is a comfortable kind of old scarecrow.

What youthful mother, a shape upon her lap Honey of generation had betrayed, And that must sleep, shrick, struggle to escape As recollection or the drug decide, Would think her son, did she but see that shape With sixty or more winters on its head, A compensation for the pang of his birth, Or the uncertainty of his setting forth?

VI

Plato thought nature but a spume that plays Upon a ghostly paradigm of things; Solider Aristotle played the taws Upon the bottom of a king of kings; World-famous golden-thighed Pythagoras Fingered upon a fiddle-stick or strings What a star sang and careless Muses heard: Old clothes upon old sticks to scare a bird.

VII

Both nuns and mothers worship images,
But those the candles light are not as those
That animate a mother's reveries,
But keep a marble or a bronze repose.
And yet they too break hearts—O Presences
That passion, piety or affection knows,
And that all heavenly glory symbolise—
O self-born mockers of man's enterprise;

VIII

Labour is blossoming or dancing where The body is not bruised to pleasure soul, Nor beau Nor blea O chestn Are your O body s How can

Chorus. Come
The wine-d
The nightin
If daylight of
Unvisited by
Immortal la
Dizzy with
Semele's lad

And yonder The self-sow Athenian int Even the gre Miracle-bred Nor accident Shall wither The great gr

Who comes Where golde Where the G And beautyNor beauty born out of its own despair, Nor blear-eyed wisdom out of midnight oil. O chestnut tree, great rooted blossomer, Are you the leaf, the blossom or the bole? O body swayed to music, O brightening glance, How can we know the dancer from the dance?

COLONUS' PRAISE (From 'Oedipus at Colonus')

Chorus. Come praise Colonus' horses, and come praise The wine-dark of the wood's intricacies, The nightingale that deafens daylight there, If daylight ever visit where, Unvisited by tempest or by sun, Immortal ladies tread the ground Dizzy with harmonious sound, Semele's lad a gay companion.

And yonder in the gymnasts' garden thrives The self-sown, self-begotten shape that gives Athenian intellect its mastery, Even the grey-leaved olive-tree Miracle-bred out of the living stone; Nor accident of peace nor war Shall wither that old marvel, for The great grey-eyed Athena stares thereon.

Who comes into this country, and has come Where golden crocus and narcissus bloom, Where the Great Mother, mourning for her daughter And beauty-drunken by the water Glittering among grey-leaved olive-trees, Has plucked a flower and sung her loss; Who finds abounding Cephisus Has found the loveliest spectacle there is.

Because this country has a pious mind And so remembers that when all mankind But trod the road, or splashed about the shore, Poseidon gave it bit and oar, Every Colonus lad or lass discourses Of that oar and of that bit; Summer and winter, day and night, Of horses and horses of the sea, white horses.

WISDOM

THE true faith discovered was When painted panel, statuary, Glass-mosaic, window-glass, Amended what was told awry By some peasant gospeller; Swept the sawdust from the floor Of that working-carpenter. Miracle had its playtime where In damask clothed and on a seat Chryselephantine, cedar-boarded, His majestic Mother sat Stitching at a purple hoarded That He might be nobly breeched In starry towers of Babylon Noah's freshet never reached. King Abundance got Him on

Inn Tha Cor Dro

TH

From cr From gr When the Has work Are but

WHEN :

And I m Coagulat Transpar I think t A faithfu

When cr

OWEN

A STRANGE this come unsor Upon the Norr Should find no worn out.

It could not b mad.

Innocence; and Wisdom He.
That cognomen sounded best
Considering what wild infancy
Drove horror from His Mother's breast.

THE FOOL BY THE ROADSIDE

WHEN all works that have
From cradle run to grave
From grave to cradle run instead;
When thoughts that a fool
Has wound upon a spool
Are but loose thread, are but loose thread;

When cradle and spool are past And I mere shade at last Coagulate of stuff Transparent like the wind, I think that I may find A faithful love, a faithful love.

OWEN AHERNE AND HIS DANCERS

T

A STRANGE thing surely that my Heart, when love had come unsought

Upon the Norman upland or in that poplar shade, Should find no burden but itself and yet should be worn out.

It could not bear that burden and therefore it went mad.

The south wind brought it longing, and the east wind despair,

The west wind made it pitiful, and the north wind afraid.

It feared to give its love a hurt with all the tempest there;

It feared the hurt that she could give and therefore it went mad.

I can exchange opinion with any neighbouring mind, I have as healthy flesh and blood as any rhymer's had, But O! my Heart could bear no more when the upland caught the wind;

I ran, I ran, from my love's side because my Heart went mad.

\mathbf{II}

The Heart behind its rib laughed out. 'You have called me mad,' it said.

'Because I made you turn away and run from that young child;

How could she mate with fifty years that was so wildly bred?

Let the cage bird and the cage bird mate and the wild bird mate in the wild.'

'You but imagine lies all day, O murderer,' I replied. 'And all those lies have but one end, poor wretches to betray;

I did not find in any cage the woman at my side.

O but her heart would break to learn my thoughts are far away.'

'Speak all your your mind Now that your she mistak Her childish g

years?
O let her choos sake.'

In beau She wa And on Until I A heart

THOUG

But sin And for I have a And no For eve

That tr

She smi And lef Maundo Emptier Than th

When t

'Speak all your mind,' my Heart sang out, 'speak all your mind; who cares,

Now that your tongue cannot persuade the child till she mistake

Her childish gratitude for love and match your fifty years?

O let her choose a young man now and all for his wild sake.'

A MAN YOUNG AND OLD

Ι

First Love

Though nurtured like the sailing moon In beauty's murderous brood, She walked awhile and blushed awhile And on my pathway stood Until I thought her body bore A heart of flesh and blood.

But since I laid a hand thereon And found a heart of stone I have attempted many things And not a thing is done, For every hand is lunatic That travels on the moon.

She smiled and that transfigured me And left me but a lout, Maundering here, and maundering there, Emptier of thought Than the heavenly circuit of its stars When the moon sails out.

Human Dignity

Like the moon her kindness is, If kindness I may call What has no comprehension in't, But is the same for all As though my sorrow were a scene Upon a painted wall.

So like a bit of stone I lie Under a broken tree. I could recover if I shrieked My heart's agony To passing bird, but I am dumb From human dignity.

Ш

The Mermaid

A mermaid found a swimming lad, Picked him for her own, Pressed her body to his body, Laughed; and plunging down Forgot in cruel happiness That even lovers drown.

IV

The Death of the Hare

I have pointed out the yelling pack, The hare leap to the wood, And when I pass a compliment Rejoice as lover should At the At the

Then s By her And I And at Am ser At the

When Hardly Imagin That as And hi Octobe But for And fo

And m

A craz

We sho Being the And bo Whereo To this And the At the drooping of an eye, At the mantling of the blood.

Then suddenly my heart is wrung By her distracted air And I remember wildness lost And after, swept from there, Am set down standing in the wood At the death of the hare.

V

The Empty Cup

A crazy man that found a cup, When all but dead of thirst, Hardly dared to wet his mouth Imagining, moon-accursed, That another mouthful And his beating heart would burst. October last I found it too But found it dry as bone, And for that reason am I crazed And my sleep is gone.

VI

His Memories

We should be hidden from their eyes, Being but holy shows And bodies broken like a thorn Whereon the bleak north blows, To think of buried Hector And that none living knows. The women take so little stock In what I do or say They'd sooner leave their cosseting To hear a jackass bray; My arms are like the twisted thorn And yet there beauty lay;

The first of all the tribe lay there And did such pleasure take—
She who had brought great Hector down And put all Troy to wreck—
That she cried into this ear,
'Strike me if I shriek.'

VII

The Friends of his Youth

Laughter not time destroyed my voice And put that crack in it,
And when the moon's pot-bellied
I get a laughing fit,
For that old Madge comes down the lane,
A stone upon her breast,
And a cloak wrapped about the stone,
And she can get no rest
With singing hush and hush-a-bye;
She that has been wild
And barren as a breaking wave
Thinks that the stone's a child.

And Peter that had great affairs And was a pushing man Shrieks
And pe
And th
And th
Remen
And th

We sat
And tal
Told all
Since fit
And wh
Knew th
And fel
That we
Then Per
For it so
Under to
O what
And wh
When we

I have o That ha Madge t When n

And she

Shrieks, 'I am King of the Peacocks,' And perches on a stone; And then I laugh till tears run down And the heart thumps at my side, Remembering that her shriek was love And that he shrieks from pride.

VIII

Summer and Spring

We sat under an old thorn-tree And talked away the night, Told all that had been said or done Since first we saw the light, And when we talked of growing up Knew that we'd halved a soul And fell the one in t'other's arms That we might make it whole: Then Peter had a murdering look, For it seemed that he and she Had spoken of their childish days Under that very tree. O what a bursting out there was, And what a blossoming, When we had all the summer-time And she had all the spring!

IX

The Secrets of the Old

I have old women's secrets now That had those of the young; Madge tells me what I dared not think When my blood was strong, And what had drowned a lover once Sounds like an old song.

Though Margery is stricken dumb If thrown in Madge's way, We three make up a solitude; For none alive to-day Can know the stories that we know Or say the things we say:

How such a man pleased women most Of all that are gone, How such a pair loved many years And such a pair but one, Stories of the bed of straw Or the bed of down.

X

His Wildness

O bid me mount and sail up there Amid the cloudy wrack, For Peg and Meg and Paris' love That had so straight a back, Are gone away, and some that stay Have changed their silk for sack.

Were I but there and none to hear I'd have a peacock cry,
For that is natural to a man
That lives in memory,
Being all alone I'd nurse a stone
And sing it lullaby.

Endure what 1
Cease to rem
wearied ag
Delight become
vain.

Even from tha Death, despair, of manking As that old w children kr

In the long ech.
The bride is
through to
I celebrate the:

Never to have a Never to have looked into The second bes away.

TF

Our m One an

From 'Oedipus at Colonus'

Endure what life God gives and ask no longer span; Cease to remember the delights of youth, travelwearied aged man;

Delight becomes death-longing if all longing else be vain.

Even from that delight memory treasures so, Death, despair, division of families, all entanglements of mankind grow,

As that old wandering beggar and these God-hated children know.

In the long echoing street the laughing dancers throng, The bride is carried to the bridegroom's chamber through torchlight and tumultuous song; I celebrate the silent kiss that ends short life or long.

Never to have lived is best, ancient writers say; Never to have drawn the breath of life, never to have looked into the eye of day; The second best's a gay goodnight and quickly turn away.

THE THREE MONUMENTS

THEY hold their public meetings where Our most renowned patriots stand, One among the birds of the air, A stumpier on either hand;

And all the popular statesmen say That purity built up the State And after kept it from decay; Admonish us to cling to that And let all base ambition be, For intellect would make us proud And pride bring in impurity: The three old rascals laugh aloud.

ALL SOULS' NIGHT Epilogue to 'A Vision'

MIDNIGHT has come, and the great Christ Church Bell And many a lesser bell sound through the room: And it is All Souls' Night, And two long glasses brimmed with muscatel Bubble upon the table. A ghost may come; For it is a ghost's right, His element is so fine Being sharpened by his death, To drink from the wine-breath While our gross palates drink from the whole wine. I need some mind that, if the cannon sound From every quarter of the world, can stay Wound in mind's pondering As mummies in the mummy-cloth are wound; Because I have a marvellous thing to say, A certain marvellous thing None but the living mock, Though not for sober ear; It may be all that hear Should laugh and weep an hour upon the clock.

And knew to That's called And that to Nothing cou Anodyne for Words were One dear hop The inclement Of that or the

Two thought
Whether of I
But think tha
When upward
And that a sl
Wild with di
Had so lit up
Immense mir.
The Bible pro
It seemed a g

On Florence Who finding Admired and And knowing With 'minish Preferred to the Away from ne Among dark's Permit foul you Hidden from

Horton's the first I call. He loved strange thought And knew that sweet extremity of pride That's called platonic love, And that to such a pitch of passion wrought Nothing could bring him, when his lady died, Anodyne for his love.

Words were but wasted breath;
One dear hope had he:
The inclemency
Of that or the next winter would be death.

Two thoughts were so mixed up I could not tell Whether of her or God he thought the most, But think that his mind's eye, When upward turned, on one sole image fell; And that a slight companionable ghost, Wild with divinity, Had so lit up the whole Immense miraculous house The Bible promised us, It seemed a gold-fish swimming in a bowl.

On Florence Emery I call the next,
Who finding the first wrinkles on a face
Admired and beautiful,
And knowing that the future would be vexed
With 'minished beauty, multiplied commonplace,
Preferred to teach a school
Away from neighbour or friend,
Among dark skins, and there
Permit foul years to wear
Hidden from eyesight to the unnoticed end.

Before that end much had she ravelled out
From a discourse in figurative speech
By some learned Indian
On the soul's journey. How it is whirled about,
Wherever the orbit of the moon can reach,
Until it plunge into the sun;
And there, free and yet fast,
Being both Chance and Choice,
Forget its broken toys
And sink into its own delight at last.

And I call up MacGregor from the grave, For in my first hard springtime we were friends, Although of late estranged.
I thought him half a lunatic, half knave, And told him so, but friendship never ends; And what if mind seem changed, And it seem changed with the mind, When thoughts rise up unbid
On generous things that he did And I grow half contented to be blind!

He had much industry at setting out,
Much boisterous courage, before loneliness
Had driven him crazed;
For meditations upon unknown thought
Make human intercourse grow less and less;
They are neither paid nor praised.
But he'd object to the host,
The glass because my glass;
A ghost-lover he was
And may have grown more arrogant being a ghost.

But names ar So that his el The fume of Can give his No living ma I have mumm Whereat the I Though not for maybe all Should laugh

Such thought-Till meditatio Nothing can s Until that glar To where the And where the Such thought, I need no othe Wound in mir As mummies i

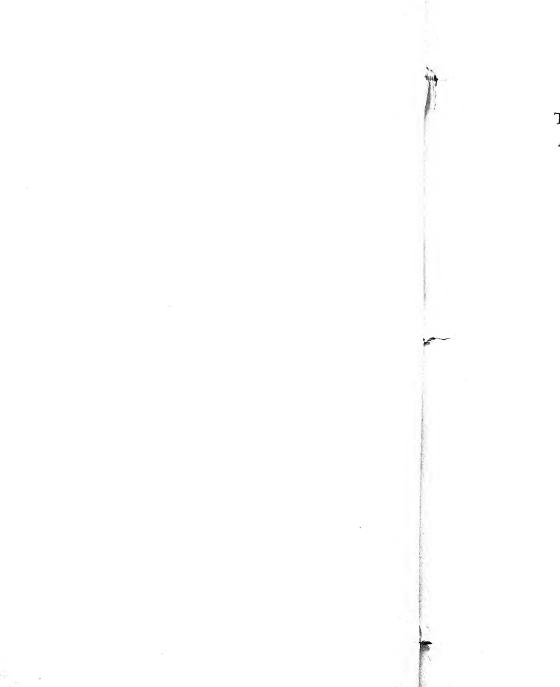
Oxford, 1920

But names are nothing. What matter who it be, So that his elements have grown so fine The fume of muscatel
Can give his sharpened palate ecstasy.
No living man can drink from the whole wine.
I have mummy truths to tell
Whereat the living mock,
Though not for sober ear,
For maybe all that hear
Should laugh and weep an hour upon the clock.

Such thought—such thought have I that hold it tight Till meditation master all its parts,

Nothing can stay my glance
Until that glance run in the world's despite
To where the damned have howled away their hearts,
And where the blessed dance;
Such thought, that in it bound
I need no other thing,
Wound in mind's wandering
As mummies in the mummy-cloth are wound.

Oxford, 1920



THE WINDING STAIR AND OTHER POEMS

IN MEMOR

The I
Great
Two g
Beauti
But a
Blosso:
The ol
Pardor
Conspi
I know
Some
When
An im
Many
One on

Of that Picture That to Two go Beautif

THE WINDING STAIR AND OTHER POEMS

IN MEMORY OF EVA GORE-BOOTH AND CON MARKIEWICZ

THE light of evening, Lissadell, Great windows open to the south, Two girls in silk kimonos, both Beautiful, one a gazelle. But a raving autumn shears Blossom from the summer's wreath: The older is condemned to death, Pardoned, drags out lonely years Conspiring among the ignorant. I know not what the younger dreams-Some vague Utopia—and she seems, When withered old and skeleton-gaunt, An image of such politics. Many a time I think to seek One or the other out and speak Of that old Georgian mansion, mix Pictures of the mind, recall That table and the talk of youth, Two girls in silk kimonos, both Beautiful, one a gazelle.

Dear shadows, now you know it all, All the folly of a fight. With a common wrong or right. The innocent and the beautiful. Have no enemy but time; Arise and bid me strike a match. And strike another till time catch; Should the conflagration climb, Run till all the sages know. We the great gazebo built, They convicted us of guilt; Bid me strike a match and blow.

October 1927

DEATH

Nor dread nor hope attend A dying animal; A man awaits his end Dreading and hoping all; Many times he died, Many times rose again. A great man in his pride Confronting murderous men Casts derision upon Supersession of breath; He knows death to the bone—Man has created death.

y Soul. I sur Set all your Upon the b Upon the b

AI

Upon the single Fix every we will also the second of the s

My Self. The of Is Sato's and Still razor-k
Unsported L
That Hower

From some
The wooder
Can, tattere

My Soul. Why
L ong past h
E mblematic
T hink of an

If but imaging Ai and intellect

To this and De liver from

My Si alf. Mont Five a hundre Flow wers from

A DIALOGUE OF SELF AND SOUL

Ι

Set all your mind upon the steep ascent, Upon the broken, crumbling battlement, Upon the breathless starlit air, Upon the star that marks the hidden pole; Fix every wandering thought upon That quarter where all thought is done: Who can distinguish darkness from the soul?

My Self. The consecrated blade upon my knees Is Sato's ancient blade, still as it was, Still razor-keen, still like a looking-glass Unspotted by the centuries; That howering, silken, old embroidery, torn From some court-lady's dress and round T he wooden scabbard bound and wound, C an, tattered, still protect, faded adorn.

My Soul. Why should the imagination of a man L ong past his prime remember things that are mblematical of love and war?

Think of ancestral night that can, but imagination scorn the earth and intellect its wandering

To this and that and t'other thing,

De liver from the crime of death and birth.

My Stalf. Montashigi, third of his family, fashioned it Five a hundred years ago, about it lie Flow yers from I know not what embroidery—

Heart's purple—and all these I set For emblems of the day against the tower Emblematical of the night, And claim as by a soldier's right A charter to commit the crime once more.

My Soul. Such fullness in that quarter overflows And falls into the basin of the mind That man is stricken deaf and drimb and blind, For intellect no longer knows Is from the Ought, or Knower from the Known-That is to say, ascends to Heavern; Only the dead can be forgiven; But when I think of that my toungue's a stone.

 Π

My Self. A living man is blind and drink's his drop. What matter if the ditches are impure? What matter if I live it all once more? Endure that toil of growing up; The ignominy of boyhood; the distress Of boyhood changing into man; The unfinished man and his pain Brought face to face with his own clumsiness;

The finished man among his enemies? How in the name of Heaven can he escape That defiling and disligured shape The mirror of malicious eyes Casts upon his eyes until at last He thinks that shape must be his shape? And what's the good of an escape If honour find him in the wintry blast?

And yet Into the A blind: Or into t The folly Or must A proud

I am con

I am cont Every eve Measure 1 When suc So great a We must

We are bl Everything

Α

R

U

R

St

Αı

In

H

T My. E T If Ai

To De My Si Five Flor

266

I am content to live it all again
And yet again, if it be life to pitch
Into the frog-spawn of a blind man's ditch,
A blind man battering blind men;
Or into that most fecund ditch of all,
The folly that man does
Or must suffer, if he woos
A proud woman not kindred of his soul.

I am content to follow to its source, Every event in action or in thought; Measure the lot; forgive myself the lot! When such as I cast out remorse So great a sweetness flows into the breast We must laugh and we must sing, We are blest by everything, Everything we look upon is blest.

BLOOD AND THE MOON

T

My.

T

If

Αı

To

De

My Si

Five

Flor

BLESSED be this place,
More blessed still this tower;
A bloody, arrogant power
Rose out of the race
Uttering, mastering it,
Rose like these walls from these
Storm-beaten cottages—
In mockery I have set
A powerful emblem up,
And sing it rhyme upon rhyme
In mockery of a time
Half dead at the top.

267

Alexandria's was a beacon tower, and Babylon's

An image of the moving heavens, a log-book of the sun's journey and the moon's:

And Shelley had his towers, thought's crowned powers he called them once.

I declare this tower is my symbol; I declare

This winding, gyring, spiring treadmill of a stair is my ancestral stair;

That Goldsmith and the Dean, Berkeley and Burke have travelled there.

Swift beating on his breast in sibylline frenzy blind Because the heart in his blood-sodden breast had dragged him down into mankind,

Goldsmith deliberately sipping at the honey-pot of his mind.

And haughtier-headed Burke that proved the State a tree,

That this unconquerable labyrinth of the birds, century after century,

Cast but dead leaves to mathematical equality;

And God-appointed Berkeley that proved all things a dream,

That this pragmatical, preposterous pig of a world, its farrow that so solid seem,

Must vanish on the instant if the mind but change its theme;

Saeva Indignation The strength mity of it Everything the fire.

The purity
Has flung
Seven cents
The blood
There, on I
Soldier, ass.
Whether fo
Or out of a
But could n
Odour of bl
And we that

And clamou

Upon the du And seem to Tortoiseshell A couple of Is every mod Half dead at For wisdom A something Like everyth A property o Can come up When it has Saeva Indignatio and the labourer's hire,
The strength that gives our blood and state magnanimity of its own desire;
Everything that is not God consumed with intellectual fire.

ΙΙΙ

The purity of the unclouded moon
Has flung its arrowy shaft upon the floor.
Seven centuries have passed and it is pure,
The blood of innocence has left no stain.
There, on blood-saturated ground, have stood
Soldier, assassin, executioner,
Whether for daily pittance or in blind fear
Or out of abstract hatred, and shed blood,
But could not cast a single jet thereon.
Odour of blood on the ancestral stair!
And we that have shed none must gather there
And clamour in drunken frenzy for the moon.

ΙV

Upon the dusty, glittering windows cling, And seem to cling upon the moonlit skies, Tortoiseshell butterflies, peacock butterflies, A couple of night-moths are on the wing. Is every modern nation like the tower, Half dead at the top? No matter what I said, For wisdom is the property of the dead, A something incompatible with life; and power, Like everything that has the stain of blood, A property of the living; but no stain Can come upon the visage of the moon When it has looked in glory from a cloud.

OIL AND BLOOD

In tombs of gold and lapis lazuli Bodies of holy men and women exucle Miraculous oil, odour of violet.

But under heavy loads of trampled clay Lie bodies of the vampires full of blood; Their shrouds are bloody and their lips are wet.

VERONICA'S NAPKIN

THE Heavenly Circuit; Berenice's Hair; Tent-pole of Eden; the tent's drapery; Symbolical glory of the earth and air! The Father and His angelic hierarchy That made the magnitude and glory there Stood in the circuit of a needle's eye.

Some found a different pole, and where it stood A pattern on a napkin dipped in blood.

SYMBOLS

A STORM-BEATEN old watch-tower, A blind hermit rings the hour.

All-destroying sword-blade still Carried by the wandering fool.

Gold-sewn silk on the sword-blade, Beauty and fool together laid.

lapis lazuli

I

THE NIN

Thou There The ra Under

> 'Thos 'God's A diag More

SHAKESPEAREA Romantic fish What are all t

The First. My Burke In Grattan's

SPILT MILK

WE that have done and thought, That have thought and done, Must ramble, and thin out Like milk spilt on a stone.

THE NINETEENTH CENTURY AND AFTER

Though the great song return no more There's keen delight in what we have: The rattle of pebbles on the shore Under the receding wave.

STATISTICS

'Those Platonists are a curse,' he said, 'God's fire upon the wane,
A diagram hung there instead,
More women born than men.'

THREE MOVEMENTS

SHAKESPEAREAN fish swam the sea, far away from land; Romantic fish swam in nets coming to the hand; What are all those fish that lie gasping on the strand?

THE SEVEN SAGES

The First. My great-grandfather spoke to Edmund Burke In Grattan's house. The Second. My great-grandfather shared A pot-house bench with Oliver Goldsmith once.

The Third. My great-grandfather's father talked of

music,

Drank tar-water with the Bishop of Cloyne.

The Fourth. But mine saw Stella once.

The Fifth.

Whence came our thought?

The Sixth. From four great minds that hated Whiggery.

The Fifth. Burke was a Whig.

The Sixth. Whether they knew or not, Goldsmith and Burke, Swift and the Bishop of Cloyne

All hated Whiggery; but what is Whiggery? A levelling, rancorous, rational sort of mind That never looked out of the eye of a saint Or out of drunkard's eye.

The Seventh. All's Whiggery now, But we old men are massed against the world.

The First. American colonies, Ireland, France and India Harried, and Burke's great melody against it.

The Second. Oliver Goldsmith sang what he had seen, Roads full of beggars, cattle in the fields, But never saw the trefoil stained with blood, The avenging leaf those fields raised up against it.

The Fourth. The tomb of Swift wears it away.

The Third.

A voice

Soft as the rustle of a reed from Cloyne That gathers volume; now a thunder-clap.

The Sixth. What schooling had these four?

The Seventh. Mimicking They under

> CRAZ The r Moor Gland We g

For c

Child Wher First What Wher What

Fly-ca Our l But s. Blenc They May

I MED Upon The Seventh. They walked the roads Mimicking what they heard, as children mimic; They understood that wisdom comes of beggary.

THE CRAZED MOON

CRAZED through much child-bearing The moon is staggering in the sky; Moon-struck by the despairing Glances of her wandering eye We grope, and grope in vain, For children born of her pain.

Children dazed or dead!
When she in all her virginal pride
First trod on the mountain's head
What stir ran through the countryside
Where every foot obeyed her glance!
What manhood led the dance!

Fly-catchers of the moon,
Our hands are blenched, our fingers seem
But slender needles of bone;
Blenched by that malicious dream
They are spread wide that each
May rend what comes in reach.

COOLE PARK, 1929

I MEDITATE upon a swallow's flight, Upon an aged woman and her house, A sycamore and lime tree lost in night Although that western cloud is luminous, Great works constructed there in nature's spite For scholars and for poets after us, Thoughts long knitted into a single thought, A dance-like glory that those walls begot.

There Hyde before he had beaten into prose That noble blade the Muses buckled on, There one that ruffled in a manly pose For all his timid heart, there that slow man, That meditative man, John Synge, and those Impetuous men, Shaw Taylor and Hugh Lane Found pride established in humility, A scene well set and excellent company.

They came like swallows and like swallows went, And yet a woman's powerful character Could keep a swallow to its first intent; And half a dozen in formation there, That seemed to whirl upon a compass-point, Found certainty upon the dreaming air, The intellectual sweetness of those lines That cut through time or cross it withershins.

Here, traveller, scholar, poet, take your stand. When all those rooms and passages are gone, When nettles wave upon a shapeless mound And saplings root among the broken stone,

And de Back to And al A mon

UNDER my Otters belo Run for a r Then darke Run underg In Coole de Spread to a What's wat

Upon the b Now all dry And in a co For Nature' And all the At sudden t I turned abo The glitteri

Another em But seems a And, like th And in the And dedicate—eyes bent upon the ground, Back turned upon the brightness of the sun And all the sensuality of the shade—
A moment's memory to that laurelled head.

COOLE AND BALLYLEE, 1931

UNDER my window-ledge the waters race,
Otters below and moor-hens on the top,
Run for a mile undimmed in Heaven's face
Then darkening through 'dark' Raftery's 'cellar' drop,
Run underground, rise in a rocky place
In Coole demesne, and there to finish up
Spread to a lake and drop into a hole.
What's water but the generated soul?

Upon the border of that lake's a wood
Now all dry sticks under a wintry sun,
And in a copse of beeches there I stood,
For Nature's pulled her tragic buskin on
And all the rant's a mirror of my mood:
At sudden thunder of the mounting swan
I turned about and looked where branches break
The glittering reaches of the flooded lake.

Another emblem there! That stormy white But seems a concentration of the sky; And, like the soul, it sails into the sight And in the morning's gone, no man knows why; And is so lovely that it sets to right What knowledge or its lack had set awry, So arrogantly pure, a child might think It can be murdered with a spot of ink.

Sound of a stick upon the floor, a sound From somebody that toils from chair to chair; Beloved books that famous hands have bound, Old marble heads, old pictures everywhere; Great rooms where travelled men and children found Content or joy; a last inheritor Where none has reigned that lacked a name and fame Or out of folly into folly came.

A spot whereon the founders lived and died Seemed once more dear than life; ancestral trees, Or gardens rich in memory glorified Marriages, alliances and families, And every bride's ambition satisfied.

Where fashion or mere fantasy decrees Man shifts about—all that great glory spent—Like some poor Arab tribesman and his tent.

We were the last romantics—chose for theme Traditional sanctity and loveliness; Whatever's written in what poets name The book of the people; whatever most can bless The mind of man or elevate a rhyme; But all is changed, that high horse riderless, Though mounted in that saddle Homer rode Where the swan drifts upon a darkening flood.

FOR ANNE GREGORY

'Never shall a young man, Thrown into despair By those great honey-coloured Ramparts at your ear, Love you for yourself alone And not your yellow hair.'

'But I can get a hair-dye And set such colour there, Brown, or black, or carrot, That young men in despair May love me for myself alone And not my yellow hair.'

'I heard an old religious man But yesternight declare That he had found a text to prove That only God, my dear, Could love you for yourself alone And not your yellow hair.'

SWIFT'S EPITAPH

SWIFT has sailed into his rest; Savage indignation there Cannot lacerate his breast. Imitate him if you dare, World-besotted traveller; he Served human liberty.

AT ALGECIRAS -- A MEDITATION UPON DEATH

THE heron-billed pale cattle-birds
That feed on some foul parasite
Of the Moroccan flocks and herds
Cross the narrow Straits to light
In the rich midnight of the garden trees
Till the dawn break upon those mingled seas.

Often at evening when a boy
Would I carry to a friend—
Hoping more substantial joy
Did an older mind commend—
Not such as are in Newton's metaphor,
But actual shells of Rosses' level shore.

Greater glory in the sun,
An evening chill upon the air,
Bid imagination run
Much on the Great Questioner;
What He can question, what if questioned I
Can with a fitting confidence reply.

November 1928

THE CHOICE

The intellect of man is forced to choose Perfection of the life, or of the work, And if it take the second must refuse A heavenly mansion, raging in the dark. And half And half And he the That start May know

Get all th Satisfy an The trivia And yet u All wome Although No man I Of childre

No longer Begin the And from Test every And every And call to That are r Proud, op

> N I I

And half is half and yet is all the scene; And half and half consume what they renew, And he that Attis' image hangs between That staring fury and the blind lush leaf May know not what he knows, but knows not grief.

TTT

Get all the gold and silver that you can, Satisfy ambition, or animate The trivial days and ram them with the sun, And yet upon these maxims meditate: All women dote upon an idle man Although their children need a rich estate; No man has ever lived that had enough Of children's gratitude or woman's love.

No longer in Lethean foliage caught
Begin the preparation for your death
And from the fortieth winter by that thought
Test every work of intellect or faith,
And everything that your own hands have wrought,
And call those works extravagance of breath
That are not suited for such men as come
Proud, open-eyed and laughing to the tomb.

IV

My fiftieth year had come and gone, I sat, a solitary man, In a crowded London shop, An open book and empty cup On the marble table-top.

While on the shop and street I gazed My body of a stidden blazed; And twenty minutes more or less It seemed, so great my happiness, That I was blessed and could bless.

۲

Although the summer sunlight gild Cloudy leafage of the sky, Or wintry moonlight sink the field In storm-scattered intricacy, I cannot look thereon, Responsibility so weighs me down.

Things said or done long years ago, Or things I did not do or say But thought that I might say or do, Weigh me down, and not a day But something is recalled, My conscience or my vanity appalled.

VI

A rivery field spread out below, An odour of the new-mown hay In his nostrils, the great lord of Chou Cried, casting off the mountain snow, 'Let all things pass away.'

Wheels by milk-white asses drawn Where Babylon or Nineveh Rose; some conqueror drew rein The Soul. See

T W W 'L

The Heart. W The Soul. Isai The Heart. St The Soul. Loo

The Heart. W

Must we par Accept the r The body of Bathed in m Healing from perchance Eternalised to Had scooped

might fi

Did I becom



And cried to battle-weary men, 'Let all things pass away.'

From man's blood-sodden heart are sprung Those branches of the night and day Where the gaudy moon is hung. What's the meaning of all song? 'Let all things pass away.'

VII

The Soul. Seek out reality, leave things that seem.

The Heart. What, be a singer born and lack a theme?

The Soul. Isaiah's coal, what more can man desire?

The Heart. Struck dumb in the simplicity of fire!

The Soul. Look on that fire, salvation walks within.

The Heart. What theme had Homer but original sin?

VIII

Must we part, Von Hügel, though much alike, for we Accept the miracles of the saints and honour sanctity? The body of Saint Teresa lies undecayed in tomb, Bathed in miraculous oil, sweet odours from it come, Healing from its lettered slab. Those self-same hands perchance

Eternalised the body of a modern saint that once Had scooped out Pharaoh's mummy. I—though heart might find relief

Did I become a Christian man and choose for my belief

What seems most welcome in the tomb -play a predestined part.

Homer is my example and his unchristened heart. The lion and the honeycomb, what has Scripture said? So get you gone, Von Hügel, though with blessings on your head.

1932

QUARREL IN OLD AGE

WHERE had her sweetness gone? What fanatics invent. In this blind bitter town, Fantasy or incident. Not worth thinking of, Put her in a rage. I had forgiven enough. That had forgiven old age.

All lives that has lived;
So much is certain;
Old sages were not deceived:
Somewhere beyond the curtain
Of distorting days
Lives that lonely thing
That shone before these eyes
Targeted, trod like Spring.

THE RESULTS OF THOUGHT

Acquaintance; companion; One dear brilliant woman; 286



GRATITUD

W Th

Al U

REMO

I F Bu The best-endowed, the elect, All by their youth undone, All, all, by that inhuman Bitter glory wrecked.

But I have straightened out Ruin, wreck and wrack; I toiled long years and at length Came to so deep a thought I can summon back All their wholesome strength.

What images are these That turn dull-eyed away, Or shift Time's filthy load, Straighten aged knees, Hesitate or stay? What heads shake or nod?

August 1931

GRATITUDE TO THE UNKNOWN INSTRUCTORS

What they undertook to do They brought to pass; All things hang like a drop of dew Upon a blade of grass.

REMORSE FOR INTEMPERATE SPEECH

I RANTED to the knave and fool, But outgrew that school,

Would transform the part, Fit audience found, but cannot rule My fanatic ¹ heart.

I sought my betters: though in each Fine manners, liberal speech, Turn hatred into sport, Nothing said or done can reach My fanatic heart.

Out of Ireland have we come. Great hatred, little room, Maimed us at the start. I carry from my mother's womb A fanatic heart.

August 28, 1931

STREAM AND SUN AT GLENDALOUGH

THROUGH intricate motions ran Stream and gliding sun And all my heart seemed gay: Some stupid thing that I had done Made my attention stray.

Repentance keeps my heart impure; But what am I that dare

¹ I pronounce 'fanatic' in what is, I suppose, the older and more Irish way, so that the last line of each stanza contains but two beats.



W

Fancy that I can
Better conduct myself or have more
Sense than a common man?

What motion of the sun or stream Or eyelid shot the gleam That pierced my body through? What made me live like these that seem Self-born, born anew?

June 1932



WORDS FOR MUSIC PERHAPS

Ι

CRAZY JANE AND THE BISHOP

BRING me to the blasted oak That I, midnight upon the stroke, (All find safety in the tomb.) May call down curses on his head Because of my dear Jack that's dead. Coxcomb was the least he said: The solid man and the coxcomb.

Nor was he Bishop when his ban Banished Jack the Journeyman, (All find safety in the tomb.) Nor so much as parish priest, Yet he, an old book in his fist, Cried that we lived like beast and beast: The solid man and the coxcomb.

The Bishop has a skin, God knows, Wrinkled like the foot of a goose, (All find safety in the tomb.) Nor can he hide in holy black The heron's hunch upon his back, But a birch-tree stood my Jack: The solid man and the coxcomb.

Tack had my virginity, And bids me to the oak, for he

I CA All: All Can Grea Tha Fol

(All t Wan And

But s The s

To Add WMa So Αr

Fol

CRAZY

290

(All find safety in the tomb.)
Wanders out into the night
And there is shelter under it,
But should that other come, I spit:
The solid man and the coxcomb.

H

CRAZY JANE REPROVED

I CARE not what the sailors say:
All those dreadful thunder-stones,
All that storm that blots the day
Can but show that Heaven yawns;
Great Europa played the fool
That changed a lover for a bull.
Fol de rol, fol de rol.

To round that shell's elaborate whorl, Adorning every secret track With the delicate mother-of-pearl, Made the joints of Heaven crack: So never hang your heart upon A roaring, ranting journeyman. Fol de rol, fol de rol.

III

CRAZY JANE ON THE DAY OF JUDGMENT

'Love is all Unsatisfied That cannot take the whole



Body and soul';
And that is what Jane said.

'Take the sour
If you take me,
I can scoff and lour
And scold for an hour.'
'That's certainly the case,' said he.

M

Sh

In

Bu In

Th

W

Pa

M

'Naked I lay, The grass my bed; Naked and hidden away, That black day'; And that is what Jane said.

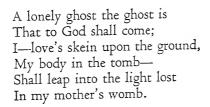
'What can be shown?
What true love be?
All could be known or shown
If Time were but gone.'
'That's certainly the case,' said he.

IV

CRAZY JANE AND JACK THE JOURNEYMAN

I know, although when looks meet I tremble to the bone,
The more I leave the door unlatched The sooner love is gone,
For love is but a skein unwound
Between the dark and dawn.





But were I left to lie alone
In an empty bed,
The skein so bound us ghost to ghost
When he turned his head
Passing on the road that night,
Mine would walk being dead.

V

CRAZY JANE ON GOD

THAT lover of a night Came when he would, Went in the dawning light Whether I would or no; Men come, men go; All things remain in God.

Banners choke the sky; Men-at-arms tread; Armoured horses neigh Where the great battle was In the narrow pass: All things remain in God. Before their eyes a house That from childhood stood Uninhabited, ruinous, Suddenly lit up From door to top: All things remain in God.

I had wild Jack for a lover; Though like a road That men pass over My body makes no moan But sings on: All things remain in God.



CRAZY JANE TALKS WITH THE BISHOP

I MET the Bishop on the road And much said he and I. 'Those breasts are flat and fallen now, Those veins must soon be dry; Live in a heavenly mansion, Not in some foul sty.'

'Fair and foul are near of kin, And fair needs foul,' I cried. 'My friends are gone, but that's a truth Nor grave nor bed denied, Learned in bodily lowliness And in the heart's pride.



Who But The For Tha

'Aw

CRAZY

Dance But As t Or l Eyes

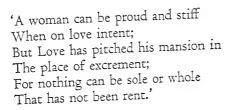
Wh
I sa
Dre
I co
For

Love

Di Se Go

Low





VII

CRAZY JANE GROWN OLD LOOKS AT THE DANCERS

I FOUND that ivory image there
Dancing with her chosen youth,
But when he wound her coal-black hair
As though to strangle her, no scream
Or bodily movement did I dare,
Eyes under eyelids did so gleam;
Love is like the lion's tooth.

When she, and though some said she played I said that she had danced heart's truth, Drew a knife to strike him dead, I could but leave him to his fate; For no matter what is said They had all that had their hate; Love is like the lion's tooth.

Did he die or did she die? Seemed to die or died they both? God be with the times when I Cared not a thraneen for what chanced So that I had the limbs to try Such a dance as there was danced—
Love is like the lion's tooth.



VIII

GIRL'S SONG

I went out alone
To sing a song or two,
My fancy on a man,
And you know who.

Another came in sight That on a stick relied To hold himself upright; I sat and cried.

And that was all my song— When everything is told, Saw I an old man young Or young man old?

ΙX

YOUNG MAN'S SONG

'SHE will change,' I cried, 'Into a withered crone.' The heart in my side, That so still had lain,

296

In noble rage replied And beat upon the bone:

'Uplift those eyes and throw Those glances unafraid: She would as bravely show Did all the fabric fade: No withered crone I saw Before the world was made.'

Abashed by that report,
For the heart cannot lie,
I knelt in the dirt.
And all shall bend the knee
To my offended heart
Until it pardon me.

Х

HER ANXIETY

EARTH in beauty dressed Awaits returning spring. All true love must die, Alter at the best Into some lesser thing. Prove that I lie.

Such body lovers have, Such exacting breath, That they touch or sigh. Every touch they give, Love is nearer death.

Prove that I lie.



 \mathbf{XI}

HIS CONFIDENCE

UNDYING love to buy
I wrote upon
The corners of this eye
All wrongs done.
What payment were enough
For undying love?

I broke my heart in two So hard I struck. What matter? for I know That out of rock, Out of a desolate source, Love leaps upon its course.

XII

LOVE'S LONELINESS

OLD fathers, great-grandfathers, Rise as kindred should. If ever lover's loneliness Came where you stood, Pray that Heaven protect us That protect your blood.

The mountain throws a shadow, Thin is the moon's horn; 298

I DRE All no That And But s

And

Berer





What did we remember Under the ragged thorn? Dread has followed longing, And our hearts are torn.

XIII

HER DREAM

I DREAMED as in my bed I lay, All night's fathomiess wisdom come, That I had shorn my locks away And laid them on Love's lettered tomb: But something bore them out of sight In a great tumult of the air. And after nailed upon the night Berenice's burning hair.

MIV

HIS BARGAIN

Who talks of Plato's spindle; What set it whirling round? Eternity may dwindle, Time is unwound, Dan and Jerry Lout Change their loves about.

However they may take it, Before the thread began I made, and may not break it When the last thread has run, A bargain with that hair And all the windings there.

THREE THINGS

'O CRUEL Death, give three things back,'
Sang a bone upon the shore;
'A child found all a child can lack,
Whether of pleasure or of rest,
Upon the abundance of my breast':
A bone wave-whitened and dried in the wind.

'Three dear things that women know,'
Sang a bone upon the shore;
'A man if I but held him so
When my body was alive
Found all the pleasure that life gave':
A bone wave-whitened and dried in the wind.

'The third thing that I think of yet,'
Sang a bone upon the shore,
'Is that morning when I met
Face to face my rightful man
And did after stretch and yawn':
A bone wave-whitened and dried in the wind.

XVI

LULLABY

BELOVED, may your sleep be sound That have found it where you fed. What were all the world's alarms To mighty Paris when he found Sleep upon a golden bed That first dawn in Helen's arms?



As did When Roe of Under Roe of

Sleep.

When Accom From But no

All othe Unfrien The cur That we Upon the Bodily of We love

SPEECH

M.

BOLT as

Sleep, beloved, such a sleep
As did that wild Tristram know
When, the potion's work being done,
Roe could run or doe could leap
Under oak and beechen bough.
Roe could leap or doe could run;

Such a sleep and sound as fell Upon Eurotas' grassy bank When the holy bird, that there Accomplished his predestined will, From the limbs of Leda sank But not from her protecting care.

XVII

AFTER LONG SILENCE

Speech after long silence; it is right, All other lovers being estranged or dead, Unfriendly lamplight hid under its shade, The curtains drawn upon unfriendly night, That we descant and yet again descant Upon the supreme theme of Art and Song: Bodily decrepitude is wisdom; young We loved each other and were ignorant.

XVIII

MAD AS THE MIST AND SNOW

BOLT and bar the shutter, For the foul winds blow:

Our minds are at their best this night, And I seem to know That everything outside us is Mad as the mist and snow.

Horace there by Homer stands, Plato stands below, And here is Tully's open page. How many years ago Were you and I unlettered lads Mad as the mist and snow?

You ask what makes me sigh, old friend, What makes me shudder so? I shudder and I sigh to think That even Cicero
And many-minded Homer were
Mad as the mist and snow.

XIX

THOSE DANCING DAYS ARE GONE

COME, let me sing into your ear; Those dancing days are gone, All that silk and satin gear; Crouch upon a stone, Wrapping that foul body up In as foul a rag: I carry the sun in a golden cup, The moon in a silver bag.

Curse
What
That the ci
Are so
Under
I carry
The m

Noon
A man
Who
May s
Whet
I carry
The m

I thou

An: 'Co Con

"I A

Ans

On In : On Of Curse as you may I sing it through; What matter if the knave
That the most could pleasure you,
The children that he gave,
Are somewhere sleeping like a top
Under a marble flag?
I carry the run in a gelden cup,
The moon in a silver hag.

I thought it out this very day,
Noon upon the clock,
A man may put pretence away
Who leans upon a stick,
May sing, and sing until he drop,
Whether to maid or hag:
I carry the sun in a golden cup,
The moon in a silver dag.

XX

'I AM OF IRELAND

"I AM of Ireland, And the Holy Land of Ireland, And time runs on," cried she. "Come out of charity, Come dance with me in Ireland."

One man, one man alone In that outlandish gear, One solitary man Of all that rambled there Had turned his stately head. 'That is a long way off, And time runs on,' he said, 'And the night grows rough.'

'I am of Ireland,
And the Holy Land of Ireland,
And time runs on,' cried she.
'Come out of charity
And dance with me in Ireland.'

'The fiddlers are all thumbs, Or the fiddle-string accursed, The drums and the kettledrums And the trumpets all are burst, And the trombone,' cried he, 'The trumpet and trombone,' And cocked a malicious eye, 'But time runs on, runs on.'

'I am of Ireland,
And the Holy Land of Ireland,
And time runs on,' cried she.
'Come out of charity
And dance with me in Ireland.'

IXX

THE DANCER AT CRUACHAN AND CRO-PATRICK

I, PROCLAIMING that there is Among birds or beasts or men One that is perfect or at peace, 1

Danced
Upon C
All that
Whethe
Acclain

SANG of That silf What And ey What is Nature

'Huddo Holy Jo Wench Or sing Someth That b

'Whate Bird, b Mare o Stands In all t

In that

Danced on Cruachan's windy plain, Upon Cro-Patrick sang aloud: All that could run or leap or swim Whether in wood, water or cloud, Acclaiming, proclaiming, declaiming Him.

IIXX

TOM THE LUNATIC

SANG old Tom the lunatic
That sleeps under the canopy;
'What change has put my thoughts astray
And eyes that had so keen a sight?
What has turned to smoking wick
Nature's pure unchanging light?

'Huddon and Duddon and Daniel O'Leary, Holy Joe, the beggar-man, Wenching, drinking, still remain Or sing a penance on the road; Something made these eyeballs weary That blinked and saw them in a shroud.

'Whatever stands in field or flood Bird, beast, fish or man, Mare or stallion, cock or hen, Stands in God's unchanging eye In all the vigour of its blood; In that faith I live or die.'

XXIII

TOM AT CRUACHAN

On Cruachan's plain slept he That must sing in a rhyme What most could shake his soul: 'The stallion Eternity Mounted the mare of Time, 'Gat the foal of the world.'

XXIV

OLD TOM AGAIN

THINGS out of perfection sail, And all their swelling canvas wear, Nor shall the self-begotten fail Though fantastic men suppose Building-yard and stormy shore, Winding-sheet and swaddling-clothes.

XXV

THE DELPHIC ORACLE UPON PLOTINUS

BEHOLD that great Plotinus swim, Buffeted by such seas; Bland Rhadamanthus beckons him, But the Golden Race looks dim, Salt blood blocks his eyes.

306



Scattered on the level grass
Or winding through the grove
Plato there and Minos pass,
There stately Pythagoras
And all the choir of Love.

August 19, 1931

A WOMAN YOUNG AND OLD

Ι

FATHER AND CHILD

SHE hears me strike the board and say That she is under ban Of all good men and women, Being mentioned with a man That has the worst of all bad names; And thereupon replies That his hair is beautiful, Cold as the March wind his eyes.

Π

BEFORE THE WORLD WAS MADE

IF I make the lashes dark And the eyes more bright And the lips more scarlet, Or ask if all be right From mirror after mirror, No vanity's displayed: I'm looking for the face I had Before the world was made.

What if I look upon a man As though on my beloved, 308

And my blood be cold the while And my heart unmoved: Why should he think me cruel Or that he is betrayed? I'd have him love the thing that was Before the world was made.

III

A FIRST CONFESSION

I ADMIT the briar
Entangled in my hair
Did not injure me;
My blenching and trembling,
Nothing but dissembling,
Nothing but coquetry.

I long for truth, and yet
I cannot stay from that
My better self disowns,
For a man's attention
Brings such satisfaction
To the craving in my bones.

Brightness that I pull back From the Zodiac, Why those questioning eyes That are fixed upon me? What can they do but shun me If empty night replies?

HER TRIUMPH

I DID the dragon's will until you came
Because I had fancied love a casual
Improvisation, or a settled game
That followed if I let the kerchief fall:
Those deeds were best that gave the minute wings
And heavenly music if they gave it wit;
And then you stood among the dragon-rings.
I mocked, being crazy, but you mastered it
And broke the chain and set my ankles free,
Saint George or else a pagan Perseus;
And now we stare astonished at the sea,
And a miraculous strange bird shrieks at us.

V

CONSOLATION

O BUT there is wisdom
In what the sages said;
But stretch that body for a while
And lay down that head
Till I have told the sages
Where man is comforted.

How could passion run so deep Had I never thought That the crime of being born Blackens all our lot? But where the crime's committed The crime can be forgot. THE lot of Strugglin Of the w Scarce did Scarce said On the m Before I I

I chose it
My utmo
By some
That stil
Where h
And both
Where—
The Zod

And seen

I struggle

 H_{i}

S

CHOSEN

THE lot of love is chosen. I learnt that much Struggling for an image on the track Of the whirling Zodiac.
Scarce did he my body touch,
Scarce sank he from the west Or found a subterranean rest On the maternal midnight of my breast Before I had marked him on his northern way, And seemed to stand although in bed I lay.

I struggled with the horror of daybreak, I chose it for my lot! If questioned on My utmost pleasure with a man By some new-married bride, I take That stillness for a theme Where his heart my heart did seem And both adrift on the miraculous stream Where—wrote a learned astrologer—The Zodiac is changed into a sphere.

VII

PARTING

He. Dear, I must be gone While night shuts the eyes Of the household spies; That song announces dawn.

She. No, night's bird and love's Bids all true lovers rest,

While his loud song reproves The murderous stealth of day.

He. Daylight already flies From mountain crest to crest.

She. That light is from the moon.

He. That bird . . .

She. Let him sing on, I offer to love's play My dark declivities.

VIII

HER VISION IN THE WOOD

DRY timber under that rich foliage, At wine-dark midnight in the sacred wood, Too old for a man's love I stood in rage Imagining men. Imagining that I could A greater with a lesser pang assuage Or but to find if withered vein ran blood, I tore my body that its wine might cover Whatever could recall the lip of lover.

And after that I held my fingers up, Stared at the wine-dark nail, or dark that ran Down every withered finger from the top; But the dark changed to red, and torches shone, And deafening music shook the leaves; a troop Shouldered a litter with a wounded man, Or smote upon the string and to the sound Sang of the beast that gave the fatal wound. All stately wo With loosened It seemed a Q A thoughtless Why should to Till suddenly I stared upon And sang my

That thing all Half turned a And, though I Those bodies Nor saw my I Nor knew, dr That they had But my heart

WHA
Of al
I ans
And
But I
That

Fling To the He f All stately women moving to a song With loosened hair or foreheads grief-distraught, It seemed a Quattrocento painter's throng, A thoughtless image of Mantegna's thought— Why should they think that are for ever young? Till suddenly in grief's contagion caught, I stared upon his blood-bedabbled breast And sang my malediction with the rest.

That thing all blood and mire, that beast-torn wreck, Half turned and fixed a glazing eye on mine. And, though love's bitter-sweet had all come back, Those bodies from a picture or a coin Nor saw my body fall nor heard it shriek, Nor knew, drunken with singing as with wine, That they had brought no fabulous symbol there But my heart's victim and its torturer.

IX

A LAST CONFESSION

What lively lad most pleasured me Of all that with me lay? I answer that I gave my soul And loved in misery, But had great pleasure with a lad That I loved bodily.

Flinging from his arms I laughed To think his passion such He fancied that I gave a soul Did but our bodies touch, And laughed upon his breast to think Beast gave beast as much.

I gave what other women gave That stepped out of their clothes, But when this soul, its body off, Naked to naked goes, He it has found shall find therein What none other knows,

And give his own and take his own And rule in his own right; And though it loved in misery Close and cling so tight, There's not a bird of day that dare Extinguish that delight.

х

MEETING

HIDDEN by old age awhile In masker's cloak and hood, Each hating what the other loved, Face to face we stood: 'That I have met with such,' said he, 'Bodes me little good.'

'Let others boast their fill,' said I,
'But never dare to boast
That such as I had such a man
For lover in the past;
Say that of living men I hate
Such a man the most.'

'A loo He in But su Could This

Had i

Over Inhab The r The f Marin Over

Over.
Heav
That
Broth
Fami
City
By th

Pray And Desc 'A loony'd boast of such a love,' He in his rage declared:
But such as he for such as me—
Could we both discard
This beggarly habiliment—
Had found a sweeter word.

XI

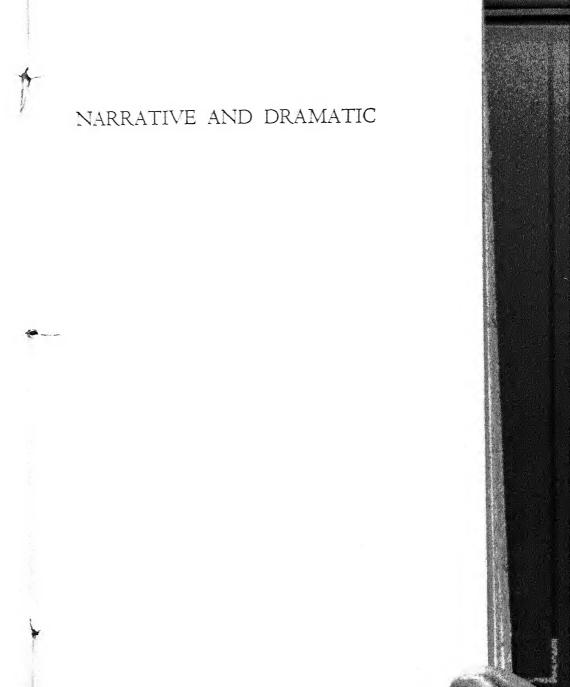
FROM THE 'ANTIGONE'

OVERCOME—O bitter sweetness, Inhabitant of the soft cheek of a girl— The rich man and his affairs. The fat flocks and the fields' fatness, Mariners, rough harvesters; Overcome Gods upon Parnassus;

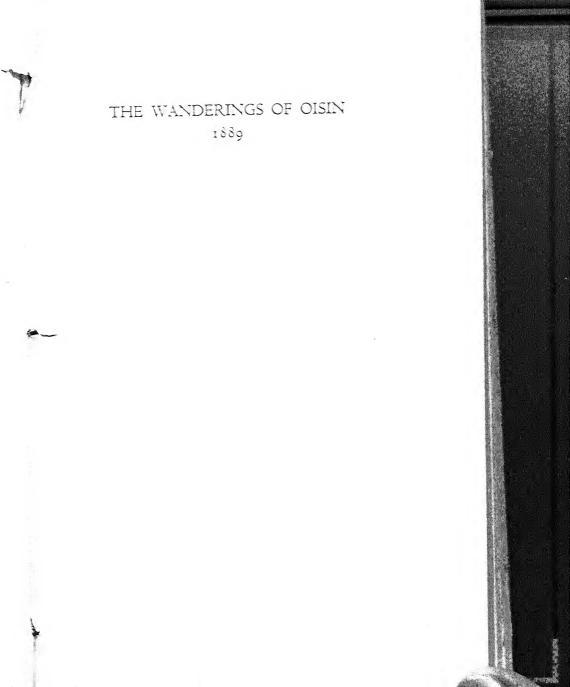
Overcome the Empyrean; hurl Heaven and Earth out of their places, That in the same calamity Brother and brother, friend and friend, Family and family, City and city may contend, By that great glory driven wild.

Pray I will and sing I must, And yet I weep—Oedipus' child Descends into the loveless dust.





THE V



*Give me the world if Thou wilt, but grant me an asylum for my affections.'—TULKA

Y

321

S. Patrick. You With a hea Have know Of dalliance

Oisin. Sad to

The swift in The horsen And bowls Those ment And the wife But the tall Must live

Caoilte, an When we : With Bran And passir Came to the Where pass

And found A pearl-pa On a hors And like a

A stormy A citron o

THE WANDERINGS OF OISIN

BOOK I

S. Patrick. You who are bent, and bald, and blind, With a heavy heart and a wandering mind, Have known three centuries, poets sing, Of dalliance with a demon thing.

Oisin. Sad to remember, sick with years,
The swift innumerable spears,
The horsemen with their floating hair,
And bowls of barley, honey, and wine,
Those merry couples dancing in tune,
And the white body that lay by mine;
But the tale, though words be lighter than air,
Must live to be old like the wandering moon.

Caoilte, and Conan, and Finn were there,
When we followed a deer with our baying hounds,
With Bran, Sceolan, and Lomair,
And passing the Firbolgs' burial-mounds,
Came to the cairn-heaped grassy hill
Where passionate Maeve is stony-still;
And found on the dove-grey edge of the sea
A pearl-pale, high-born lady, who rode
On a horse with bridle of findrinny;
And like a sunset were her lips,
A stormy sunset on doomed ships;
A citron colour gloomed in her hair,

But down to her feet white vesture flowed, And with the glimmering crimson glowed Of many a figured embroidery; And it was bound with a pearl-pale shell That wavered like the summer streams, As her soft bosom rose and fell.

S. Patrick. You are still wrecked among heathen dreams.

Oisin. 'Why do you wind no horn?' she said.
'And every hero droop his head?
The hornless deer is not more sad
That many a peaceful moment had,
More sleek than any granary mouse,
In his own leafy forest house
Among the waving fields of fern:
The hunting of heroes should be glad.'

'O pleasant woman,' answered Finn, 'We think on Oscar's pencilled urn, And on the heroes lying slain On Gabhra's raven-covered plain; But where are your noble kith and kin, And from what country do you ride?'

'My father and my mother are Aengus and Edain, my own name Niamh, and my country far Beyond the tumbling of this tide.'

'What dream came with you that you came Through bitter tide on foam-wet feet? Did your companion wander away From where the birds of Aengus wing?' Thereon
'I have n
Been spo
Yet now
Ran thro
That I m

'Were the That you

'I loved

Until the Rhyme of And now Of all the Of battle Of storic That are

O Patrio There w Into a d 'You on 'And I w And set And cap

At eveni

'O Oisi To shor Where

Shall kr At even Thereon did she look haughty and sweet: 'I have not yet, war-weary king, Been spoken of with any man; Yet now I choose, for these four feet Ran through the foam and ran to this That I might have your son to kiss.'

'Were there no better than my son That you through all that foam should run?'

'I loved no man, though kings besought, Until the Danaan poets brought Rhyme that rhymed upon Oisin's name, And now I am dizzy with the thought Of all that wisdom and the fame Of battles broken by his hands, Of stories builded by his words That are like coloured Asian birds At evening in their rainless lands.'

O Patrick, by your brazen bell,
There was no limb of mine but fell
Into a desperate gulph of love!
'You only will I wed,' I cried,
'And I will make a thousand songs,
And set your name all names above,
And captives bound with leathern thongs
Shall kneel and praise you, one by one,
At evening in my western dun.'

'O Oisin, mount by me and ride To shores by the wash of the tremulous tide, Where men have heaped no burial-mounds, And the days pass by like a wayward tune, Where broken faith has never been known, And the blushes of first love never have flown: And there I will give you a hundred hounds; No mightier creatures bay at the moon; And a hundred robes of murmuring silk, And a hundred calves and a hundred sheep Whose long wool whiter than sea-froth flows, And a hundred spears and a hundred bows, And oil and wine and honey and milk, And always never-anxious sleep; While a hundred youths, mighty of limb, But knowing nor tumult nor hate nor strife, And a hundred ladies, merry as birds, Who when they dance to a fitful measure Have a speed like the speed of the salmon herds, Shall follow your horn and obey your whim, And you shall know the Danaan leisure; And Niamh be with you for a wife.' Then she sighed gently, 'It grows late. Music and love and sleep await, Where I would be when the white moon climbs, The red sun falls and the world grows dim.'

And then I mounted and she bound me With her triumphing arms around me, And whispering to herself enwound me; But when the horse had felt my weight, He shook himself and neighed three times: Caoilte, Conan, and Finn came near, And wept, and raised their lamenting hands, And bid me stay, with many a tear; But we rode out from the human lands.

In what far k
Ah, Fenians,
Or are you ph
Whose lips h
O you, with
Or down the
I chased at m
With whom
And heard th
And broke th
And Bran, So
Where are yo
You go not w
Nor tear the

S. Patrick. Boas Companions And hounds

Oisin. We galke
I know not i
And Niamh
Danaan song
Of pensive I
Lulled weari
My human s
We galloped
Passed by us
All pearly w
And now a
With an app
And a beaut
With quence

In what far kingdom do you go,
Ah, Fenians, with the shield and bow?
Or are you phantoms white as snow,
Whose lips had life's most prosperous glow?
O you, with whom in sloping valleys,
Or down the dewy forest alleys,
I chased at morn the flying deer,
With whom I hurled the hurrying spear,
And heard the foemen's bucklers rattle,
And broke the heaving ranks of battle!
And Bran, Sceolan, and Lomair,
Where are you with your long rough hair?
You go not where the red deer feeds,
Nor tear the foemen from their steeds.

S. Patrick. Boast not, nor mourn with drooping head Companions long accurst and dead, And hounds for centuries dust and air.

Oisin. We galloped over the glossy sea:

I know not if days passed or hours,
And Niamh sang continually
Danaan songs, and their dewy showers
Of pensive laughter, unhuman sound,
Lulled weariness, and softly round
My human sorrow her white arms wound.
We galloped; now a hornless deer
Passed by us, chased by a phantom hound
All pearly white, save one red ear;
And now a lady rode like the wind
With an apple of gold in her tossing hand;
And a beautiful young man followed behind
With quenchless gaze and fluttering hair.

'Were these two born in the Danaan land, Or have they breathed the mortal air?'

'Vex them no longer,' Niamh said, And sighing bowed her gentle head, And sighing laid the pearly tip Of one long finger on my lip.

But now the moon like a white rose shone In the pale west, and the sun's rim sank, And clouds arrayed their rank on rank About his fading crimson ball: The floor of Almhuin's hosting hall Was not more level than the sea, As, full of loving fantasy, And with low murmurs, we rode on, Where many a trumpet-twisted shell That in immortal silence sleeps Dreaming of her own melting hues, Her golds, her ambers, and her blues, Pierced with soft light the shallowing deeps. But now a wandering land breeze came And a far sound of feathery quires; It seemed to blow from the dying flame, They seemed to sing in the smouldering fires. The horse towards the music raced, Neighing along the lifeless waste; Like sooty fingers, many a tree Rose ever out of the warm sea; And they were trembling ceaselessly, As though they all were beating time, Upon the centre of the sun, To that low laughing woodland rhyme.

And, now o We cantered The reason Round ever Or clung th While roun Like crops And ponder Upon their And told th And murm And on the With bends And carven Of bitterns And swans And where We tied th And Niaml Out of a li And then a Over the b A whisper And ever n And from Of men an And singin Their brow Their cloak And trimn And when Was dim v

They finge

And, now our wandering hours were done, We cantered to the shore, and knew The reason of the trembling trees: Round every branch the song-birds flew, Or clung thereon like swarming bees; While round the shore a million stood Like drops of frozen rainbow light, And pondered in a soft vain mood Upon their shadows in the tide, And told the purple deeps their pride, And murmured snatches of delight; And on the shores were many boats With bending sterns and bending bows, And carven figures on their prows Of bitterns, and fish-eating stoats, And swans with their exultant throats: And where the wood and waters meet We tied the horse in a leafy clump, And Niamh blew three merry notes Out of a little silver trump; And then an answering whispering flew Over the bare and woody land, A whisper of impetuous feet, And ever nearer, nearer grew; And from the woods rushed out a band Of men and ladies, hand in hand, And singing, singing all together; Their brows were white as fragrant milk, Their cloaks made out of yellow silk, And trimmed with many a crimson feather; And when they saw the cloak I wore Was dim with mire of a mortal shore, They fingered it and gazed on me

And laughed like murmurs of the sea;
But Niamh with a swift distress
Bid them away and hold their peace;
And when they heard her voice they ran
And knelt there, every girl and man,
And kissed, as they would never cease,
Her pearl-pale hand and the hem of her dress.
She bade them bring us to the hall
Where Aengus dreams, from sun to sun,
A Druid dream of the end of days
When the stars are to wane and the world be done.

They led us by long and shadowy ways Where drops of dew in myriads fall, And tangled creepers every hour Blossom in some new crimson flower, And once a sudden laughter sprang From all their lips, and once they sang Together, while the dark woods rang, And made in all their distant parts, With boom of bees in honey-marts, A rumour of delighted hearts. And once a lady by my side Gave me a harp, and bid me sing, And touch the laughing silver string; But when I sang of human joy A sorrow wrapped each merry face, And, Patrick! by your beard, they wept, Until one came, a tearful boy; 'A sadder creature never stept Than this strange human bard,' he cried; And caught the silver harp away, And, weeping over the white strings, hurled It down in a l That kept din And each one 'O saddest ha Sleep there til

And now, still A beautiful y A house of w One hand up And one a scowild flames Like to a mer Of dancers le And men and And showed And with low And kissed if And touched

He held that
'Joy drowns to
And fills with
And wakes to
And stirs the
And makes to
And for the
And rolls alo
And makes to
And if joy wo
There were a
And Earth a

And in some

It down in a leaf-hid, hollow place That kept dim waters from the sky; And each one said, with a long, long sigh, 'O saddest harp in all the world, Sleep there till the moon and the stars die!'

And now, still sad, we came to where A beautiful young man dreamed within A house of wattles, clay, and skin; One hand upheld his beardless chin, And one a sceptre flashing out Wild flames of red and gold and blue, Like to a merry wandering rout Of dancers leaping in the air; And men and ladies knelt them there And showed their eyes with teardrops dim, And with low murmurs prayed to him, And kissed the sceptre with red lips, And touched it with their finger-tips.

He held that flashing sceptre up.

'Joy drowns the twilight in the dew,
And fills with stars night's purple cup,
And wakes the sluggard seeds of corn,
And stirs the young kid's budding horn,
And makes the infant ferns unwrap,
And for the peewit paints his cap,
And rolls along the unwieldy sun,
And makes the little planets run:
And if joy were not on the earth,
There were an end of change and birth,
And Earth and Heaven and Hell would die,
And in some gloomy barrow lie

Folded like a frozen fly; Then mock at Death and Time with glances And wavering arms and wandering dances.

'Men's hearts of old were drops of flame That from the saffron morning came, Or drops of silver joy that fell Out of the moon's pale twisted shell; But now hearts cry that hearts are slaves, And toss and turn in narrow caves; But here there is nor law nor rule, Nor have hands held a weary tool; And here there is nor Change nor Death, But only kind and merry breath, For joy is God and God is joy.' With one long glance for girl and boy And the pale blossom of the moon, He fell into a Druid swoon.

And in a wild and sudden dance
We mocked at Time and Fate and Chance
And swept out of the wattled hall
And came to where the dewdrops fall
Among the foamdrops of the sea,
And there we hushed the revelry;
And, gathering on our brows a frown,
Bent all our swaying bodies down,
And to the waves that glimmer by
That sloping green De Danaan sod
Sang, 'God is joy and joy is God,
And things that have grown sad are wicked,
And things that fear the dawn of the morrow
Or the grey wandering osprey Sorrow.'

We danced t The damask Like crimson And bending Bending over With a swif From dewy Fall the leav On the dead But never, n Heaped besi Shall fall the For neither And all listl And we fear Nor the gre

The dance v The ever-su Until the to Upon the w And, gather We flung or And sang us In our raised Of milky b As thus our Across your Shake the lo He rules yo He holds yo Each one w Each one w We danced to where in the winding thicket The damask roses, bloom on bloom, Like crimson meteors hang in the gloom, And bending over them softly said, Bending over them in the dance, With a swift and friendly glance From dewy eves: 'Upon the dead Fall the leaves of other roses. On the dead dim earth encloses: But never, never on our graves, Heaped beside the glimmering waves, Shall fall the leaves of damask roses. For neither Death nor Change comes near us, And all listless hours fear us, And we fear no dawning morrow, Nor the grey wandering osprey Sorrow.'

The dance wound through the windless woods; The ever-summered solitudes; Until the tossing arms grew still Upon the woody central hill; And, gathered in a panting band, We flung on high each waving hand, And sang unto the starry broods. In our raised eyes there flashed a glow Of milky brightness to and fro As thus our song arose: 'You stars, Across your wandering ruby cars Shake the loose reins: you slaves of God, He rules you with an iron rod, He holds you with an iron bond, Each one woven to the other, Each one woven to his brother

Like bubbles in a frozen pond; But we in a lonely land abide Unchainable as the dim tide, With hearts that know nor law nor rule, And hands that hold no wearisome tool, Folded in love that fears no morrow, Nor the grey wandering osprey Sorrow.'

O Patrick! for a hundred years I chased upon that woody shore The deer, the badger, and the boar. O Patrick! for a hundred years At evening on the glimmering sands, Beside the piled-up hunting spears, These now outworn and withered hands Wrestled among the island bands. O Patrick! for a hundred years We went a-fishing in long boats With bending sterns and bending bows, And carven figures on their prows Of bitterns and fish-eating stoats. O Patrick! for a hundred years The gentle Niamh was my wife; But now two things devour my life; The things that most of all I hate: Fasting and prayers.

S. Patrick.

Tell on.

Oisin. Yes, yes,
For these were ancient Oisin's fate
Loosed long ago from Heaven's gate,
For his last days to lie in wait.

When one I found in Of dreamy From some I turned it Of war we Remember Along the Equal to g Thereon yo And caugh Save only: In murmu We passed And found For we kn I heard on With all t And wrap; With hoof Over the s Under the The Immo By rivers a Some dans Some wan Or sat in Each forel Bent down And sang,

Watched '

Was slum

And, as th

When one day by the tide I stood, I found in that forgetfulness Of dreamy feam a staff of wood From some dead warrior's broken lance: I turned it in my hands; the stains Of war were on it, and I wept, Remembering how the Fenians stept Along the blood-bedabbled plains, Equal to good or grievous chance: Thereon young Niamh softly came And caught my hands, but spake no word Save only many times my name, In murmurs, like a frighted bird. We passed by woods, and lawns of clover, And found the horse and bridled him. For we knew well the old was over. I heard one say, 'His eyes grow dim With all the ancient sorrow of men'; And wrapped in dreams rode out again With hoofs of the pale findrinny Over the glimmering purple sea. Under the golden evening light, The Immortals moved among the fountains By rivers and the woods' old night; Some danced like shadows on the mountains, Some wandered ever hand in hand: Or sat in dreams on the pale strand, Each forehead like an obscure star Bent down above each hooked knee, And sang, and with a dreamy gaze Watched where the sun in a saffron blaze Was slumbering half in the sea-ways; And, as they sang, the painted birds

Kept time with their bright wings and feet; Like drops of honey came their words, But fainter than a young lamb's bleat.

'An old man stirs the fire to a blaze,
In the house of a child, of a friend, of a brother.
He has over-lingered his welcome; the days,
Grown desolate, whisper and sigh to each other;
He hears the storm in the chimney above,
And bends to the fire and shakes with the cold,
While his heart still dreams of battle and love,
And the cry of the hounds on the hills of old.

'But we are apart in the grassy places, Where care cannot trouble the least of our days, Or the softness of youth be gone from our faces, Or love's first tenderness die in our gaze. The hare grows old as she plays in the sun And gazes around her with eyes of brightness; Before the swift things that she dreamed of were done She limps along in an aged whiteness; A storm of birds in the Asian trees Like tulips in the air a-winging, And the gentle waves of the summer seas, That raise their heads and wander singing, Must murmur at last, "Unjust, unjust"; And "My speed is a weariness," falters the mouse, And the kingfisher turns to a ball of dust, And the roof falls in of his tunnelled house. But the love-dew dims our eyes till the day When God shall come from the sea with a sigh And bid the stars drop down from the sky, And the moon like a pale rose wither away.

Now, man And then av And now fla The youth a 'Gaze no m And kissed And her bri Before God Wars shado Who wedde And how th Upon the li Yet love an Rolled rour Yet sang no That has di With me in Before this Troubled h

Or hours p Shone man Woven into Rose in the About then And shiver Nor ceased And named

Whitened a

BOOK II

Now, man of croziers, shadows called our names And then away, away, like whirling flames; And now fled by, mist-covered, without sound. The youth and lady and the deer and hound; 'Gaze no more on the phantoms,' Niamh said, And kissed my eyes, and, swaving her bright head And her bright body, sang of faery and man Before God was or my old line began; Wars shadowy, vast, exultant; faeries of old Who wedded men with rings of Druid gold; And how those lovers never turn their eves Upon the life that fades and flickers and dies, Yet love and kiss on dim shores far away Rolled round with music of the sighing spray: Yet sang no more as when, like a brown bee That has drunk full, she crossed the misty sea With me in her white arms a hundred years Before this day; for now the fall of tears Troubled her song.

I do not know if days
Or hours passed by, yet hold the morning rays
Shone many times among the glimmering flowers
Woven into her hair, before dark towers
Rose in the darkness, and the white surf gleamed
About them; and the horse of Faery screamed
And shivered, knowing the Isle of Many Fears,
Nor ceased until white Niamh stroked his ears
And named him by sweet names.

one

A foaming tide Whitened afar with surge, fan-formed and wide,

337

Burst from a great door marred by many a blow
From mace and sword and pole-axe, long ago
When gods and giants warred. We rode between
The seaweed-covered pillars; and the green
And surging phosphorus alone gave light
On our dark pathway, till a countless flight
Of moonlit steps glimmered; and left and right
Dark statues glimmered over the pale tide
Upon dark thrones. Between the lids of one
The imaged meteors had flashed and run
And had disported in the stilly jet,
And the fixed stars had dawned and shone and set,
Since God made Time and Death and Sleep: the other
Stretched his long arm to where, a misty smother,
The stream churned, churned, and churned—his lips

apart, As though he told his never-slumbering heart Of every foamdrop on its misty way. Tying the horse to his vast foot that lay Half in the unvesselled sea, we climbed the stair And climbed so long, I thought the last steps were Hung from the morning star; when these mild words Fanned the delighted air like wings of birds: 'My brothers spring out of their beds at morn, A-murmur like young partridge: with loud horn They chase the noontide deer; And when the dew-drowned stars hang in the air Look to long fishing-lines, or point and pare An ashen hunting spear. O sigh, O fluttering sigh, be kind to me; Flutter along the froth lips of the sea, And shores the froth lips wet:

Ah, touch the And shake the When you he Flutter along And home to And in the seand tell me The saddest

A lady with And face tha And a sad m As any rudd And she wit To two old That with d Few feathers For their dis

'I bring deli

Neither the Nor the hig My enemy Jabber and For he is st That sprans And I must Until the g Hearing Ae

'Is he so dr

And stay a little while, and bid them weep:

Ah, touch their blue-veined eyelids if they sleep, And shake their coverlet.

When you have told how I weep endlessly, Flutter along the froth lips of the sea And home to me again, And in the shadow of my hair lie hid, And tell me that you found a man unbid, The saddest of all men.'

A lady with soft eyes like funeral tapers,
And face that seemed wrought out of moonlit vapours,
And a sad mouth, that fear made tremulous
As any ruddy moth, looked down on us;
And she with a wave-rusted chain was tied
To two old eagles, full of ancient pride,
That with dim eyeballs stood on either side.
Few feathers were on their dishevelled wings,
For their dim minds were with the ancient things.

'I bring deliverance,' pearl-pale Niamh said.

'Neither the living, nor the unlabouring dead, Nor the high gods who never lived, may fight My enemy and hope; demons for fright Jabber and scream about him in the night; For he is strong and crafty as the seas That sprang under the Seven Hazel Trees, And I must needs endure and hate and weep, Until the gods and demons drop asleep, Hearing Aed touch the mournful strings of gold.'

'Is he so dreadful?'

'Be not over-bold,

And thereon I:

'This demon shall be battered till he die,
And his loose bulk be thrown in the loud tide.'

'Flee from him,' pearl-pale Niamh weeping cried, 'For all men flee the demons'; but moved not My angry king-remembering soul one jot. There was no mightier soul of Heber's line; Now it is old and mouse-like. For a sign I burst the chain: still earless, nerveless, blind, Wrapped in the things of the unhuman mind, In some dim memory or ancient mood, Still earless, nerveless, blind, the eagles stood.

And then we climbed the stair to a high door;
A hundred horsemen on the basalt floor
Beneath had paced content: we held our way
And stood within: clothed in a misty ray
I saw a foam-white seagull drift and float
Under the roof, and with a straining throat
Shouted, and hailed him: he hung there a star,
For no man's cry shall ever mount so far;
Not even your God could have thrown down that hall;
Stabling His unloosed lightnings in their stall,
He had sat down and sighed with cumbered heart,
As though His hour were come.

We sought the part
That was most distant from the door; green slime
Made the way slippery, and time on time
Showed prints of sea-born scales, while down
through it

The captive Like a small A momenta Under the That woma And in the Making a v Passed und And came Burning be Laid it and No centuri Thereon in That sea-go Sprang dri Out of the Rooted in The might And at his Under a cr

With bow shone, But she what she what had neith Under the Of the lou Lest they: And thrus A dome m Where sha

Looked do

But only e

The captive's journeys to and fro were writ Like a small river, and where feet touched came A momentary gleam of phosphorus flame. Under the deepest shadows of the hall That woman found a ring hung on the wall, And in the ring a torch, and with its fiare Making a world about her in the air, Passed under the dim doorway, out of sight, And came again, holding a second light Burning between her fingers, and in mine Laid it and sighed: I held a sword whose shine No centuries could dim, and a word ran Thereon in Ogham letters, 'Manannan'; That sea-god's name, who in a deep content Sprang dripping, and, with captive demons sent Out of the sevenfold seas, built the dark hall Rooted in foam and clouds, and cried to all The mightier masters of a mightier race; And at his cry there came no milk-pale face Under a crown of thorns and dark with blood, But only exultant faces.

Niamh stood
With bowed head, trembling when the white blade shone.

But she whose hours of tenderness were gone Had neither hope nor fear. I bade them hide Under the shadows till the tumults died Of the loud-crashing and earth-shaking fight, Lest they should look upon some dreadful sight; And thrust the torch between the slimy flags. A dome made out of endless carven jags, Where shadowy face flowed into shadowy face, Looked down on me; and in the self-same place

I waited hour by hour, and the high dome, Windowless, pillarless, multitudinous home Of faces, waited; and the leisured gaze Was loaded with the memory of days Buried and mighty. When through the great door The dawn came in, and glimmered on the floor With a pale light, I journeyed round the hall And found a door deep sunken in the wall, The least of doors; beyond on a dim plain A little runnel made a bubbling strain, And on the runnel's stony and bare edge A dusky demon dry as a withered sedge Swayed, crooning to himself an unknown tongue: In a sad revelry he sang and swung Bacchant and mournful, passing to and fro His hand along the runnel's side, as though The flowers still grew there: far on the sea's waste Shaking and waving, vapour vapour chased, While high frail cloudlets, fed with a green light, Like drifts of leaves, immovable and bright, Hung in the passionate dawn. He slowly turned: A demon's leisure: eyes, first white, now burned Like wings of kingfishers; and he arose Barking. We trampled up and down with blows Of sword and brazen battle-axe, while day Gave to high noon and noon to night gave way; And when he knew the sword of Manannan Amid the shades of night, he changed and ran Through many shapes; I lunged at the smooth throat Of a great eel; it changed, and I but smote A fir-tree roaring in its leafless top; And thereupon I drew the livid chop Of a drowned dripping body to my breast;

Horror from I Had surged w Through hear Lest Niamh s

Those two car And healed m That feed wh Then in that We lav on sk Brewed by th Upon the lip And then on And when th Rolling his f We sang the And all the e But now the With barren In what land Of ravening For all your And wander Hopeless for For he is we On the anvi

S. Patrick.

Are choked

For God has

Go cast you

For He has

Horror from horror grew; but when the west Had surged up in a plumy fire, I drave Through heart and spine; and cast him in the wave Lest Niamh shudder.

Full of hope and dread Those two came carrying wine and meat and bread, And healed my wounds with unquents out of flowers That feed white moths by some De Danaan shrine; Then in that hall, lit by the dim sea-shine, We lay on skins of otters, and drank wine, Brewed by the sea-gods, from huge cups that lay Upon the lips of sea-gods in their day; And then on heaped-up skins of otters slept. And when the sun once more in saffron stept, Rolling his flagrant wheel out of the deep, We sang the loves and angers without sleep, And all the exultant labours of the strong. But now the lying clerics murder song With barren words and flatteries of the weak. In what land do the powerless turn the beak Of ravening Sorrow, or the hand of Wrath? For all your croziers, they have left the path And wander in the storms and clinging snows, Hopeless for ever: ancient Oisin knows, For he is weak and poor and blind, and lies On the anvil of the world.

S. Patrick. Be still: the skies
Are choked with thunder, lightning, and fierce wind,
For God has heard, and speaks His angry mind;
Go cast your body on the stones and pray,
For He has wrought midnight and dawn and day.

Oisin. Saint, do you weep? I hear amid the thunder The Fenian horses; armour torn asunder; Laughter and cries. The armies clash and shock, And now the daylight-darkening ravens flock. Cease, cease, O mournful, laughing Fenian horn!

We feasted for three days. On the fourth morn I found, dropping sea-foam on the wide stair, And hung with slime, and whispering in his hair, That demon dull and unsubduable; And once more to a day-long battle fell, And at the sundown threw him in the surge, To lie until the fourth morn saw emerge His new-healed shape; and for a hundred years So warred, so feasted, with nor dreams nor fears, Nor languor nor fatigue: an endless feast, An endless war.

The hundred years had ceased; I stood upon the stair: the surges bore A beech-bough to me, and my heart grew sore, Remembering how I had stood by white-haired Finn Under a beech at Almhuin and heard the thin Outcry of bats.

And then young Niamh came Holding that horse, and sadly called my name; I mounted, and we passed over the lone And drifting greyness, while this monotone, Surly and distant, mixed inseparably Into the clangour of the wind and sea.

'I hear my soul drop down into decay, And Manannan's dark tower, stone after stone, Gather sea-slim And the moon That all be over

'But till the mo War on the mi And they have Light is man's His purpose dra

And then lost I To the Island of The Islands of Are empty of a

Is the Island of

And on my bos

FLED foam und and milky High as the s glances the And those that pale distan

The immortal faces, and

Gather sea-slime and fall the seaward way, And the moon goad the waters night and day, That all be overthrown.

'But till the moon has taken all, I wage War on the mightiest men under the skies, And they have fallen or fled, age after age. Light is man's love, and lighter is man's rage; His purpose drifts and dies.'

And then lost Niamh murmured, 'Love, we go To the Island of Forgetfulness, for lo! The Islands of Dancing and of Victories Are empty of all power.'

'And which of these Is the Island of Content?'

'None know,' she said; And on my bosom laid her weeping head.

BOOK III

FLED foam underneath us, and round us, a wandering and milky smoke,

High as the saddle-girth, covering away from our glances the tide;

And those that fled, and that followed, from the foampale distance broke;

The immortal desire of Immortals we saw in their faces, and sighed.

I mused on the chase with the Fenians, and Bran, Sceolan, Lomair,

And never a song sang Niamh, and over my finger-tips Came now the sliding of tears and sweeping of mistcold hair,

And now the warmth of sighs, and after the quiver of lips.

Were we days long or hours long in riding, when, rolled in a grisly peace,

An isle lay level before us, with dripping hazel and oak? And we stood on a sea's edge we saw not; for whiter than new-washed fleece

Fled foam underneath us, and round us, a wandering and milky smoke.

And we rode on the plains of the sea's edge; the sea's edge barren and grey,

Grey sand on the green of the grasses and over the dripping trees,

Dripping and doubling landward, as though they would hasten away,

Like an army of old men longing for rest from the moan of the seas.

But the trees grew taller and closer, immense in their wrinkling bark;

Dropping; a murmurous dropping; old silence and that one sound;

For no live creatures lived there, no weasels moved in the dark:

Long sighs arose in our spirits, beneath us bubbled the ground.

And the ears of the hollow night,

For, as drift from the world and

Ceased on our har leaf, the light,

And the stars were the world was

Till the horse gave of the hazel a A valley flowed do

long grass lay Under the starligh ing folk,

Their naked and heaped in the

And by them w shield and bla And dew-blanche

three years of Could sleep on a

and inlaid, And more come bronze and s

And each of the fourscore me

The tops of their the claws of

And the ears of the horse went sinking away in the hollow night,

For, as drift from a sailor slow drowning the gleams of the world and the sun,

Ceased on our hands and our faces, on hazel and oak leaf, the light,

And the stars were blotted above us, and the whole of the world was one.

Till the horse gave a whinny; for, cumbrous with stems of the hazel and oak,

A valley flowed down from his hoofs, and there in the long grass lay,

Under the starlight and shadow, a monstrous slumbering folk,

Their naked and gleaming bodies poured out and heaped in the way.

And by them were arrow and war-axe, arrow and shield and blade:

And dew-blanched horns, in whose hollow a child of three years old

Could sleep on a couch of rushes, and all inwrought and inlaid,

And more comely than man can make them with bronze and silver and gold.

And each of the huge white creatures was huger than fourscore men;

The tops of their ears were feathered, their hands were the claws of birds, And, shaking the plumes of the grasses and the leaves of the mural glen,

The breathing came from those bodies, long warless, grown whiter than curds.

The wood was so spacious above them, that He who has stars for His flocks

Could fondle the leaves with His fingers, nor go from His dew-cumbered skies;

So long were they sleeping, the owls had builded their nests in their locks,

Filling the fibrous dimness with long generations of eyes.

And over the limbs and the valley the slow owls wandered and came,

Now in a place of star-fire, and now in a shadow-place wide;

And the chief of the huge white creatures, his knees in the soft star-flame,

Lay loose in a place of shadow: we drew the reins by his side.

Golden the nails of his bird-claws, flung loosely along the dim ground;

In one was a branch soft-shining with bells more many than sighs

In midst of an old man's bosom; owls ruffling and pacing around

Sidled their bodies against him, filling the shade with their eyes.

And my gaze was t since the world

In realms where t glamours by de

Have faces alive wi salt eye of man

Yet weary with pas seas were youn

And I gazed on the sung by the Se

I saw how those sluing in grasses of

Of wars with the v

Laid hands on the of unhuman sl

Snatching the horn note.

Came sound from the stirring of

`He, shaking the fo of his throat,

Watched me with his eyes.

I cried, 'Come out gold!

And tell of your works of your

And my gaze was thronged with the sleepers; no, not since the world began,

In realms where the handsome were many, nor in glamours by demons flung,

Have faces alive with such beauty been known to the salt eye of man,

Yet weary with passions that faded when the sevenfold seas were young.

And I gazed on the bell-branch, sleep's forebear, far sung by the Sennachies.

I saw how those slumberers, grown weary, there camping in grasses deep,

Of wars with the wide world and pacing the shores of the wandering seas,

Laid hands on the bell-branch and swayed it, and fed of unhuman sleep.

Snatching the horn of Niamh, I blew a long lingering note.

Came sound from those monstrous sleepers, a sound like the stirring of flies.

He, shaking the fold of his lips, and heaving the pillar of his throat.

Watched me with mournful wonder out of the wells of his eyes.

I cried, 'Come out of the shadow, king of the nails of gold!

And tell of your goodly household and the goodly works of your hands,

That we may muse in the starlight and talk of the battles of old;

Your questioner, Oisin, is worthy, he comes from the Fenian lands.'

Half open his eyes were, and held me, dull with the smoke of their dreams;

His lips moved slowly in answer, no answer out of them came;

Then he swayed in his fingers the bell-branch, slow dropping a sound in faint streams

Softer than snow-flakes in April and piercing the marrow like flame.

Wrapt in the wave of that music, with weariness more than of earth,

The moil of my centuries filled me; and gone like a sea-covered stone

Were the memories of the whole of my sorrow and the memories of the whole of my mirth,

And a softness came from the starlight and filled me full to the bone.

In the roots of the grasses, the sorrels, I laid my body as low:

And the pearl-pale Niamh lay by me, her brow on the midst of my breast;

And the horse was gone in the distance, and years after years 'gan flow;

Square leaves of the ivy moved over us, binding us down to our rest.

And, man of the n I forgot

How the fetlocks fallen on faller

How the falconer the heron's plo

And the name of Conchubar's s

And, man of the I

That the spear-sha out of osier ar

How the hammer head's burning

How the slow, be evening tide.

But in dreams, m

Moved round me winter tales;

Came by me the l

Or moved as they the tempest v

Came Blanid, Ma old time slur

Cook Barach, the

And, man of the many white croziers, a century there I forgot

How the fetlocks drip blocd in the battle, when the fallen on fallen lie rolled;

How the falconer follows the falcon in the weeds of the heron's plot,

And the name of the demon whose hammer made Conchubar's sword-blade of old.

And, man of the many white croziers, a century there

I forgot
That the spear-shaft is made out of ashwood, the shield
out of osier and hide;

How the hammers spring on the anvil, on the spearhead's burning spot;

How the slow, blue-eyed oxen of Finn low sadly at evening tide.

But in dreams, mild man of the croziers, driving the dust with their throngs,

Moved round me, of seamen or landsmen, all who are winter tales;

Came by me the kings of the Red Branch, with roaring of laughter and songs,

Or moved as they moved once, love-making or piercing the tempest with sails.

Came Blanid, Mac Nessa, tall Fergus who feastward of old time slunk,

Cook Barach, the traitor; and warward, the spittle on his beard never dry,

Dark Balor, as old as a forest, car-borne, his mighty head sunk

Helpless, men lifting the lids of his weary and deathmaking eye.

And by me, in soft red raiment, the Fenians moved in loud streams,

And Grania, walking and smiling, sewed with her needle of bone.

So lived I and lived not, so wrought I and wrought not, with creatures of dreams,

In a long iron sleep, as a fish in the water goes dumb as a stone.

At times our slumber was lightened. When the sun was on silver or gold;

When brushed with the wings of the owls, in the dimness they love going by;

When a glow-worm was green on a grass-leaf, lured from his lair in the mould;

Half wakening, we lifted our eyelids, and gazed on the grass with a sigh.

So watched I when, man of the croziers, at the heel of a century fell,

Weak, in the midst of the meadow, from his miles in the midst of the air,

A starling like them that forgathered 'neath a moon waking white as a shell

When the Fenians made foray at morning with Bran, Sceolan, Lomair.

I awoke: the strange distance ran,

Thrusting his nose bosom deep

That once more mess of man,

And that I would their dews dro

O, had you seen h waters are whi Lord of the crozie

and wept:

But, the bird in n alone that deli

Of twilight and sli patiently steps

I cried, 'O Niam houred day,

I must gaze on the

In the Fenians' di boards and pl

Ah, sweet to me n

'Like me were son isle,

Remembering its to threadbare I awoke: the strange horse without summons out of the distance ran,

Thrusting his nose to my shoulder; he knew in his bosom deep

That once more moved in my bosom the ancient sadness of man,

And that I would leave the Immortals, their dimness, their dews dropping sleep.

O, had you seen beautiful Niamh grow white as the waters are white,

Lord of the croziers, you even had lifted your hands and wept:

But, the bird in my fingers, I mounted, remembering alone that delight

Of twilight and slumber were gone, and that hoofs impatiently stept.

I cried, 'O Niamh! O white one! if only a twelve-housed day,

I must gaze on the beard of Finn, and move where the old men and young

In the Fenians' dwellings of wattle lean on the chessboards and play,

Ah, sweet to me now were even bald Conan's slanderous tongue!

'Like me were some galley forsaken far off in Meridian isle,

Remembering its long-oared companions, sails turning to threadbare rags;

No more to crawl on the seas with long oars mile after mile,

But to be amid shooting of flies and flowering of rushes and flags.'

Their motionless eyeballs of spirits grown mild with mysterious thought,

Watched her those seamless faces from the valley's glimmering girth;

As she murmured, 'O wandering Oisin, the strength of the bell-branch is naught,

For there moves alive in your fingers the fluttering sadness of earth.

'Then go through the lands in the saddle and see what the mortals do,

And softly come to your Niamh over the tops of the tide;

But weep for your Niamh, O Oisin, weep; for if only your shoe

Brush lightly as haymouse earth's pebbles, you will come no more to my side.

'O flaming lion of the world, O when will you turn to your rest?'

I saw from a distant saddle; from the earth she made her moan:

'I would die like a small withered leaf in the autumn, for breast unto breast

We shall mingle no more, nor our gazes empty their sweetness lone

'In the isles of the

Were the winds
who sleeps or
Nor lost in the s

sea's vague d O flaming lion of

your rest?'

The wailing grev wrinkling ba

Where ever is n that one sour

For no live create dark;

In a reverie forg ground.

And I rode by the barren and s

Grey sand on to dripping tre

Dripping and would haste

Like an army of the

And the winds r

As my mind ma

'In the isles of the farthest seas where only the spirits come.

Were the winds less soft than the breath of a pigeon who sleeps on her nest,

Nor lost in the star-fires and odours the sound of the sea's vague drum?

O flaming lion of the world, O when will you turn to your rest?'

The wailing grew distant; I rode by the woods of the wrinkling bark,

Where ever is murmurous dropping, old silence and that one sound;

For no live creatures live there, no weasels move in the dark:

In a reverie forgetful of all things, over the bubbling ground.

And I rode by the plains of the sea's edge, where all is barren and grey,

Grey sand on the green of the grasses and over the dripping trees,

Dripping and doubling landward, as though they would hasten away,

Like an army of old men longing for rest from the moan of the seas.

And the winds made the sands on the sea's edge turning and turning go,

As my mind made the names of the Fenians. Far from the hazel and oak,

I rode away on the surges, where, high as the saddlebow,

Fled foam underneath me, and round me, a wandering and milky smoke.

Long fled the foam-flakes around me, the winds fled out of the vast,

Snatching the bird in secret; nor knew I, embosomed apart,

When they froze the cloth on my body like armour riveted fast,

For Remembrance, lifting her leanness, keened in the gates of my heart.

Till, fattening the winds of the morning, an odour of new-mown hay

Came, and my forehead fell low, and my tears like berries fell down;

Later a sound came, half lost in the sound of a shore far away,

From the great grass-barnacle calling, and later the shore-weeds brown.

If I were as I once was, the strong hoofs crushing the sand and the shells,

Coming out of the sea as the dawn comes, a chaunt of love on my lips,

Not coughing, my head on my knees, and praying, and wroth with the bells,

I would leave no saint's head on his body from Rachlin to Bera of ships.

Making way from bridle-path

Much wondering woodwork m

Your bell-mounte cairn and the

And a small and tock and space

Or weeding or much-toil we While in this p

glorious, the

Awaiting in pat caught in yo

Went the laught roaring of w

And before I were eyes so bright

Came after the h

And I rode and hunt wolves

So sleep thee by a long time

A whitebeard so of his face a

And in folds ro

Making way from the kindling surges, I rode on a bridle-path

Much wondering to see upon all hands, of wattles and

woodwork made,

Your bell-mounted churches, and guardless the sacred cairn and the rath,

And a small and a feeble populace stooping with mattock and spade,

Or weeding or ploughing with faces a-shining with much-toil wet;

While in this place and that place, with bodies unglorious, their chieftains stood,

Awaiting in patience the straw-death, croziered one,

caught in your net:

Went the laughter of scorn from my mouth like the roaring of wind in a wood.

And before I went by them so huge and so speedy with eyes so bright,

Came after the hard gaze of youth, or an old man lifted his head:

And I rode and I rode, and I cried out, 'The Fenians hunt wolves in the night,

So sleep thee by daytime. A voice cried, 'The Fenians a long time are dead.'

A whitebeard stood hushed on the pathway, the flesh of his face as dried grass,

And in folds round his eyes and his mouth, he sad as a child without milk;

And the dreams of the islands were gone, and I knew how men sorrow and pass,

And their hound, and their horse, and their love, and

their eyes that glimmer like silk.

And wrapping my face in my hair, I murmured, 'In old age they ceased';

And my tears were larger than berries, and I murmured, 'Where white clouds lie spread

On Crevroe or broad Knockfefin, with many of old they feast

On the floors of the gods.' He cried, 'No, the gods a long time are dead.'

And lonely and longing for Niamh, I shivered and turned me about,

The heart in me longing to leap like a grasshopper into her heart;

I turned and rode to the westward, and followed the sea's old shout

Till I saw where Maeve lies sleeping till starlight and midnight part.

And there at the foot of the mountain, two carried a sack full of sand,

They bore it with staggering and sweating, but fell with their burden at length.

Leaning down from the gem-studded saddle, I flung it five yards with my hand,

With a sob for men waxing so weakly, a sob for the Fenians' old strength.

The rest you ha when divide

I fell on the path mer fly;

And my years th walked on

A creeping old his beard n

How the men of with its be

Sorry place, wh eyes the cr

What place have Lomair?

Speak, you too surrounded

S. Patrick. Where the burning

Where the de burning st

Watching the smile on (

Between them angels wh

Oisin. Put the st O cleric,

The war-songs making c

Innumerable, them sha

And demons beneath t The rest you have heard of, O croziered man; how, when divided the girth,

I fell on the path, and the horse went away like a summer fly;

And my years three hundred fell on me, and I rose, and walked on the earth,

A creeping old man, full of sleep, with the spittle on his beard never dry.

How the men of the sand-sack showed me a church with its belfry in air;

Sorry place, where for swing of the war-axe in my dim eyes the crozier gleams;

What place have Caoilte and Conan, and Bran, Sceolan, Lomair?

Speak, you too are old with your memories, an old man surrounded with dreams.

S. Patrick. Where the flesh of the footsole clingeth on the burning stones is their place;

Where the demons whip them with wires on the burning stones of wide Hell,

Watching the blessed ones move far off, and the smile on God's face,

Between them a gateway of brass, and the howl of the angels who fell.

Oisin. Put the staff in my hands; for I go to the Fenians, O cleric, to chaunt

The war-songs that roused them of old; they will rise, making clouds with their breath,

Innumerable, singing, exultant; the clay underneath them shall pant,

And demons be broken in pieces, and trampled beneath them in death.

And demons afraid in their darkness; deep horror of eyes and of wings,

Afraid, their ears on the earth laid, shall listen and

rise up and weep;

Hearing the shaking of shields and the quiver of stretched bowstrings,

Hearing Hell loud with a murmur, as shouting and mocking we sweep.

We will tear out the flaming stones, and batter the gateway of brass

And enter, and none sayeth 'No' when there enters the strongly armed guest;

Make clean as a broom cleans, and march on as oxen move over young grass;

Then feast, making converse of wars, and of old wounds, and turn to our rest.

S. Patrick. On the flaming stones, without refuge, the limbs of the Fenians are tost;

None war on the masters of Hell, who could break up the world in their rage;

But kneel and wear out the flags and pray for your soul that is lost

Through the demon love of its youth and its godless and passionate age.

Oisin. Ah me! to be shaken with coughing and broken with old age and pain,

Without laughter, a show unto children, alone with remembrance and fear;

All emptied of purple hours as a beggar's cloak in the rain,

As a hay-cock out on the flood, or a wolf sucked under a weir.

It were sad to gaz of old there;

I throw down the my body has

I will go to Caoi Lomair,

And dwell in the

It were sad to gaze on the blessed and no man I loved of old there;

I throw down the chain of small stones! when life in my body has ceased,

my body has ceased, I will go to Caoilte, and Conan, and Bran, Sceolan, Lomair,

And dwell in the house of the Fenians, be they in flames or at feast.

THE OLD AG

THE OLD AGE OF QUEEN MAEVE



THE OLD A

A certain poet in out Gathered a crowd in Talked of his country To some stringed inst A wall behind his bo A latticed window. I As though one listene Or let its meaning n

MAEVE the great of Between the walls In her high house Flickering with as Where the tired hor on the benche In comfortable sle But that great que Had paced from Though now in hoshe had been beat That's all but got And the fool heat But soft beauty a She could have co

Whatever woman And yet had been Fashioned to be

THE OLD AGE OF QUEEN MAEVE

A certain poet in outlandish clothes
Gathered a crowd in some Byzantine lane,
Talked of his country and its people, sang
To some stringed instrument none there had seen,
A wall behind his back, over his head
A latticed window. His glance went up at times
As though one listened there, and his voice sank
Or let its meaning mix into the strings.

MAEVE the great queen was pacing to and fro, Between the walls covered with beaten bronze. In her high house at Cruachan; the long hearth, Flickering with ash and hazel, but half showed Where the tired horse-boys lay upon the rushes, Or on the benches underneath the walls. In comfortable sleep; all living slept But that great queen, who more than half the night Had paced from door to fire and fire to door. Though now in her old age, in her young age She had been beautiful in that old way That's all but gone; for the proud heart is gone, And the fool heart of the counting-house fears all But soft beauty and indolent desire. She could have called over the rim of the world Whatever woman's lover had hit her fancy. And yet had been great-bodied and great-limbed, Fashioned to be the mother of strong children;

And she'd had lucky eyes and a high heart, And wisdom that caught fire like the dried flax, At need, and made her beautiful and fierce, Sudden and laughing.

O unquiet heart,
Why do you praise another, praising her,
As if there were no tale but your own tale
Worth knitting to a measure of sweet sound?
Have I not bid you tell of that great queen
Who has been buried some two thousand years?

When night was at its deepest, a wild goose Cried from the porter's lodge, and with long clamour Shook the ale-horns and shields upon their hooks; But the horse-boys slept on, as though some power Had filled the house with Druid heaviness; And wondering who of the many-changing Sidhe Had come as in the old times to counsel her, Maeve walked, yet with slow footfall, being old, To that small chamber by the outer gate. The porter slept, although he sat upright With still and stony limbs and open eyes. Maeve waited, and when that ear-piercing noise Broke from his parted lips and broke again, She laid a hand on either of his shoulders, And shook him wide awake, and bid him say Who of the wandering many-changing ones Had troubled his sleep. But all he had to say Was that, the air being heavy and the dogs More still than they had been for a good month, He had fallen asleep, and, though he had dreamed nothing,

He could remember when he had had fine dreams.

It was before the time. Over the White-Ho

She turned away; h
That no god troubl
What matters were
Maeve walked thro
Lifted the curtain of
Remembering that
To many thousand
One that the gener
That work too diff
Might be accomplishe saw her husbar
And thought of da
And of that famou
Who had been the

Suddenly Ailell sp And not with his But with the burn Of those that, it is He said, 'High C A king of the Gre And with glad voi Of the far-wande As in the old day About my thresh The parted lips r For I am Aengus 'How may a mor Help them that It was before the time of the great war Over the White-Horned Bull and the Brown Bull.

She turned away; he turned again to sleep
That no god troubled now, and, wondering
What matters were afoot among the Sidhe,
Maeve walked through that great hall, and with a sig
Lifted the curtain of her sleeping-room,
Remembering that she too had seemed divine
To many thousand eyes, and to her own
One that the generations had long waited
That work too difficult for mortal hands
Might be accomplished. Bunching the curtain up
She saw her husband Ailell sleeping there,
And thought of days when he'd had a straight body,
And of that famous Fergus, Nessa's husband,
Who had been the lover of her middle life.

Suddenly Ailell spoke out of his sleep,
And not with his own voice or a man's voice,
But with the burning, live, unshaken voice
Of those that, it may be, can never age.
He said, 'High Queen of Cruachan and Magh Ai,
A king of the Great Plain would speak with you.'
And with glad voice Maeve answered him, 'What king
Of the far-wandering shadows has come to me,
As in the old days when they would come and go
About my threshold to counsel and to help?'
The parted lips replied, 'I seek your help,
For I am Aengus, and I am crossed in love.'
'How may a mortal whose life gutters out
Help them that wander with hand clasping hand,

Their haughty images that cannot wither, For all their beauty's like a hollow dream, Mirrored in streams that neither hail nor rain Nor the cold North has troubled?'

'I am from those rivers and I bid you call
The children of the Maines out of sleep,
And set them digging under Bual's hill.
We shadows, while they uproot his earthy house,
Will overthrow his shadows and carry off
Caer, his blue-eyed daughter that I love.
I helped your fathers when they built these walls,
And I would have your help in my great need,
Queen of high Cruachan.'

'I obey your will With speedy feet and a most thankful heart: For you have been, O Aengus of the birds, Our giver of good counsel and good luck.' And with a groan, as if the mortal breath Could but awaken sadly upon lips That happier breath had moved, her husband turned Face downward, tossing in a troubled sleep; But Maeve, and not with a slow feeble foot, Came to the threshold of the painted house Where her grandchildren slept, and cried aloud, Until the pillared dark began to stir With shouting and the clang of unhooked arms. She told them of the many-changing ones; And all that night, and all through the next day To middle night, they dug into the hill. At middle night great cats with silver claws, Bodies of shadow and blind eyes like pearls, Came up out of the hole, and red-eared hounds

With long white b Suddenly, and ran

The Maines' child With quaking join Till Maeve called The Maines' child Because Earth, cra Casts up a show a With holy shadow And when the upr She followed with Till it died out with the control of the

Friend of these m With equal couras For you, although Have all that grea For there is no his In any ancient book And when I've he Or fell into unhat 'She will grow old And when I'd wr. Half crazy with to Outrun the meast

Who stood amid Until two lovers With bodies mad About whose face Said, 'Aengus and To Maeve and to With long white bodies came out of the air Suddenly, and ran at them and harried them.

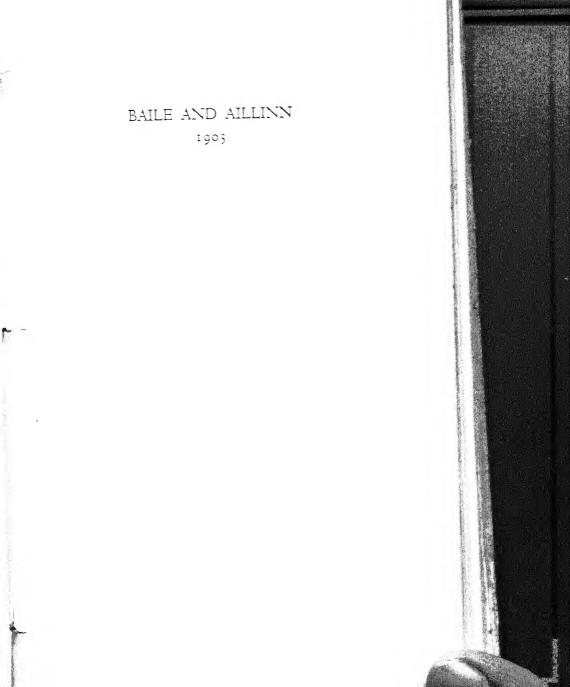
The Maines' children dropped their spades, and stood With quaking joints and terror-stricken faces, Till Maeve called out, 'These are but common men. The Maines' children have not dropped their spades Because Earth, crazy for its broken power, Casts up a show and the winds answer it With holy shadows.' Her high heart was glad, And when the uproar ran along the grass She followed with light footfail in the midst, Till it died out where an old thorn-tree stood.

Friend of these many years, you too had stood With equal courage in that whirling rout; For you, although you've not her wandering heart, Have all that greatness, and not hers alone, For there is no high story about queens In any ancient book but tells of you; And when I've heard how they grew old and died, Or fell into unhappiness, I've said, 'She will grow old and die, and she has wept!' And when I'd write it out anew, the words, Half crazy with the thought, She too has wept! Outrun the measure.

I'd tell of that great queen
Who stood amid a silence by the thorn
Until two lovers came out of the air
With bodies made out of soft fire. The one,
About whose face birds wagged their fiery wings,
Said, 'Aengus and his sweetheart give their thanks
To Maeve and to Maeve's household, owing all

In owing them the bride-bed that gives peace.' Then Maeve: 'O Aengus, Master of all lovers, A thousand years ago you held high talk With the first kings of many-pillared Cruachan. O when will you grow weary?'

They had vanished; But out of the dark air over her head there came A murmur of soft words and meeting lips. BAI



ARGUMENT. Balle Master of Love, wi among the dead, to that their hearts we

Nor the grey
Before my the Con the heir
Baile, who
And that m
Aillinn, who
Their love to
Of this or the
Because their
Being forbit
They bisses

I HARDLY

When the And the I Young Ba Called rat Rode out Of harper Imagined

To many That all

About the

BAILE AND AILLINN

ARGUMENT. Baile and Aillinn were lovers, but Aengus, the Master of Love, wishing them to be happy in his own land among the dead, told to each a story of the other's death, so that their hearts were broken and they died.

I HARDLY hear the curiew cry,
Nor the grey rush when the wind is high,
Before my thoughts begin to run
On the heir of Ulad, Buan's son,
Baile, who had the honey mouth;
And that mild woman of the south,
Aillinn, who was King Lugaid's heir.
Their love was never drowned in care
Of this or that thing, nor grew cold
Because their bodies had grown old.
Being forbid to marry on earth,
They blossomed to immortal mirth.

About the time when Christ was born, When the long wars for the White Horn And the Brown Bull had not yet come, Young Baile Honey-Mouth, whom some Called rather Baile Little-Land, Rode out of Emain with a band Of harpers and young men; and they Imagined, as they struck the way To many-pastured Muirthemne, That all things fell out happily.

And there, for all that fools had said, Baile and Aillinn would be wed.

They found an old man running there: He had ragged long grass-coloured hair; He had knees that stuck out of his hose; He had puddle-water in his shoes; He had half a cloak to keep him dry, Although he had a squirrel's eye.

O wandering birds and rushy beds, You put such folly in our heads With all this crying in the wind; No common love is to our mind, And our poor Kate or Nan is less Than any whose unhappiness Awoke the harp-strings long ago. Yet they that know all things but know That all this life can give us is A child's laughter, a woman's kiss. Who was it put so great a scorn In the grey reeds that night and morn Are trodden and broken by the herds, And in the light bodies of birds The north wind tumbles to and fro And pinches among hail and snow?

That runner said: 'I am from the south; I run to Baile Honey-Mouth,
To tell him how the girl Aillinn
Rode from the country of her kin,
And old and young men rode with her:
For all that country had been astir

If anybody he Had chosen But where it When they! An old man With: "You With someh A young ma" O lady, we And when I For any gen She fell and

Because a le Being tumb By its own And will b That is bac Baile's hear And he, be Was carrie Where the The braze His face b Of the ha For althou He always For on th And now Under a Before his

Although

For whor

If anybody half as fair
Had chosen a husband anywhere
But where it could see her every day.
When they had ridden a little way
An old man caught the horse's head
With: "You must home again, and wed
With somebody in your own land."
A young man cried and kissed her hand,
"O lady, wed with one of us";
And when no face grew piteous
For any gentle thing she spake,
She fell and died of the heart-break."

Because a lover's heart's worn out, Being tumbled and blown about By its own blind imagining, And will believe that anything That is bad enough to be true, is true, Baile's heart was broken in two; And he, being laid upon green boughs, Was carried to the goodly house Where the Hound of Ulad sat before The brazen pillars of his door, His face bowed low to weep the end Of the harper's daughter and her friend. For although years had passed away He always wept them on that day, For on that day they had been betrayed; And now that Honey-Mouth is laid Under a cairn of sleepy stone Before his eyes, he has tears for none, Although he is carrying stone, but two For whom the cairn's but heaped anew.

We hold, because our memory is
So full of that thing and of this,
That out of sight is out of mind.
But the grey rush under the wind
And the grey bird with crooked bill
Have such long memories that they still
Remember Deirdre and her man;
And when we walk with Kate or Nan
About the windy water-side,
Our hearts can hear the voices chide.
How could we be so soon content,
Who know the way that Naoise went?
And they have news of Deirdre's eyes,
Who being lovely was so wise—
Ah! wise, my heart knows well how wise.

Now had that old gaunt crafty one,
Gathering his cloak about him, run
Where Aillinn rode with waiting-maids,
Who amid leafy lights and shades
Dreamed of the hands that would unlace
Their bodices in some dim place
When they had come to the marriage-bed,
And harpers, pacing with high head
As though their music were enough
To make the savage heart of love
Grow gentle without sorrowing,
Imagining and pondering
Heaven knows what calamity;

'Another's hurried off,' cried he,
'From heat and cold and wind and wave;
They have heaped the stones above his grave

In Muirthemne In changeless (Baile, that was a But the gods le No waiting-ma Baile and Ailli For they shoul Where wild b Therefore it is That put this

Then seeing to Before her lov He ran and la To that high The Hill Seat Some god or That held the In old times

> That old man Two swans of Linked by a And with low Alighted on They knew h Tall, proud a Were hoverin That Edain, In the hid p

What shall I Scale rubbin In Muirthemne, and over it
In changeless Ogham letters writ—
Baile, that was of Rury's seed.
But the gods long ago decreed
No waiting-maid should ever spread
Baile and Aillinn's marriage-bed,
For they should clip and clip again
Where wild bees hive on the Great Plain.
Therefore it is but little news
That put this hurry in my shoes.'

Then seeing that he scarce had spoke Before her love-worn heart had broke, He ran and laughed until he came To that high hill the herdsmen name The Hill Seat of Leighin, because Some god or king had made the laws That held the land together there, In old times among the clouds of the air.

That old man climbed; the day grew dim; Two swans came flying up to him, Linked by a gold chain each to each, And with low murmuring laughing speech Alighted on the windy grass.

They knew him: his changed body was Tall, proud and ruddy, and light wings Were hovering over the harp-strings That Edain, Midhir's wife, had wove In the hid place, being crazed by love.

What shall I call them? fish that swim, Scale rubbing scale where light is dim

By a broad water-lily leaf;
Or mice in the one wheaten sheaf
Forgotten at the threshing-place;
Or birds lost in the one clear space
Of morning light in a dim sky;
Or, it may be, the eyelids of one eye,
Or the door-pillars of one house,
Or two sweet blossoming apple-boughs
That have one shadow on the ground;
Or the two strings that made one sound
Where that wise harper's finger ran.
For this young girl and this young man
Have happiness without an end,
Because they have made so good a friend.

They know all wonders, for they pass
The towery gates of Gorias,
And Findrias and Falias,
And long-forgotten Murias,
Among the giant kings whose hoard,
Cauldron and spear and stone and sword,
Was robbed before earth gave the wheat;
Wandering from broken street to street
They come where some huge watcher is,
And tremble with their love and kiss.

They know undying things, for they Wander where earth withers away, Though nothing troubles the great streams But light from the pale stars, and gleams From the holy orchards, where there is none But fruit that is of precious stone, Or apples of the sun and moon.

What were our of Quiet's wild here who when night On dappled skirt Far out under a While over the the And over the the And waving when Awaken wander To stir their co

And poets four A yew tree who But a wild app With its sweet And being in a A better time. After the death And that long They wrote on Made of the a All the love st

Let rush and bin
Of the harper's
Beloved, I am n
She is not wisen
And you are m
For all her wan
But I'd have bi
Those other two
Has lover lived
Like them that

What were our praise to them? They eat Quiet's wild heart, like daily meat; Who when night thickens are afloat On dappled skins in a glass boat, Far out under a windless sky; While over them birds of Aengus fly, And over the tiller and the prow, And waving white wings to and fro Awaken wanderings of light air. To stir their coverlet and their hair.

And poets found, old writers say,
A yew tree where his body lay;
But a wild apple hid the grass
With its sweet blossom where hers was;
And being in good heart, because
A better time had come again
After the deaths of many men,
And that long fighting at the ford.
They wrote on tablets of thin board,
Made of the apple and the yew,
All the love stories that they knew.

Let rush and bird cry out their fill
Of the harper's daughter if they will,
Beloved, I am not afraid of her.
She is not wiser nor lovelier,
And you are more high of heart than she,
For all her wanderings over-sea;
But I'd have bird and rush forget
Those other two; for never yet
Has lover lived, but longed to wive
Like them that are no more alive.

THE SHA

THE SHADOWY WATERS 1906

TO LADY GREGORY

I walked among the Shan-walla, where Gathers the wild do Shady Kyle-dortha; Where many bundr As though they had Where old age cann Where hazel and a Dim Paire-na-cart Their sudden frage Dim Pairc-na-tar Have seen immorti Dim Inchy wood, And marten-cat, a Wise Biddy Early Seven odours, seve I had not eyes like Yet dreamed that Moved round me My dreams were And the images I Of Forgael and I Moved round me And more I may The waters of sla Heavy like stone. How shall I nar I only know that And that you co Is Eden far awa From human the That run before In the last ridge I walked among the seven woods of Coole, Shan-walla, where a willow-bordered pond Gathers the wild duck from the winter dawn; Shady Kyle-dortha; sunnier Kyle-na-no, Where many bundred squirrels are as bappy As though they had been hidden by green boughs Where old age cannot find them; Pairc-na-lee, Where bazel and ash and privet blind the paths; Dim Pairc-nu-carraig, where the wild bees fling Their sudden fragrances on the green air; Dim Pairc-na-tarav, where enchanted eyes Have seen immortal, mild, proud shadows walk; Dim Inchy wood, that bides badger and fex And marten-eat, and borders that old wood Wise Biddy Early called the wicked wood: Seven odours, seven murmurs, seven woods. I had not eyes like those enchanted eyes. Yet dreamed that beings happier than men Moved round me in the shadows, and at night My dreams were cloven by voices and by fires; And the images I have weven in this story Of Forgael and Destora and the empty waters Moved round me in the voices and the fires, And more I may not write of, for they that cleave The waters of sleep can make a chattering tongue Heavy like stone, their wisdom being half silence. How shall I name you, immortal, mild, proud shadows? I only know that all we know comes from you, And that you come from Eden on flying feet. Is Eden far away, or do you hide From buman thought, as hares and mice and coneys That run before the reaping-book and lie In the last ridge of the barley? Do our woods

And winds and ponds cover more quiet woods,
More shining winds, more star-glimmering ponds?
Is Eden out of time and out of space?
And do you gather about us when pale light
Shining on water and fallen among leaves,
And winds blowing from flowers, and whirr of feathers
And the green quiet, have uplifted the heart?

I have made this poem for you, that men may read it Before they read of Forgael and Dectora, As men in the old times, before the harps began, Poured out wine for the high invisible ones. September 1900 THE

Edain eame out
Beside young Ae
Where time is a
And Druid mod
And sleepy boug
Of opal and ru
Awake unsleepi
Sweet with all
Because her har
When Midhir's
He made a har
That she amon
And from that
But faithful ke

THE HARP OF AENGUS

Edain came out of Midbir's kill, and lay
Beside young Aengus in his tower of glass,
Where time is drowned in odour-laden winds
And Druid moons, and murmuring of boughs,
And sleepy boughs, and boughs where apples made
Of opal and ruby and pale chrysolite
Awake unsleeping fires; and wove seven strings,
Sweet with all music, out of his long hair,
Because her hands had been made wild by love.
When Midhir's wife had changed her to a fly,
He made a harp with Druid apple-wood
That she among her winds might know he wept;
And from that hour he has watched over none
But faithful lovers.

PERSONS IN THE POEM

FORGAEL

AIBRIC

Sailors

DECTORA

THE SH.

A DE

The deck of an ancient showith a large square sail on that side. The tiller is coming through an openiseries of steps behind the overhead. When the play deck. Aibric stands by the portion of the deck toware standing near to the

First Sailer. Has he : For long enough?

Second Sailor.

First Sailer. We hav These dozen week

Second Sailer.

A good round sur For I am getting That has less up

First Sailer. I am so I could give all I That had but th

Second Sailor.

Transform these That I may dro

THE SHADOWY WATERS

A DRAMATIC POEM

The deck of an ancient ship. At the right of the stage is the mast, with a large square sail hiding a great deal of the sky and sea on that side. The tiller is at the left of the stage; it is a long oar coming through an opening in the bullwark. The deck rises in a series of steps behind the tiller, and the stern of the ship curves overhead. When the play opens there are four persons upon the deck. Aibric stands by the tiller. Forgael sleeps upon the raised portion of the deck towards the front of the stage. Two Sailors are standing near to the mast, on which a harp is banging.

First Sailer. Has he not led us into these waste seas
For long enough?

Second Sailer. Aye, long and long enough.

First Sailer. We have not come upon a shore or ship These dozen weeks.

Second Sailor. And I had thought to make A good round sum upon this cruise, and turn—For I am getting on in life—to something That has less ups and downs than robbery.

First Sailer. I am so tired of being bachelor I could give all my heart to that Red Moll That had but the one eye.

Second Sailer. Can no bewitchment
Transform these rascal billows into women
That I may drown myself?

First Sailor.

Whether he will or no; and better still

To take him while he sleeps and carry him

And drop him from the gunnel.

Second Sailor.

I dare not do it.

Were't not that there is magic in his harp,

I would be of your mind; but when he plays it

Strange creatures flutter up before one's eyes,

Or cry about one's ears.

First Sailor. Nothing to fear.

Second Sailor. Do you remember when we sank that galley
At the full moon?

First Sailor. He played all through the night.

Second Sailor. Until the moon had set; and when I looked Where the dead drifted, I could see a bird Like a grey gull upon the breast of each. While I was looking they rose hurriedly, And after circling with strange cries awhile Flew westward; and many a time since then I've heard a rustling overhead in the wind.

First Sailor. I saw them on that night as well as you. But when I had eaten and drunk myself asleep My courage came again.

Second Sailor. But that's not all.

The other night, while he was playing it,
A beautiful young man and girl came up
In a white breaking wave; they had the look
Of those that are alive for ever and ever.

First Sailer. I saw the playing,

And they were list He could not see t To grasp the wom

Second Sailor.

First Sailer. O she w me.

Second Sailor. But we

First Sailor.

Second Sailer. 'Twas lovers, To whom all love

First Sailer.

A shadow does n

Second Sailer. My to Of the Ever-livin As that wild Aet He carried Edain And hid her amo And in a tower Has hated every

First Sailor.

He does not has Peaceable men to And keep to the

And has been di

Second Sailor. I thi And drags him First Sailer. I saw them, too, one night. Forgael was playing,

And they were listening there beyond the sail. He could not see them, but I held out my hands To grasp the woman.

Second Sailer. You have dared to touch her?

First Sailer. O she was but a shadow, and slipped from me.

Second Sailor. But were you not afraid?

First Sailor. Why should I fear?

Second Sailer. 'Twas Aengus and Edain, the wandering lovers,

To whom all lovers pray.

First Sailor. But what of that?
A shadow does not carry sword or spear.

Swand Sailer. My mother told me that there is not one
Of the Ever-living half so dangerous
As that wild Aengus. Long before her day
He carried Edain off from a king's house,
And hid her among fruits of jewel-stone
And in a tower of glass, and from that day
Has hated every man that's not in love,
And has been dangerous to him.

First Sailor.

He does not hate seafarers as he hates
Peaceable men that shut the wind away,
And keep to the one weary marriage-bed.

Second Sailor. I think that he has Forgael in his net, And drags him through the sea. First Sailor. Well, net or none, I'd drown him while we have the chance to do it.

Second Sailor. It's certain I'd sleep easier o' nights If he were dead; but who will be our captain, Judge of the stars, and find a course for us?

First Sailor. I've thought of that. We must have Aibric with us,

For he can judge the stars as well as Forgael.

[Going towards Aibric.]

Become our captain, Aibric. I am resolved To make an end of Forgael while he sleeps. There's not a man but will be glad of it When it is over, nor one to grumble at us.

Aibric. You have taken pay and made your bargain for it.

First Sailor. What good is there in this hard way of living,

Unless we drain more flagons in a year And kiss more lips than lasting peaceable men In their long lives? Will you be of our troop And take the captain's share of everything And bring us into populous seas again?

Aibric. Be of your troop! Aibric be one of you And Forgael in the other scale! kill Forgael, And he my master from my childhood up! If you will draw that sword out of its scabbard I'll give my answer.

First Sailor. You have awakened him.

[To Second Sailor.]

We'd better go, for we have lost this chance.

[They go out.]

Forgael. Have the bir voice,

But there were oth

Aibric.

Forgael. You're certain
But that I am afrait
For they're my only
Straying too far in
I'd never come up
That has been pro
These many days;
Dying at every mo
And flying toward

Aibric.
And listen to me

And listen to me Are plotting for y

Forgael.

More riches than
And now they wi
The only riches th

Aibric. What riches Where no ship so Has ever come b Knowing it for the

Forgael.
The mind is mad Miracle, ecstasy, The flagstone ur

Aibric.

Have driven tra

The roots of the

Forgael. Have the birds passed us? I could hear your voice,

But there were others.

Aibric. I have seen nothing pass.

Forgael. You're certain of it? I never wake from sleep
But that I am afraid they may have passed,
For they're my only pilots. If I lost them
Straying too far into the north or south,
I'd never come upon the happiness
That has been promised me. I have not seen them
These many days; and yet there must be many
Dying at every moment in the world,
And flying towards their peace.

Aibric. Put by these thoughts,
And listen to me for a while. The sailors
Are plotting for your death.

More riches than they ever hoped to find?
And now they will not follow, while I seek
The only riches that have hit my fancy.

Afteric. What riches can you find in this waste sea Where no ship sails, where nothing that's alive Has ever come but those man-headed birds, Knowing it for the world's end?

Forgael. Where the world ends
The mind is made unchanging, for it finds
Miracle, ecstasy, the impossible hope,
The flagstone under all, the fire of fires,
The roots of the world.

Aibric. Shadows before now Have driven travellers mad for their own sport.

Forgael. Do you, too, doubt me? Have you joined their plot?

Aibric. No, no, do not say that. You know right well That I will never lift a hand against you.

Forgael. Why should you be more faithful than the rest, Being as doubtful?

Aibric. I have called you master Too many years to lift a hand against you.

Forgael. Maybe it is but natural to doubt me. You've never known, I'd lay a wager on it, A melancholy that a cup of wine, A lucky battle, or a woman's kiss Could not amend.

Aibric. I have good spirits enough.

Forgael. If you will give me all your mind awhile—All, all, the very bottom of the bowl—
I'll show you that I am made differently,
That nothing can amend it but these waters,
Where I am rid of life—the events of the world—
What do you call it?—that old promise-breaker,
The cozening fortune-teller that comes whispering,
'You will have all you have wished for when you have earned

Land for your children or money in a pot.' And when we have it we are no happier, Because of that old draught under the door, Or creaky shoes. And at the end of all How are we better off than Seaghan the fool, That never did a hand's turn? Aibric! Aibric! We have fallen in the dreams the Ever-living Breathe on the burnished mirror of the world

And then smooth And find their laus For that brief sigh

Aibric.

Forgael. You say that
For that is what the
Aengus and Edain
And all the others
As they have know
For it is love that
But of a beautiful
That is not in the

Aibric.

Has beautiful wo

Forgael. But he that
Loves in brief lor
And bodily tende
The bed of love,
Had seemed to b
Is no more than
And as soon finis

Aibric.

Have loved that

Forgael. Yet never l Believed there w And almost wep

Aibric. When they They take a kiss And let the drea And then smooth out with ivory hands and sigh, And find their laughter sweeter to the taste For that brief sighing.

Aibric. If you had loved some woman-

Forgael. You say that also? You have heard the voices, For that is what they say—all, all the shadows—Aengus and Edain, those passionate wanderers, And all the others; but it must be love As they have known it. Now the secret's out; For it is love that I am seeking for, But of a beautiful, unheard-of kind That is not in the world.

Aibric. And yet the world Has beautiful women to please every man.

Forgael. But he that gets their love after the fashion Loves in brief longing and deceiving hope And bodily tenderness, and finds that even The bed of love, that in the imagination Had seemed to be the giver of all peace, Is no more than a wine-cup in the tasting, And as soon finished.

Aibrit. All that ever loved Have loved that way—there is no other way.

Forgael. Yet never have two lovers kissed but they Believed there was some other near at hand, And almost wept because they could not find it.

Aibric. When they have twenty years; in middle life They take a kiss for what a kiss is worth, And let the dream go by. Forgael. It's not a dream,
But the reality that makes our passion
As a lamp shadow—no—no lamp, the sun.
What the world's million lips are thirsting for
Must be substantial somewhere.

Aibric. I have heard the Druids Mutter such things as they awake from trance. It may be that the Ever-living know it—No mortal can.

Forgael. Yes; if they give us help.

Aibric. They are besotting you as they besot
The crazy herdsman that will tell his fellows
That he has been all night upon the hills,
Riding to hurley, or in the battle-host
With the Ever-living.

Forgael. What if he speak the truth, And for a dozen hours have been a part Of that more powerful life?

Aibric. His wife knows better. Has she not seen him lying like a log,
Or fumbling in a dream about the house?
And if she hear him mutter of wild riders,
She knows that it was but the cart-horse coughing
That set him to the fancy.

Forgael. All would be well Could we but give us wholly to the dreams, And get into their world that to the sense Is shadow, and not linger wretchedly Among substantial things; for it is dreams That lift us to the flowing, changing world

That the heart lon Even though it be But dreams that h To make low laug Though it but set Could we but mix Not in its image

Aibric.

We're in the bod

Forgael. And yet I c
To death; for the
As those that can
Had the world's
Into their shining
Aengus and Edai
You'd never dou
Had you looked
With so red lips
And having such

Aibrit. It's certain
None but the de
Can know that e
They have made
And you have to
Towards the cou

Forgael.

If I am going to
Or somewhere,
promised.

That much is co

One of the Eve

That the heart longs for. What is love itself, Even though it be the lightest of light love, But dreams that hurry from beyond the world To make low laughter more than meat and drink, Though it but set us sighing? Fellow-wanderer, Could we but mix ourselves into a dream, Not in its image on the mirror!

Aibric. While We're in the body that's impossible.

Forgael. And yet I cannot think they're leading me
To death; for they that promised to me love
As those that can outlive the moon have known it,
Had the world's total life gathered up, it seemed,
Into their shining limbs—I've had great teachers.
Aengus and Edain ran up out of the wave—
You'd never doubt that it was life they promised
Had you looked on them face to face as I did,
With so red lips, and running on such feet,
And having such wide-open, shining eyes.

Aibric. It's certain they are leading you to death.

None but the dead, or those that never lived,
Can know that ecstasy. Forgael! Forgael!

They have made you follow the man-headed birds,
And you have told me that their journey lies
Towards the country of the dead.

Forgael. What matter

If I am going to my death?—for there,

Or somewhere, I shall find the love they have promised.

That much is certain. I shall find a woman,

One of the Ever-living, as I think—

One of the Laughing People—and she and I Shall light upon a place in the world's core, Where passion grows to be a changeless thing, Like charmèd apples made of chrysoprase, Or chrysoberyl, or beryl, or chrysolite; And there, in juggleries of sight and sense, Become one movement, energy, delight, Until the overburthened moon is dead.

[A number of Sailors enter hurriedly.]

First Sailor. Look there! there in the mist! a ship of spice! And we are almost on her!

Second Sailor. We had not known But for the ambergris and sandalwood.

First Sailor. No; but opoponax and cinnamon.

Forgael [taking the tiller from Aibric]. The Ever-living have kept my bargain for me,
And paid you on the nail.

Aibric. Take up that rope

To make her fast while we are plundering her.

First Sailor. There is a king and queen upon her deck, And where there is one woman there'll be others.

Aibric. Speak lower, or they'll hear.

First Sailor. They cannot hear;
They are too busy with each other. Look!
He has stooped down and kissed her on the lips.

Second Sailor. When she finds out we have better men aboard

She may not be too sorry in the end.

First Sailer. She will l Care more about th And the high fame Than a strong bod

Second Sailor. There's And that is why th Upon its bandy le

Aibric.

And overpower th

[Voices and the cother ship, which

A Voice. Armed men

Another Voice. Wake

Another Voice.

First Voice. Armed : slain!

Forgael [who has rema come! Gull, g But with a man's They hover over To wait their fri

come

They'll fly upon One—and one—a And I will hear t Yes, voices! but I Now I can hear. First Sailer. She will be like a wild cat; for these queens Care more about the kegs of silver and gold And the high fame that come to them in marriage, Than a strong body and a ready hand.

Second Sailor. There's nobody is natural but a robber, And that is why the world totters about Upon its bandy legs.

Aibric. Run at them now,
And overpower the crew while yet asleep!

[The Sailors go out.]

[Voices and the clashing of swords are heard from the other ship, which cannot be seen because of the sail.]

A Voice. Armed men have come upon us! O I am slain!

Another Voice. Wake all below!

Another Voice. Why have you broken our sleep?

First Voice. Armed men have come upon us! O I am slain!

Forgael [who has remained at the tiller]. There! there they come! Gull, gannet, or diver,
But with a man's head, or a fair woman's,
They hover over the masthead awhile

To wait their friends; but when their friends have

They'll fly upon that secret way of theirs.
One—and one—a couple—five together;
And I will hear them talking in a minute.
Yes, voices! but I do not catch the words.
Now I can hear. There's one of them that says,

'How light we are, now we are changed to birds!' Another answers, 'Maybe we shall find Our heart's desire now that we are so light.' And then one asks another how he died, And says, 'A sword-blade pierced me in my sleep.' And now they all wheel suddenly and fly To the other side, and higher in the air. And now a laggard with a woman's head Comes crying, 'I have run upon the sword. I have fled to my beloved in the air, In the waste of the high air, that we may wander Among the windy meadows of the dawn.' But why are they still waiting? why are they Circling and circling over the masthead? What power that is more mighty than desire To hurry to their hidden happiness Withholds them now? Have the Ever-living Ones A meaning in that circling overhead? But what's the meaning? [He cries out.] Why do you linger there? Why linger? Run to your desire, Are you not happy winged bodies now? His voice sinks again.

Being too busy in the air and the high air, They cannot hear my voice; but what's the meaning?

[The Sailors have returned. Dectora is with them.]

Forgael [turning and seeing her]. Why are you standing with your eyes upon me? You are not the world's core. O no, no, no! That cannot be the meaning of the birds. You are not its core. My teeth are in the world, But have not bitten yet.

Dectora.

And ask for satisfa Who have slain my Breaking loose

Let go my hands!

Forgael.

Where do you con place?

They would not so

Dectora. Would that And drowned the t And blew me hith Had drowned me I ask a fitting pun That raised their

Forgael.

That weigh and n They that have al And all that prop Made of dim gold They have it that Are dust on the n But laughter and That every man s

Dectora.

And I would kno

Upon his shoulde

Forgael. When she f When she knows

Dectora. That you'll not le Dectora.

I am a queen,

And ask for satisfaction upon these

Who have slain my husband and laid hands upon me. [Breaking loose from the Sailors who are holding her.] Let go my hands!

Forgael. Why do you cast a shadow?
Where do you come from? Who brought you to this place?
They would not send me one that casts a shadow.

Dectora. Would that the storm that overthrew my ships, And drowned the treasures of nine conquered nations, And blew me hither to my lasting sorrow, Had drowned me also. But, being yet alive, I ask a fitting punishment for all That raised their hands against him.

There are some
That weigh and measure all in these waste seas—
They that have all the wisdom that's in life,
And all that prophesying images
Made of dim gold rave out in secret tombs;
They have it that the plans of kings and queens
Are dust on the moth's wing; that nothing matters
But laughter and tears—laughter, laughter, and tears;
That every man should carry his own soul
Upon his shoulders.

Dectora. You've nothing but wild words, And I would know if you will give me vengeance.

Forgael. When she finds out I will not let her go—When she knows that.

Dectora. What is it that you are muttering— That you'll not let me go? I am a queen. Forgael. Although you are more beautiful than any, I almost long that it were possible;
But if I were to put you on that ship,
With sailors that were sworn to do your will,
And you had spread a sail for home, a wind
Would rise of a sudden, or a wave so huge,
It had washed among the stars and put them out,
And beat the bulwark of your ship on mine,
Until you stood before me on the deck—
As now.

Dectora. Does wandering in these desolate seas And listening to the cry of wind and wave Bring madness?

Forgael. Queen, I am not mad.

Dectora. Yet say

That unimaginable storms of wind and wave

Would rise against me.

Forgael. No, I am not mad—
If it be not that hearing messages
From lasting watchers, that outlive the moon,
At the most quiet midnight is to be stricken.

Dectora. And did those watchers bid you take me captive?

Forgael. Both you and I are taken in the net.

It was their hands that plucked the winds awake

And blew you hither; and their mouths have
promised

I shall have love in their immortal fashion; And for this end they gave me my old harp That is more mighty than the sun and moon, Or than the shivering casting-net of the stars, That none might take you from me. Dectora first tremblin
and then laught
Your raving of a r
More mighty that
But all that's ravi
The daughter and
To be his bedfell

Forgael.

Have called me t

Dectora. My husban And yet you talk

Is shaken in these
One moment has
That follows after

Dectora.

You have a Druid Wrung from the A magic that can Until my body g

Forgael. Your soul

Dectora.

While there's a 1 Or wave to drow And I would hav And know that:

Forgael.

For neither I no Of the great gol Dectora [first trembling back from the mast where the harp is, and then laughing]. For a moment Your raving of a message and a harp More mighty than the stars half troubled me, But all that's raving. Who is there can compel The daughter and the granddaughter of kings To be his bedfellow?

Forgael. Until your lips
Have called me their beloved, I'll not kiss them.

Dectora. My husband and my king died at my feet, And yet you talk of love.

Forgael. The movement of time Is shaken in these seas, and what one does
One moment has no might upon the moment
That follows after.

Dectora. I understand you now.
You have a Druid craft of wicked sound
Wrung from the cold women of the sea—
A magic that can call a demon up,
Until my body give you kiss for kiss.

Forgael. Your soul shall give the kiss.

Dectora. I am not afraid, While there's a rope to run into a noose Or wave to drown. But I have done with words, And I would have you look into my face And know that it is fearless.

For neither I nor you can break a mesh
Of the great golden net that is about us.

401

Dectora. There's nothing in the world that's worth a fear.

[She passes Forgael and stands for a moment looking into his face.]

I have good reason for that thought.

[She runs suddenly on to the raised part of the poop.]
And now

I can put fear away as a queen should.

[She mounts on to the bulwark and turns towards Forgael.]

Fool, fool! Although you have looked into my face You do not see my purpose. I shall have gone Before a hand can touch me.

Forgael [folding bis arms]. My hands are still; The Ever-living hold us. Do what you will, You cannot leap out of the golden net.

First Sailor. No need to drown, for, if you will pardon us

And measure out a course and bring us home, We'll put this man to death.

Dectora.

I promise it.

First Sailor. There is none to take his side.

Aibric. I am on his side.

I'll strike a blow for him to give him time

To cast his dreams away.

[Aibric goes in front of Forgael with drawn sword. Forgael takes the harp.]

First Sailor. No other 'll do it.

[The Sailors throw Aibric on one side. He falls and lies upon the deck. They lift their swords to strike Forgael,

who is about darken. The So

Second Sailer. He h

Dectora. Nine sword To him that stril

First Sailor.

[He goes c

[Shrinking back.] He of the sky,
And carries it be

Second Sailor.

To burn us to the

Dectora. I'll give a That has the hea To him that wo

First Sailor.

For all his spells Having their lif

Second Sailor.

That he is holdi I will strike at l

The Others.

First Sailor [falling saying there Upon that othe You did not kn But it was sudd

who is about to play the harp. The stage begins to darken. The Sailors hesitate in fear.]

Second Sailor. He has put a sudden darkness over the moon.

Dectora. Nine swords with handles of rhinoceros horn To him that strikes him first!

First Sailor. I will strike him first.
[He goes close up to Forgael with his sword lifted.]

[Shrinking back.] He has caught the crescent moon out of the sky,

And carries it between us.

Second Sailor. Holy fire

To burn us to the marrow if we strike.

Dectora. I'll give a golden galley full of fruit, That has the heady flavour of new wine, To him that wounds him to the death.

First Sailer.

For all his spells will vanish when he dies,
Having their life in him.

Second Sailor. Though it be the moon
That he is holding up between us there,
I will strike at him.

The Others.

And I! And I! And I!

[Forgael plays the harp.]

First Sailor [falling into a dream suddenly]. But you were saying there is somebody
Upon that other ship we are to wake.
You did not know what brought him to his end,
But it was sudden.

I knew him well, and while I heard him laughing They killed him at my feet. O! O! O! O! For golden-armed Iollan that I loved. But what is it that made me say I loved him? It was that harper put it in my thoughts, But it is true. Why did they run upon him, And beat the golden helmet with their swords?

Forgael. Do you not know me, lady? I am he That you are weeping for.

No, for he is dead. Dectora. O! O! O! O! for golden-armed Iollan.

Forgael. It was so given out, but I will prove That the grave-diggers in a dreamy frenzy Have buried nothing but my golden arms. Listen to that low-laughing string of the moon And you will recollect my face and voice, For you have listened to me playing it These thousand years.

[He starts up, listening to the birds. The harp slips from his hands, and remains leaning against the bulwarks

behind him.

What are the birds at there?

Why are they all a-flutter of a sudden? What are you calling out above the mast? If railing and reproach and mockery Because I have awakened her to love By magic strings, I'll make this answer to it: Being driven on by voices and by dreams That were clear messages from the Ever-living, I have done right. What could I but obey? And yet you make a clamour of reproach.

Dectora [laughing]. V That I should ke To the horn, and

Forgael. How have I But no, no, no! y You know the co And all that toss And all that mu But if it be repre There is not one By any other me Consideration, g But it was all de To win a woman For love is war, And if you say

Dectora. Why do y That I would lo

Forgael.

Dectora. Have I no

Forgael. I never ha

Dectora. I do not 1 Better than my

Forgael.

Out of all reck

Dectora.

That you were In islands when In happy dance And that you'l Dectora [laughing]. Why, it's a wonder out of reckoning That I should keen him from the full of the moon To the horn, and he be hale and hearty.

But no, no, no! your cry is not against me.
You know the counsels of the Ever-living,
And all that tossing of your wings is joy,
And all that murmuring's but a marriage-song;
But if it be reproach, I answer this:
There is not one among you that made love
By any other means. You call it passion,
Consideration, generosity;
But it was all deceit, and flattery
To win a woman in her own despite,
For love is war, and there is hatred in it;
And if you say that she came willingly—

Dectora. Why do you turn away and hide your face, That I would look upon for ever?

Forgael. My grief!

Dectora. Have I not loved you for a thousand years?

Forgael. I never have been golden-armed Iollan.

Dectora. I do not understand. I know your face Better than my own hands.

Forgael. I have deceived you Out of all reckoning.

Dectora. Is it not true

That you were born a thousand years ago,
In islands where the children of Aengus wind
In happy dances under a windy moon,
And that you'll bring me there?

Forgael. I have deceived you; I have deceived you;

Dutora. How can that be? Is it that though your eyes are full of love Some other woman has a claim on you, And I've but half?

Forgael.

O no!

Dettora. And if there is,
If there be half a hundred more, what matter?
I'll never give another thought to it;
No, no, nor half a thought; but do not speak.
Women are hard and proud and stubborn-hearted,
Their heads being turned with praise and flattery;
And that is why their lovers are afraid
To tell them a plain story.

Forgael. That's not the story;
But I have done so great a wrong against you,
There is no measure that it would not burst.
I will confess it all.

Dectora. What do I care,
Now that my body has begun to dream,
And you have grown to be a burning sod
In the imagination and intellect?
If something that's most fabulous were true—
If you had taken me by magic spells,
And killed a lover or husband at my feet—
I would not let you speak, for I would know
That it was yesterday and not to-day
I loved him; I would cover up my ears,
As I am doing now. [A pause.] Why do you weep?

Forgael. I weep because But desolate waters

Dectora. O why do yo

Forgael. I weep—I we And not a roof of

Dectora. I would grov And strike the gol I would that there But my beloved— And all that is an All that is not the

Forgael. You turn aw Am I to fear the My enemy?

I lool

Longing to knead
That I might lay
But now it is you
For you are looki
How great a wro.
Wander a momen
[He has moved an over the sea, she

Forgael.

Dectora.

Dectora. What is the That fly into the

Why are you loo

Forgael.

Dectora. What is the

Forgael. I weep because I've nothing for your eyes But desolate waters and a battered ship.

Dectora. O why do you not lift your eyes to mine?

Forgael. I weep—I weep because bare night's above, And not a roof of ivory and gold.

Dectora. I would grow jealous of the ivory roof,
And strike the golden pillars with my hands.
I would that there was nothing in the world
But my beloved—that night and day had perished,
And all that is and all that is to be,
All that is not the meeting of our lips.

Forgael. You turn away. Why do you turn away? Am I to fear the waves, or is the moon My enemy?

Dectora. I looked upon the moon,

Longing to knead and pull it into shape
That I might lay it on your head as a crown.

But now it is your thoughts that wander away,
For you are looking at the sea. Do you not know
How great a wrong it is to let one's thought
Wander a moment when one is in love?

[He has moved away. She follows him. He is looking out
over the sea, shading his eyes.]

Why are you looking at the sea?

Forgael. Look there!

Dectora. What is there but a troop of ash-grey birds
That fly into the west?

Forgael. But listen, listen!

Dectora. What is there but the crying of the birds?





Forgael. If you'll but listen closely to that crying You'll hear them calling out to one another With human voices.

Dectora. O, I can hear them now. What are they? Unto what country do they fly?

Forgael. To unimaginable happiness.

They have been circling over our heads in the air, But now that they have taken to the road

We have to follow, for they are our pilots;

And though they're but the colour of grey ash,

They're crying out, could you but hear their words,

'There is a country at the end of the world

Where no child's born but to outlive the moon.'

[The Sailors come in with Aibric. They are in great excitement.]

First Sailor. The hold is full of treasure.

Second Sailor.

Full to the hatches.

First Sailor. Treasure on treasure.

Third Sailor.

Boxes of precious spice.

First Sailor. Ivory images with amethyst eyes.

Third Sailor. Dragons with eyes of ruby.

First Sailor. The whole ship Flashes as if it were a net of herrings.

Third Sailor. Let's home; I'd give some rubies to a woman.

Second Sailor. There's somebody I'd give the amethyst eyes to.

Aibric [silencing them our own cour. For we have foun Imagination cannot And having lit up What more have

Forgael. I cannot—I As for this woma

Aibric. The Ever-liv
It was this woma
That drove you t
To fancy that she
'Twas you that e
That he is being

Dectora. That is not An unimaginable

Aibric. And if that More than the fi The crazy nothin It shall be in the If there be such

Dectora.

But in some isla Leaps upward, a Had run into or

Aibric.

He knows that Speak—he will

Dectora.

Aibrit [silencing them with a gesture]. We would return to our own country, Forgael,

For we have found a treasure that's so great

Imagination cannot reckon it.

And having lit upon this woman there,

What more have you to look for on the seas?

Forgael. I cannot—I am going on to the end.

As for this woman, I think she is coming with me.

Aibric. The Ever-living have made you mad; but no, It was this woman in her woman's vengeance That drove you to it, and I fool enough To fancy that she'd bring you home again. 'Twas you that egged him to it, for you know That he is being driven to his death.

Dectora. That is not true, for he has promised me An unimaginable happiness.

Aibric. And if that happiness be more than dreams, More than the froth, the feather, the dust-whirl, The crazy nothing that I think it is, It shall be in the country of the dead, If there be such a country.

Detera. No, not there,
But in some island where the life of the world
Leaps upward, as if all the streams o' the world
Had run into one fountain.

Aibric. Speak to him. He knows that he is taking you to death; Speak—he will not deny it.

Dectora. Is that true?





Forgael. I do not know for certain, but I know That I have the best of pilots.

Aibric. Shadows, illusions, That the Shape-changers, the Ever-laughing Ones, The Immortal Mockers have cast into his mind, Or called before his eyes.

Dectora. O carry me
To some sure country, some familiar place.
Have we not everything that life can give
In having one another?

Forgael. How could I rest
If I refused the messengers and pilots
With all those sights and all that crying out?

Dectora. But I will cover up your eyes and ears, That you may never hear the cry of the birds, Or look upon them.

Forgael. Were they but lowlier I'd do your will, but they are too high—too high.

Dectora. Being too high, their heady prophecies But harry us with hopes that come to nothing, Because we are not proud, imperishable, Alone and winged.

Forgael. Our love shall be like theirs When we have put their changeless image on.

Dectora. I am a woman, I die at every breath.

Aibric. Let the birds scatter, for the tree is broken, And there's no help in words. [To the Sailors.]

To the other ship,

And I will follow When I have said For neither I nor a Will look upon hi

Forgael [to Dectora].

For he will shelter

Aibric [taking Forgael's

Dectora.

And cut the rope,

Aibric [half falling int broken into to And all the birds Farewell! farewell

Dectora.

The rope's in two It whirls into the Dragon that loved You are broken,

away,
And I am left alo
Who cannot put
We are alone for
Forgael, because y
The mist has cov
Shall be alone for
I half remember.

Bend lower, O ki O flower of the b O silver fish that And I will follow you and cut the rope When I have said farewell to this man here, For neither I nor any living man Will look upon his face again.

[The Sailors go out.]

Go with him, Forgael [to Dectora]. For he will shelter you and bring you home.

Aibric [taking Forgael's band]. I'll do it for his sake.

No. Take this sword Dectora. And cut the rope, for I go on with Forgael.

Farewell! farewell!

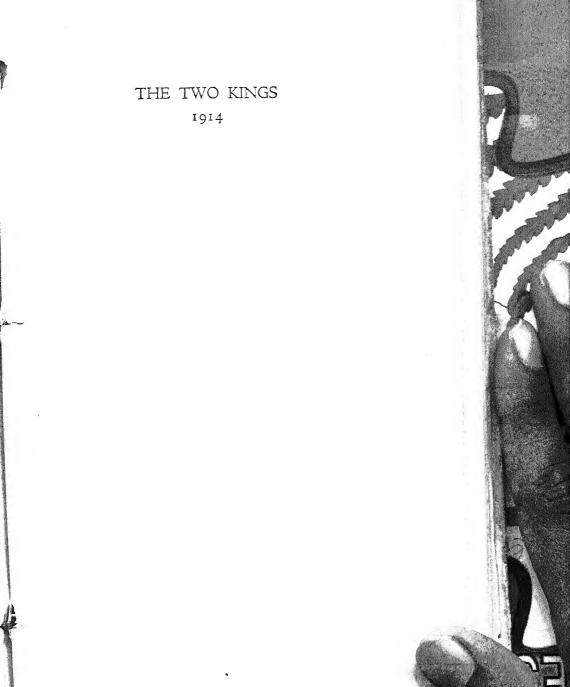
Aibric [balf falling into the keen]. The yew-bough has been broken into two. And all the birds are scattered—O! O! O! He goes out.

The sword is in the rope— Dectora. The rope's in two-it falls into the sea, It whirls into the foam. O ancient worm, Dragon that loved the world and held us to it, You are broken, you are broken. The world drifts

And I am left alone with my beloved, Who cannot put me from his sight for ever. We are alone for ever, and I laugh, Forgael, because you cannot put me from you. The mist has covered the heavens, and you and I Shall be alone for ever. We two-this crown-I half remember. It has been in my dreams. Bend lower, O king, that I may crown you with it. O flower of the branch, O bird among the leaves, O silver fish that my two hands have taken

Out of the running stream, O morning star, Trembling in the blue heavens like a white fawn Upon the misty border of the wood, Bend lower, that I may cover you with my hair, For we will gaze upon this world no longer.

Forgael [gathering Dectora's hair about him]. Beloved, having dragged the net about us,
And knitted mesh to mesh, we grow immortal;
And that old harp awakens of itself
To cry aloud to the grey birds, and dreams,
That have had dreams for father, live in us.



KING EOCHAID can Westward of Tara. He had outridden l That with empound And where beech t With the ground-i Whiter than curds, Because it stood up More hands in heigh He sat with tighter Upon his trembling But the stag stoope Rending the horse' Then drew his swo Against the stag. V The horn resounde A sweet, miraculou Horn locked in sw As though a stag a Among the Africa: Until at last the d Butted below the The entrails of the King Eochaid seiz And stared into th Hither and thither

Till all the place with The strong thigh:

THE TWO KINGS

KING EOCHAID came at sundown to a wood Westward of Tara. Hurrying to his queen He had outridden his war-wasted men That with empounded cattle trod the mire, And where beech trees had mixed a pale green light With the ground-ivy's blue, he saw a stag Whiter than curds, its eyes the tint of the sea. Because it stood upon his path and seemed More hands in height than any stag in the world He sat with tightened rein and loosened mouth Upon his trembling horse, then drove the spur; But the stag stooped and ran at him, and passed, Rending the horse's flank. King Eochaid reeled, Then drew his sword to hold its levelled point Against the stag. When horn and steel were met The horn resounded as though it had been silver, A sweet, miraculous, terrifying sound. Horn locked in sword, they tugged and struggled there As though a stag and unicorn were met Among the African Mountains of the Moon, Until at last the double horns, drawn backward, Butted below the single and so pierced The entrails of the horse. Dropping his sword King Eochaid seized the horns in his strong hands And stared into the sea-green eye, and so Hither and thither to and fro they trod Till all the place was beaten into mire. The strong thigh and the agile thigh were met,



The hands that gathered up the might of the world, And hoof and horn that had sucked in their speed Amid the elaborate wilderness of the air. Through bush they plunged and over ivied root. And where the stone struck fire, while in the leaves A squirrel whinnied and a bird screamed out; But when at last he forced those sinewy flanks Against a beech-bole, he threw down the beast And knelt above it with drawn knife. On the instant It vanished like a shadow, and a cry So mournful that it seemed the cry of one Who had lost some unimaginable treasure Wandered between the blue and the green leaf And climbed into the air, crumbling away, Till all had seemed a shadow or a vision But for the trodden mire, the pool of blood, The disembowelled horse.

King Eochaid ran
Toward peopled Tara, nor stood to draw his breath
Until he came before the painted wall,
The posts of polished yew, circled with bronze,
Of the great door; but though the hanging lamps
Showed their faint light through the unshuttered
windows,

Nor door, nor mouth, nor slipper made a noise,
Nor on the ancient beaten paths, that wound
From well-side or from plough-land, was there noise;
Nor had there been the noise of living thing
Before him or behind, but that far off
On the horizon edge bellowed the herds.
Knowing that silence brings no good to kings,
And mocks returning victory, he passed
Between the pillars with a beating heart

And saw where in Pale-faced, alone up Sat upright with a Her hands on eithe Her eyes were cold Some passion had a She started and the But when he though She motioned him 'I have sent among The fighting-men For I would have Who is self-accuse She would not loo Till judgment has Would never look And at these word Knowing that he The meaning of the

'You brought me Always in his one Through that stra And should he di And carve his nar 'He lives?' 'He li 'While I have hir What man you h'I bid them make And carried him And so the week "What is this tro Though always a

And saw where in the midst of the great hall Pale-faced, alone upon a bench, Edain Sat upright with a sword before her feet. Her hands on either side had gripped the bench, Her eyes were cold and steady, her lips tight. Some passion had made her stone. Hearing a foot She started and then knew whose foot it was: But when he thought to take her in his arms She motioned him afar, and rose and spoke: 'I have sent among the fields or to the woods The fighting-men and servants of this house, For I would have your judgment upon one Who is self-accused. If she be innocent She would not look in any known man's face Till judgment has been given, and if guilty, Would never look again on known man's face.' And at these words he paled, as she had paled, Knowing that he should find upon her lips The meaning of that monstrous day. Then she:

'You brought me where your brother Ardan sat Always in his one seat, and bid me care him Through that strange illness that had fixed him there, And should he die to heap his burial-mound And carve his name in Ogham.' Eochaid said, 'He lives?' 'He lives and is a healthy man.' 'While I have him and you it matters little What man you have lost, what evil you have found.' 'I bid them make his bed under this roof And carried him his food with my own hands, And so the weeks passed by. But when I said, "What is this trouble?" he would answer nothing, Though always at my words his trouble grew;

And I but asked the more, till he cried out, Weary of many questions: "There are things That make the heart akin to the dumb stone." Then I replied, "Although you hide a secret, Hopeless and dear, or terrible to think on, Speak it, that I may send through the wide world For medicine." Thereon he cried aloud, "Day after day you question me, and I, Because there is such a storm amid my thoughts I shall be carried in the gust, command, Forbid, beseech and waste my breath." Then I: "Although the thing that you have hid were evil, The speaking of it could be no great wrong, And evil must it be, if done 'twere worse Than mound and stone that keep all virtue in, And loosen on us dreams that waste our life, Shadows and shows that can but turn the brain." But finding him still silent I stooped down And whispering that none but he should hear, Said, "If a woman has put this on you, My men, whether it please her or displease, And though they have to cross the Loughlan waters And take her in the middle of armed men, Shall make her look upon her handiwork, That she may quench the rick she has fired; and though

She may have worn silk clothes, or worn a crown, She'll not be proud, knowing within her heart That our sufficient portion of the world Is that we give, although it be brief giving, Happiness to children and to men.' Then he, driven by his thought beyond his thought, And speaking what he would not though he would,

Sighed, "You, excure!"

And at those word And for nine days And for nine days The one disastrou. That the immedia Our questioning, But when nine da Before his chair at I bade him go what To an old empty Westward of Tark For hope would

A friend that cou And would be no

await

I groped my way Found that old h And stretched ou Ardan, and thous To shake him ou I waited till the Then fearing tha To plough or pas Went out.

Amor As on the blue li Who had unnatu Like the eyes of Stood on my pat I gazed at him le Sighed, "You, even you yourself, could work the cure!"

And at those words I rose and I went out
And for nine days he had food from other hands,
And for nine days my mind went whirling round
The one disastrous zodiac, muttering
That the immedicable mound's beyond
Our questioning, beyond our pity even.
But when nine days had gone I stood again
Before his chair and bending down my head
I bade him go when all his household slept
To an old empty woodman's house that's hidden
Westward of Tara, among the hazel-trees—
For hope would give his limbs the power—and
await

A friend that could, he had told her, work his cure And would be no harsh friend.

When night had deepened, I groped my way from beech to hazel wood, Found that old house, a sputtering torch within, And stretched out sleeping on a pile of skins Ardan, and though I called to him and tried To shake him out of sleep, I could not rouse him. I waited till the night was on the turn, Then fearing that some labourer, on his way To plough or pasture-land, might see me there, Went out.

Among the ivy-covered rocks,
As on the blue light of a sword, a man
Who had unnatural majesty, and eyes
Like the eyes of some great kite scouring the woods,
Stood on my path. Trembling from head to foot
I gazed at him like grouse upon a kite;



But with a voice that had unnatural music,
"A weary wooing and a long," he said,
"Speaking of love through other lips and looking
Under the eyelids of another, for it was my craft
That put a passion in the sleeper there,
And when I had got my will and drawn you here,
Where I may speak to you alone, my craft
Sucked up the passion out of him again
And left mere sleep. He'll wake when the sun
wakes,

Push out his vigorous limbs and rub his eyes, And wonder what has ailed him these twelve months."

I cowered back upon the wall in terror, But that sweet-sounding voice ran on: "Woman, I was your husband when you rode the air, Danced in the whirling foam and in the dust, In days you have not kept in memory, Being betrayed into a cradle, and I come That I may claim you as my wife again." I was no longer terrified—his voice Had half awakened some old memory— Yet answered him, "I am King Eochaid's wife And with him have found every happiness Women can find." With a most masterful voice, That made the body seem as it were a string Under a bow, he cried, "What happiness Can lovers have that know their happiness Must end at the dumb stone? But where we build Our sudden palaces in the still air Pleasure itself can bring no weariness, Nor can time waste the cheek, nor is there foot That has grown weary of the whirling dance,

Nor an unlaughin Among those mou Your empty bed.' "Were it not that And shown my ht 'Your strength and Or how should lo That when he has Being wearied out What can they kr She builds her ne Above a windy pr "Seeing that whe You must return, This human life ! Why must I live Alone with all th Thereon he seized Thrust him away "Never will I bel Can blot out of r Sweetened by dea That were a doub For what is doub

My hands were p I staggered, but a And clinging to Crow upon Tara.

And thanked her For that she pror Thereon the bell Nor an unlaughing mouth, but mine that mourns, Among those mouths that sing their sweethearts' praise, Your empty bed." "How should I love," I answered, "Were it not that when the dawn has lit my bed And shown my husband sleeping there, I have sighed, 'Your strength and nobleness will pass away.' Or how should love be worth its pains were it not That when he has fallen asleep within my arms, Being wearied out, I love in man the child? What can they know of love that do not know She builds her nest upon a narrow ledge Above a windy precipice?" Then he: "Seeing that when you come to the deathbed You must return, whether you would or no, This human life blotted from memory, Why must I live some thirty, forty years, Alone with all this useless happiness?" Thereon he seized me in his arms, but I Thrust him away with both my hands and cried, "Never will I believe there is any change Can blot out of my memory this life Sweetened by death, but if I could believe, That were a double hunger in my lips For what is doubly brief."

And now the shape My hands were pressed to vanished suddenly. I staggered, but a beech tree stayed my fall, And clinging to it I could hear the cocks Crow upon Tara.'

King Eochaid bowed his head And thanked her for her kindness to his brother, For that she promised, and for that refused. Thereon the bellowing of the empounded herds





Rose round the walls, and through the bronze-ringed door
Jostled and shouted those war-wasted men,
And in the midst King Eochaid's brother stood,
And bade all welcome, being ignorant.

THE GIF

THE GIFT OF HARUN AL-RASHID 1923



THE GI

Kusta Ben L To Abd Al-R Now the good And for no ea

Through the

Where banne
But brilliant
And wait was
Pass books of
Written in go
And pause at
At the great
For should yo
Love-lorn, in
And let it fa
Pause at the
And hide it is
Must keep th
So great its fa

The parchmond A mystery the But the wild Those wands What great With Persian Must needs



THE GIFT OF HARUN AL-RASHID

KUSTA BEN LUKA is my name, I write To Abd Al-Rabban; fellow-roysterer once, Now the good Caliph's learned Treasurer, And for no ear but his.

Carry this letter Through the great gallery of the Treasure House Where banners of the Caliphs hang, night-coloured But brilliant as the night's embroidery, And wait war's music; pass the little gallery; Pass books of learning from Byzantium Written in gold upon a purple stain, And pause at last, I was about to say, At the great book of Sappho's song; but no, For should you leave my letter there, a boy's Love-lorn, indifferent hands might come upon it And let it fall unnoticed to the floor. Pause at the Treatise of Parmenides And hide it there, for Caliphs to world's end Must keep that perfect, as they keep her song, So great its fame.

When fitting time has passed The parchment will disclose to some learned man A mystery that else had found no chronicler But the wild Bedouin. Though I approve Those wanderers that welcomed in their tents What great Harun Al-Rashid, occupied With Persian embassy or Grecian war, Must needs neglect, I cannot hide the truth

That wandering in a desert, featureless As air under a wing, can give birds' wit. In after time they will speak much of me And speak but fantasy. Recall the year When our beloved Caliph put to death His Vizir Jaffer for an unknown reason: 'If but the shirt upon my body knew it I'd tear it off and throw it in the fire.' That speech was all that the town knew, but he Seemed for a while to have grown young again; Seemed so on purpose, muttered Jaffer's friends, That none might know that he was conscience-struck— But that's a traitor's thought. Enough for me That in the early summer of the year The mightiest of the princes of the world Came to the least considered of his courtiers; Sat down upon the fountain's marble edge, One hand amid the goldfish in the pool; And thereupon a colloquy took place That I commend to all the chroniclers To show how violent great hearts can lose Their bitterness and find the honeycomb. 'I have brought a slender bride into the house; You know the saying, "Change the bride with spring," And she and I, being sunk in happiness, Cannot endure to think you tread these paths, When evening stirs the jasmine bough, and yet Are brideless.

'I am falling into years.'

'But such as you and I do not seem old Like men who live by habit. Every day I ride with fa Or carry the to Or court a woo Game-bird, no And so a hun A mimicry of That springs Like this pure Now bathing Be mimicry?'

Are nearer to Than souls th The soul's ov Shows throug My lantern is That it was a

'And yet the

'Great prince
You think th
That if the s
The heart ne
Who have ac
That seems t
Think when
And if her e
Or brighten
My heart con

Have lit upo

Nor find a re



I ride with falcon to the river's edge
Or carry the ringed mail upon my back,
Or court a woman; neither enemy,
Game-bird, nor woman does the same thing twice;
And so a hunter carries in the eye
A mimicry of youth. Can poet's thought
That springs from body and in body falls
Like this pure jet, now lost amid blue sky,
Now bathing lily leaf and fish's scale,
Be mimicry?'

'What matter if our souls
Are nearer to the surface of the body
Than souls that start no game and turn no rhyme!
The soul's own youth and not the body's youth
Shows through our lineaments. My candle's bright,
My lantern is too loyal not to show
That it was made in your great father's reign.'

'And yet the jasmine season warms our blood.'

'Great prince, forgive the freedom of my speech: You think that love has seasons, and you think That if the spring bear off what the spring gave The heart need suffer no defeat; but I Who have accepted the Byzantine faith, That seems unnatural to Arabian minds, Think when I choose a bride I choose for ever; And if her eye should not grow bright for mine Or brighten only for some younger eye, My heart could never turn from daily ruin, Nor find a remedy.'

'But what if I Have lit upon a woman who so shares Your thirst for those old crabbed mysteries, So strains to look beyond our life, an eye That never knew that strain would scarce seem bright, And yet herself can seem youth's very fountain, Being all brimmed with life?'

'Were it but true I would have found the best that life can give, Companionship in those mysterious things That make a man's soul or a woman's soul Itself and not some other soul.'

'That love
Must needs be in this life and in what follows
Unchanging and at peace, and it is right
Every philosopher should praise that love.
But I being none can praise its opposite.
It makes my passion stronger but to think
Like passion stirs the peacock and his mate,
The wild stag and the doe; that mouth to mouth
Is a man's mockery of the changeless soul.'

And thereupon his bounty gave what now
Can shake more blossom from autumnal chill
Than all my bursting springtime knew. A girl
Perched in some window of her mother's house
Had watched my daily passage to and fro;
Had heard impossible history of my past;
Imagined some impossible history
Lived at my side; thought time's disfiguring touch
Gave but more reason for a woman's care.
Yet was it love of me, or was it love
Of the stark mystery that has dazed my sight,
Perplexed her fantasy and planned her care?
Or did the torchlight of that mystery

Pick out my feat
Two contemplat:
Through sheer b
The garden path
Before she had s
And asked about
And often those
On old dry writ
On old dry fagg
The extravaganc
As if that writin
Were some dear

I sat where I co And wrote by c And fearing tha I rose that I mi I heard her voice What's bowed y And saw her sit Or was it she t I say that a Dji She seemed the Truths without Of all the unco Nor thought of Self-born, high Those terrible Drawn through Even those tru Must drive the

And she lay do

Pick out my features in such light and shade Two contemplating passions chose one theme Through sheer bewilderment? She had not paced The garden paths, nor counted up the rooms, Before she had spread a book upon her knees And asked about the pictures or the text; And often those first days I saw her stare On old dry writing in a learned tongue, On old dry faggots that could never please The extravagance of spring; or move a hand As if that writing or the figured page Were some dear cheek.

Upon a moonless night I sat where I could watch her sleeping form, And wrote by candle-light; but her form moved, And fearing that my light disturbed her sleep I rose that I might screen it with a cloth. I heard her voice, 'Turn that I may expound What's bowed your shoulder and made pale your cheek'; And saw her sitting upright on the bed; Or was it she that spoke or some great Djinn? I say that a Djinn spoke. A live-long hour She seemed the learned man and I the child: Truths without father came, truths that no book Of all the uncounted books that I have read, Nor thought out of her mind or mine begot, Self-born, high-born, and solitary truths, Those terrible implacable straight lines Drawn through the wandering vegetative dream, Even those truths that when my bones are dust Must drive the Arabian host.

The voice grew still, And she lay down upon her bed and slept,

But woke at the first gleam of day, rose up And swept the house and sang about her work In childish ignorance of all that passed. A dozen nights of natural sleep, and then When the full moon swam to its greatest height She rose, and with her eyes shut fast in sleep Walked through the house. Unnoticed and unfelt I wrapped her in a hooded cloak, and she, Half running, dropped at the first ridge of the desert And there marked out those emblems on the sand That day by day I study and marvel at, With her white finger. I led her home asleep And once again she rose and swept the house In childish ignorance of all that passed. Even to-day, after some seven years When maybe thrice in every moon her mouth Murmured the wisdom of the desert Djinns, She keeps that ignorance, nor has she now That first unnatural interest in my books. It seems enough that I am there; and yet, Old fellow-student, whose most patient ear Heard all the anxiety of my passionate youth, It seems I must buy knowledge with my peace. What if she lose her ignorance and so Dream that I love her only for the voice, That every gift and every word of praise Is but a payment for that midnight voice That is to age what milk is to a child? Were she to lose her love, because she had lost Her confidence in mine, or even lose Its first simplicity, love, voice and all, All my fine feathers would be plucked away And I left shivering. The voice has drawn

A quality of we Particular quality and those abstraction the great All, all those Are but a new Drunk with the And now my A woman's but Under it wisco Of all Arabia Nor dazzled In the confus Can hear the

A quality of wisdom from her love's Particular quality. The signs and shapes; All those abstractions that you fancied were From the great Treatise of Parmenides; All, all those gyres and cubes and midnight things Are but a new expression of her body Drunk with the bitter sweetness of her youth. And now my utmost mystery is out. A woman's beauty is a storm-tossed banner; Under it wisdom stands, and I alone—Of all Arabia's lovers I alone—Nor dazzled by the embroidery, nor lost In the confusion of its night-dark folds, Can hear the armed man speak.

In this edition spelling of G The 'd' of 'Ed her perhaps m known to me 'Angus.' In 1 Muirthemne sh could withou average reader

Many of the Indian subjects been written b when I began I age, I believe, 1 I have reprinted most, and then some of them b that they remir dramatic scene about a man lo between them, and knowing b into my head w salmon. 'One i no, two people A Vision busy v

NOTES

THE SPELLING OF GAELIC NAMES

In this edition of my poems I have adopted Lady Gregory's spelling of Gaelic names, with, I think, two exceptions. The 'd' of 'Edain' ran too well in my verse for me to adopt her perhaps more correct 'Etain,' and for some reason unknown to me I have always preferred 'Aengus' to her 'Angus.' In her Gods and Fighting Men and Cuchulain of Muirthemne she went as close to the Gaelic spelling as she could without making the names unpronounceable to the average reader.—1933.

CROSSWAYS. THE ROSE

(pages 7, 35)

Many of the poems in Crossways, certainly those upon Indian subjects or upon shepherds and fauns, must have been written before I was twenty, for from the moment when I began The Wanderings of Oisin, which I did at that age, I believe, my subject-matter became Irish. Every time I have reprinted them I have considered the leaving out of most, and then remembered an old school friend who has some of them by heart, for no better reason, as I think, than that they remind him of his own youth. The little Indian dramatic scene was meant to be the first scene of a play about a man loved by two women, who had the one soul between them, the one woman waking when the other slept, and knowing but daylight as the other only night. It came into my head when I saw a man at Rosses Point carrying two salmon. 'One man with two souls,' I said, and added, 'O no, two people with one soul.' I am now once more in A Vision busy with that thought, the antitheses of day and of night and of moon and of sun. The Rose was part of my second book, The Countess Cathleen and Various Legends and Lyrics, 1892, and I notice upon reading these poems for the first time for several years that the quality symbolized as The Rose differs from the Intellectual Beauty of Shelley and of Spenser in that I have imagined it as suffering with man and not as something pursued and seen from afar. It must have been a thought of my generation, for I remember the mystical painter Horton, whose work had little of his personal charm and real strangeness, writing me these words, 'I met your beloved in Russell Square, and she was weeping,' by which he meant that he had seen a vision of my neglected soul.—1925.

THE HOSTING OF THE SIDHE

(page 61)

The gods of ancient Ireland, the Tuatha de Danaan, or the Tribes of the goddess Danu, or the Sidhe, from Aes Sidhe, or Sluagh Sidhe, the people of the Faery Hills, as these words are usually explained, still ride the country as of old. Sidhe is also Gaelic for wind, and certainly the Sidhe have much to do with the wind. They journey in whirling wind, the winds that were called the dance of the daughters of Herodias in the Middle Ages, Herodias doubtless taking the place of some old goddess. When old country people see the leaves whirling on the road they bless themselves, because they believe the Sidhe to be passing by. Knocknarea is in Sligo, and the country people say that Maeve, still a great queen of the western Sidhe, is buried in the cairn of stones upon it. I have written of Clooth-na-Bare in The Celtic Twilight. She 'went all over the world, seeking a lake deep enough to drown her faery life, of which she had grown weary, leaping from hill to hill, and setting up a cairn of stones wherever her feet lighted, until, at last, she found the deepest water in the world in little Lough Ia, on the top of the bird mountain, in Sligo.' I forget, now, where I heard this story, but it may have been from a priest at Collooney. Cloo Cailleac Bare, the Bare, and Berah, appears in the le

This poem is sung and transla County Sligo; h keeners keening

HE MOURNS FOF AND HIS BE WORLD

My deer and hound that flick Arthurian legen tures, and to the ginning of, I th country of the y Hounds of Ann red ears, and w Welsh peasants winds; and is country people dead if you lar woman told a thought were w but found, who and I do not d birds are of the of a last-centur country of the y Collooney. Clooth-na-Bare is evidently a corruption of Cailleac Bare, the old woman of Bare, who, under the names Bare, and Berah, and Beri, and Verah, and Dera, and Dhira, appears in the legends of many places.—1899–1906.

THE HOST OF THE AIR

(page 63)

This poem is founded on an old Gaelic ballad that was sung and translated for me by a woman at Ballisodare in County Sligo; but in the ballad the husband found the keeners keening his wife when he got to his house.—1899.

HE MOURNS FOR THE CHANGE THAT HAS COME UPON HIM AND HIS BELOVED AND LONGS FOR THE END OF THE WORLD

(page 68)

My deer and hound are properly related to the deer and hound that flicker in and out of the various tellings of the Arthurian legends, leading different knights upon adventures, and to the hounds and to the hornless deer at the beginning of, I think, all tellings of Oisin's journey to the country of the young. The hound is certainly related to the Hounds of Annwoyn or of Hades, who are white, and have red ears, and were heard, and are, perhaps, still heard by Welsh peasants, following some flying thing in the night winds; and is probably related to the hounds that Irish country people believe will awake and seize the souls of the dead if you lament them too loudly or too soon. An old woman told a friend and myself that she saw what she thought were white birds, flying over an enchanted place, but found, when she got near, that they had dogs' heads; and I do not doubt that my hound and these dog-headed birds are of the same family. I got my hound and deer out of a last-century Gaelic poem about Oisin's journey to the country of the young. After the hunting of the hornless deer, that leads him to the seashore, and while he is riding over the sea with Niamh, he sees amid the waters—I have not the Gaelic poem by me, and describe it from memory—a young man following a girl who has a golden apple, and afterwards a hound with one red ear following a deer with no horns. This hound and this deer seem plain images of the desire of the man 'which is for the woman,' and 'the desire of the woman which is for the desire of the man,' and of all desires that are as these. I have read them in this way in *The Wanderings of Oisin*, and have made my lover sigh because he has seen in their faces 'the immortal desire of Immortals.'

The man in my poem who has a hazel wand may have been Aengus, Master of Love; and I have made the boar without bristles come out of the West, because the place of sunset was in Ireland, as in other countries, a place of symbolic darkness and death.—1899.

THE CAP AND BELLS

(page 71)

I dreamed this story exactly as I have written it, and dreamed another long dream after it, trying to make out its meaning, and whether I was to write it in prose or verse. The first dream was more a vision than a dream, for it was beautiful and coherent, and gave me the sense of illumination and exaltation that one gets from visions, while the second dream was confused and meaningless. The poem has always meant a great deal to me, though, as is the way with symbolic poems, it has not always meant quite the same thing. Blake would have said, 'The authors are in eternity,' and I am quite sure they can only be questioned in dreams.—1899.

THE VALLEY OF THE BLACK PIG

(page 73)

All over Ireland there are prophecies of the coming rout of the enemies of Ireland, in a certain Valley of the Black

Pig, and these pro in the Fenian days. who would not giv the Battle could n as a rule, periods coming. A few year at Lissadell, in Sli descriptions of the that it will be so their fetlocks in b will rot from the them. If one read Frazer's Golden Bo about the boar th boars and sows, or that the Pig it is winter doing batt with life.—1899-

I find that I har Conchubar's dear vision but was to out of the dried sling; and this bar had been mended gold because his time of Elizabet years, until the cording to some changes of the comoon at its full, was along with I change upon the the Son of God,"

Pig, and these prophecies are, no doubt, now, as they were in the Fenian days, a political force. I have heard of one man who would not give any money to the Land League, because the Battle could not be until the close of the century; but, as a rule, periods of trouble bring prophecies of its near coming. A few years before my time, an old man who lived at Lissadell, in Sligo, used to fall down in a fit and rave out descriptions of the Battle; and a man in Sligo has told me that it will be so great a battle that the horses shall go up to their fetlocks in blood, and that their girths, when it is over, will rot from their bellies for lack of a hand to unbuckle them. If one reads Rhys' Celtic Heathendom by the light of Frazer's Golden Bough, and puts together what one finds there about the boar that killed Diarmuid, and other old Celtic boars and sows, one sees that the battle is mythological, and that the Pig it is named from must be a type of cold and winter doing battle with the summer, or of death battling with life.—1899-1906.

THE SECRET ROSE

(page 77)

I find that I have unintentionally changed the old story of Conchubar's death. He did not see the Crucifixion in a vision but was told of it. He had been struck by a ball made out of the dried brains of an enemy and hurled out of a sling; and this ball had been left in his head, and his head had been mended, the Book of Leinster says, with thread of gold because his hair was like gold. Keeting, a writer of the time of Elizabeth, says: 'In that state did he remain seven years, until the Friday on which Christ was crucified, according to some historians; and when he saw the unusual changes of the creation and the eclipse of the sun and the moon at its full, he asked of Bucrach, a Leinster Druid, who was along with him, what was it that brought that unusual change upon the planets of Heaven and Earth. 'Jesus Christ, the Son of God,' said the Druid, 'who is now being cruci-

fied by the Jews." "That is a pity," said Conchubar; "were I in his presence I would kill those who were putting him to death." And with that he brought out his sword, and rushed at a woody grove which was convenient to him, and began to cut and fell it; and what he said was, that if he were among the Jews, that was the usage he would give them, and from the excessiveness of his fury which seized upon him, the ball started out of his head, and some of the brain came after it, and in that way he died. The wood of Lanshraigh, in Feara Rois, is the name by which that shrubby wood is called."

I have imagined Cuchulain meeting Fand 'walking among flaming dew,' because, I think, of something in Mr.

Standish O'Grady's books.

I have founded the man 'who drove the gods out of their liss,' or fort, upon something I have read about Caoilte after the battle of Gabhra, when almost all his companions were killed, driving the gods out of their liss, either at Osraighe, now Ossory, or at Eas Ruaidh, now Asseroe, a waterfall at Ballyshannon, where Ilbreac, one of the children of the goddess Danu, had a liss. But maybe I only read it in Mr. Standish O'Grady, who has a fine imagination, for I find no such story in Lady Gregory's book.

I have founded 'the proud dreaming king' upon Fergus, the son of Roigh, but when I wrote my poem here, and in the song in my early book, 'Who will drive with Fergus now?' I only knew him in Mr. Standish O'Grady, and my imagination dealt more freely with what I did know than

I would approve of to-day.

I have founded 'him who sold tillage, and house, and goods,' upon something in 'The Red Pony,' a folk-tale in Mr. Larminie's West Irish Folk Tales. A young man 'saw a light before him on the high-road. When he came as far, there was an open box on the road, and a light coming up out of it. He took up the box. There was a lock of hair in it. Presently he had to go to become the servant of a king for his living. There were eleven boys. When they were going out into the stable at ten o'clock, each of them took a light

but he. He took no went into his own s opened the box. He was great. It was tw king hears of it, and says, 'You must go hair belongs.' In the marries the woman.

RESPONSIBI

'Free of the ten without more rewr chant in Villon, I and four.' Irish me the Irish Parliamer—I cannot rememsix.'—1914.

POEMS BEGINNIN AND END

In the thirty year Irish newspapers, imagination. The were reasons to justified there were none to accusations forget And another was have been reasons laughing thing, the cannot have been rhetoric spread a America. The third of a building for pictures. . . .

but he. He took no candle at all with him. Each of them went into his own stable. When he went into his stable he opened the box. He left it in a hole in the wall. The light was great. It was twice as much as in the other stables.' The king hears of it, and makes him show him the box. The king says, 'You must go and bring me the woman to whom the hair belongs.' In the end, the young man, and not the king, marries the woman.—1899—1906.

RESPONSIBILITIES. INTRODUCTORY RHYMES (page 113)

'Free of the ten and four' is an error I cannot now correct, without more rewriting than I have a mind for. Some merchant in Villon, I forget the reference, was 'free of the ten and four.' Irish merchants exempted from certain duties by the Irish Parliament were, unless memory deceives me again—I cannot remember my authority—'free of the eight and six.'—1914.

POEMS BEGINNING WITH THAT 'TO A WEALTHY MAN' AND ENDING WITH THAT 'TO A SHADE'

(pages 119-123)

In the thirty years or so during which I have been reading Irish newspapers, three public controversies have stirred my imagination. The first was the Parnell controversy. There were reasons to justify a man's joining either party, but there were none to justify, on one side or on the other, lying accusations forgetful of past service, a frenzy of detraction. And another was the dispute over *The Playboy*. There may have been reasons for opposing as for supporting that violent, laughing thing, though I can see the one side only, but there cannot have been any for the lies, for the unscrupulous rhetoric spread against it in Ireland, and from Ireland to America. The third prepared for the Corporation's refusal of a building for Sir Hugh Lane's famous collection of pictures. . . .

[Note.—I leave out two long paragraphs which have been published in earlier editions of these poems. There is no need now to defend Sir Hugh Lane's pictures against Dublin newspapers. The trustees of the London National Gallery, through his leaving a codicil to his will unwitnessed, have claimed the pictures for London, and propose to build a wing to the Tate Gallery to contain them. Some that were hostile are now contrite, and doing what they can, or letting others do unhindered what they can, to persuade Parliament to such action as may restore the collection to Ireland.—

Jan. 1917.

These controversies, political, literary, and artistic, have showed that neither religion nor politics can of itself create minds with enough receptivity to become wise, or just and generous enough to make a nation. Other cities have been as stupid-Samuel Butler laughs at shocked Montreal for hiding the Discobolus in a lumber-room—but Dublin is the capital of a nation, and an ancient race has nowhere else to look for an education. Goethe in Wilhelm Meister describes a saintly and naturally gracious woman, who, getting into a quarrel over some trumpery detail of religious observance. grows-she and all her little religious community-angry and vindictive. In Ireland I am constantly reminded of that fable of the futility of all discipline that is not of the whole being. Religious Ireland—and the pious Protestants of my childhood were signal examples—thinks of divine things as a round of duties separated from life and not as an element that may be discovered in all circumstance and emotion, while political Ireland sees the good citizen but as a man who holds to certain opinions and not as a man of good will. Against all this we have but a few educated men and the remnants of an old traditional culture among the poor. Both were stronger forty years ago, before the rise of our new middle class which made its first public display during the nine years of the Parnellite split, showing how base at moments of excitement are minds without culture.—1914.

Lady Gregory in her Life of Sir Hugh Lane assumes that the poem which begins 'Now all the truth is out' (p. 122),

was addressed to hir —1922.

The fable for thi giving some lecture how all thought an than human life.' I one day into the blue if lost in the blue remembered that the blue sky, and loo Magi' (p. 141), condolls.—1914.

'UN

When I was a character's trees a limil,' and was tolespool, as I was accommound. One could the smoke looked a day a foreign seamountain.—1919.

TH

THE DOUBL

MICHAE

was addressed to him. It was not; it was addressed to herself.

—1922.

THE DOLLS

(page 141)

The fable for this poem came into my head while I was giving some lectures in Dublin. I had noticed once again how all thought among us is frozen into 'something other than human life.' After I had made the poem, I looked up one day into the blue of the sky, and suddenly imagined, as if lost in the blue of the sky, stiff figures in procession. I remembered that they were the habitual image suggested by blue sky, and looking for a second fable called them 'The Magi' (p. 141), complementary forms of those enraged dolls.—1914.

'UNPACKS THE LOADED PERN' (page 163)

When I was a child at Sligo I could see above my grand-father's trees a little column of smoke from 'the pern mill,' and was told that 'pern' was another name for the spool, as I was accustomed to call it, on which thread was wound. One could not see the chimney for the trees, and the smoke looked as if it came from the mountain, and one day a foreign sea-captain asked me if that was a burning mountain.—1919.

THE PHASES OF THE MOON (page 183)

THE DOUBLE VISION OF MICHAEL ROBARTES (page 192)

MICHAEL ROBARTES AND THE DANCER (page 197)
445



Years ago I wrote three stories in which occur the names of Michael Robartes and Owen Aherne. I now consider that I used the actual names of two friends, and that one of these friends, Michael Robartes, has but lately returned from Mesopotamia, where he has partly found and partly thought out much philosophy. I consider that Aherne and Robartes, men to whose namesakes I had attributed a turbulent life or death, have quarrelled with me. They take their place in a phantasmagoria in which I endeavour to explain my philosophy of life and death. To some extent I wrote these poems as a text for exposition.—1922.

SAILING TO BYZANTIUM

(Stanza IV, page 218)

I have read somewhere that in the Emperor's palace at Byzantium was a tree made of gold and silver, and artificial birds that sang.

THE TOWER

(page 218)

The persons mentioned are associated by legend, story and tradition with the neighbourhood of Thoor Ballylee or Ballylee Castle, where the poem was written. Mrs. French lived at Peterswell in the eighteenth century and was related to Sir Jonah Barrington, who described the incident of the ears and the trouble that came of it. The peasant beauty and the blind poet are Mary Hynes and Raftery, and the incident of the man drowned in Cloone Bog is recorded in my Celtic Twilight. Hanrahan's pursuit of the phantom hare and hounds is from my Stories of Red Hanrahan. The ghosts have been seen at their game of dice in what is now my bedroom, and the old bankrupt man lived about a hundred years ago. According to one legend he could only leave the Castle upon a Sunday because of his creditors, and according to another he hid in the secret passage.

In the passage ab sciously echoed one Sturge Moore's 'Dy American lecturing

Thrill
O silv
Love for the And be With
Down
Of riv
Enter
O wo
The good word word the something and the second a

O silv

Struck

Clean

Home

When I wrote that it is somethin as all transcendent soul recall, then, author of all living them all, whateve creatures of the amaker of the sun; and conducts all the distinct from all they, for they gat abandons them, bis of eternal being

In the passage about the Swan in Part III I have unconsciously echoed one of the loveliest lyrics of our time—Mr. Sturge Moore's 'Dying Swan.' I often recited it during an American lecturing tour, which explains the theft.

THE DYING SWAN

O silver-throated Swan
Struck, struck! A golden dart
Clean through thy breast has gone
Home to thy heart.
Thrill, thrill, O silver throat!
O silver trumpet, pour
Love for defiance back
On him who smote!
And brim, brim o'er
With love; and ruby-dye thy track
Down thy last living reach
Of river, sail the golden light—
Enter the sun's heart—even teach,
O wondrous-gifted Pain, teach thou
The god to love, let him learn how.

When I wrote the lines about Plato and Plotinus I forgot that it is something in our own eyes that makes us see them as all transcendence. Has not Plotinus written: 'Let every soul recall, then, at the outset the truth that soul is the author of all living things, that it has breathed the life into them all, whatever is nourished by earth and sea, all the creatures of the air, the divine stars in the sky; it is the maker of the sun; itself formed and ordered this vast heaven and conducts all that rhythmic motion—and it is a principle distinct from all these to which it gives law and movement and life, and it must of necessity be more honourable than they, for they gather or dissolve as soul brings them life or abandons them, but soul, since it never can abandon itself, is of eternal being'?—1928.

MEDITATIONS IN TIME OF CIVIL WAR

(page 225)

These poems were written at Thoor Ballylee in 1922, during the civil war. Before they were finished the Republicans blew up our 'ancient bridge' one midnight. They forbade us to leave the house, but were otherwise polite, even saying at last 'Good-night, thank you,' as though we had given them the bridge.

The sixth poem is called 'The Stare's Nest by My Window.' In the west of Ireland we call a starling a stare, and during the civil war one built in a hole in the masonry by my bed-

room window.

In the second stanza of the seventh poem occur the words, 'Vengeance on the murderers of Jacques Molay.' A cry for vengeance because of the murder of the Grand Master of the Templars seems to me fit symbol for those who labour from hatred, and so for sterility in various kinds. It is said to have been incorporated in the ritual of certain Masonic societies of the eighteenth century, and to have fed class-hatred.

I suppose that I must have put hawks into the fourth stanza because I have a ring with a hawk and a butterfly upon it, to symbolize the straight road of logic, and so of mechanism, and the crooked road of intuition: 'For wisdom is a butterfly and not a gloomy bird of prey.'—1928.

NINETEEN HUNDRED AND NINETEEN

(Sixth poem, page 236)

The country people see at times certain apparitions whom they name now 'fallen angels,' now 'ancient inhabitants of the country,' and describe as riding at whiles 'with flowers upon the heads of the horses.' I have assumed in the sixth poem that these horsemen, now that the times worsen, give

way to worse. My spirit much run af teenth century. Are also in the Platonic

1

These songs are Resurrection.'

2

I have taken the essay on 'The Cave Porphyry for construction' of problivion given in the state of the state

THE WIN

'I am of Ireland' of an Irish fourteer to me a few years at that precedes it, to a quotation from In this book and elin particular, as stairs to the philoto interpret what expression. Shelle there are gyres in certain classical a and the Moon' (p. Ballylee has a wast

way to worse. My last symbol, Robert Artisson, was an evil spirit much run after in Kilkenny at the start of the four-teenth century. Are not those who travel in the whirling dust also in the Platonic Year? See p. 234.

TWO SONGS FROM A PLAY

(page 239)

These songs are sung by the Musicians in my play 'The Resurrection.'

AMONG SCHOOL CHILDREN

(Stanza V, page 244)

I have taken the 'honey of generation' from Porphyry's essay on 'The Cave of the Nymphs,' but find no warrant in Porphyry for considering it the 'drug' that destroys the 'recollection' of pre-natal freedom. He blamed a cup of oblivion given in the zodiacal sign of Cancer.

THE WINDING STAIR AND OTHER POEMS

(page 263)

'I am of Ireland' (p. 303) is developed from three or four lines of an Irish fourteenth-century dance song somebody repeated to me a few years ago. 'The sun in a golden cup' in the poem that precedes it, though not 'The moon in a silver bag,' is a quotation from somewhere in Mr. Ezra Pound's 'Cantos.' In this book and elsewhere, I have used towers, and one tower in particular, as symbols and have compared their winding stairs to the philosophical gyres, but it is hardly necessary to interpret what comes from the main track of thought and expression. Shelley uses towers constantly as symbols, and there are gyres in Swedenborg, and in Thomas Aquinas and certain classical authors. Part of the symbolism of 'Blood and the Moon' (p. 267) was suggested by the fact that Thoor Ballylee has a waste room at the top and that butterflies come

in through the loopholes and die against the window-panes. The 'learned astrologer' in 'Chosen' (p. 311) was Macrobius, and the particular passage was found for me by Dr. Sturm, that too little known poet and mystic. It is from Macrobius's comment upon 'Scipio's Dream' (Lib. I. Cap. XII. Sec. 5): ... when the sun is in Aquarius, we sacrifice to the Shades, for it is in the sign inimical to human life; and from thence, the meeting-place of Zodiac and Milky Way, the descending soul by its defluction is drawn out of the spherical, the sole divine form, into the cone.' In 'The Mother of God' (p. 281) the words 'A fallen flare through the hollow of an ear' are, I am told, obscure. I had in my memory Byzantine mosaic pictures of the Annunciation, which show a line drawn from a star to the ear of the Virgin. She received the Word through the ear, a star fell, and a star was born.

When The Winding Stair was published separately by Macmillan & Co. it was introduced by the following dedication:

DEAR DULAC,

I saw my Hawk's Well played by students of our Schools of Dancing and of Acting a couple of years ago in a little theatre called 'The Peacock,' which shares a roof with the Abbey Theatre. Watching Cuchulain in his lovely mask and costume, that ragged old masked man who seems hundreds of years old, that Guardian of the Well, with your great golden wings and dancing to your music, I had one of those moments of excitement that are the dramatist's reward and decided there and then to dedicate to you my next book of verse.

'A Woman Young and Old' was written before the publication of The Tower, but left out for some reason I cannot recall. I think that I was roused to write 'Death' and 'Blood and the Moon' by the assassination of Kevin O'Higgins, the finest intellect in Irish public life, and, I think I may add, to some extent, my friend. 'A Dialogue of Self and Soul' was written in the spring of 1928 during a long illness, indeed told me to stop w returned as an in and daring of the journalism and crit the world would b Mist and Snow,' almost all that gro exultant weeks 'W I warmed myself 'Veronica's Napki my years. Since th for Music Perhaps of the first poems.

1933

TH

The poem is fou S. Patrick and Ois century. The even the poems in this rather in the inde described by the f it therefore, like t much that is med Gaelic poems do island, but a story an island to the no south, and Adam':

I published in which, as I had no long illness, indeed finished the day before a Cannes doctor told me to stop writing. Then in the spring of 1929 life returned as an impression of the uncontrollable energy and daring of the great creators; it seemed that but for journalism and criticism, all that evasion and explanation, the world would be torn in pieces. I wrote 'Mad as the Mist and Snow,' a mechanical little song, and after that almost all that group of poems called in memory of those exultant weeks 'Words for Music Perhaps.' Then ill again, I warmed myself back into life with 'Byzantium' and 'Veronica's Napkin,' looking for a theme that might befit my years. Since then I have added a few poems to 'Words for Music Perhaps,' but always keeping the mood and plan of the first poems.

1933

THE WANDERINGS OF OISIN

(page 323)

The poem is founded upon the Middle Irish dialogues of S. Patrick and Oisin and a certain Gaelic poem of the last century. The events it describes, like the events in most of the poems in this volume, are supposed to have taken place rather in the indefinite period, made up of many periods, described by the folk-tales, than in any particular century; it therefore, like the later Fenian stories themselves, mixes much that is mediaeval with much that is ancient. The Gaelic poems do not make Oisin go to more than one island, but a story in Silva Gadelica describes 'four paradises,' an island to the north, an island to the west, an island to the south, and Adam's paradise in the east.—1912.

THE SHADOWY WATERS

(page 387)

I published in 1902 a version of The Shadowy Waters, which, as I had no stage experience whatever, was unsuitable for stage representation, though it had some little success when played during my absence in America in 1904, with very unrealistic scenery before a very small audience of cultivated people. On my return I rewrote the play in its present form, but found it still too profuse in speech for stage representation. In 1906 I made a stage version, which was played in Dublin in that year. The present version must be considered as a poem only.—1922.

INI

Adam's Curse.
After Long Silence.
Against Unworthy Pr
All Souls' Night.
All Things can Temp
Among School Childi
Anashuya and Vijaya
Ancestral Houses.
Another Song of a Fo
Appointment, An
Arrow, The.
At Algeciras—A Med
At Galway Races.
At the Abbey Theatr

Baile and Aillinn
Ballad of Father Gill
Ballad of Father O'F
Ballad of Moll Mage
Ballad of the Foxhun
Balloon of the Mind
Before the World wa
Beggar to Beggar Cri
Blessed, The
Blood and the Moon
Broken Dreams
Brown Penny
Byzantium

INDEX TO TITLES

| | | | | | | PAGE |
|--------------------------------|------|------|---|---|---|------|
| Adam's Curse | | | | | | 88 |
| After Long Silence | | | | | | 301 |
| Against Unworthy Praise . | | • | | | | 103 |
| All Souls' Night | | | | | | 256 |
| All Things can Tempt me. | | | | | | 109 |
| Among School Children . | | | | | | 242 |
| Anashuya and Vijaya . | ٠ | | | | | 10 |
| Ancestral Houses | | | | | | 225 |
| Another Song of a Fool . | | | | | | 191 |
| Appointment, An | | • | | | | 141 |
| Arrow, The | | | | | | 85 |
| At Algeciras-A Meditation up | on D | eath | | | ٠ | 278 |
| At Galway Races | | | | • | , | 108 |
| At the Abbey Theatre . | ٠ | • | • | ٠ | • | 107 |
| Baile and Aillinn | | | | | | 373 |
| Ballad of Father Gilligan, The | | | | | | 52 |
| Ballad of Father O'Hart, The | | | | | | 23 |
| Ballad of Moll Magee, The | | | | | | 25 |
| Ballad of the Foxhunter, The | | | | | | 27 |
| Balloon of the Mind, The . | | | | | | 175 |
| Before the World was Made | | | | | | 308 |
| Beggar to Beggar Cried . | | | | | | 128 |
| Blessed, The | | | | | | 75 |
| Blood and the Moon . | | | | • | | 267 |
| Broken Dreams | • | | | | | 172 |
| Brown Penny | | | | | | 109 |
| Byzantium | | | | | • | 280 |
| | | | | | | |

| Cap and Bells, The | | | 71 |
|---|-----|-------|-----|
| Cat and the Moon, The | | | 188 |
| Certain Artists bring her Dolls and Drawings. | • | | 177 |
| Choice, The | • | • | 278 |
| Chosen | | | 311 |
| Cloak, the Boat, and the Shoes, The | • | | 10 |
| Coat, A | • | | 142 |
| Cold Heaven, The | | • | 140 |
| Collar-Bone of a Hare, The | | | 153 |
| Colonus' Praise | | • | 245 |
| Coming of Wisdom with Time, The | | | 105 |
| Consolation | • | • | 310 |
| Coole and Ballylee, 1931 | | | 275 |
| Coole Park, 1929 | • | | 273 |
| Countess Cathleen in Paradise, The | • | | 48 |
| Cradle Song, A | | | 45 |
| Crazed Moon, The | • | • | 273 |
| Crazy Jane and Jack the Journeyman | • | • | 292 |
| Crazy Jane and the Bishop | | • | 290 |
| Crazy Jane Grown Old looks at the Dancers . | | | 295 |
| Crazy Jane on God | | | 293 |
| Crazy Jane on the Day of Judgment | • | • | 291 |
| Crazy Jane Reproved | | • | 291 |
| Crazy Jane talks with the Bishop. | • | • | 294 |
| Cuchulain's Fight with the Sea | • | ٠ | 37 |
| 5 | | | |
| Dancer at Cruachan and Cro-Patrick, The . | • | • | 304 |
| Dawn, The | | ٠ | 164 |
| Death | • | | 264 |
| Death of the Hare, The | | | 250 |
| Dedication to a Book of Stories Selected from | the | Irish | |
| Novelists, The | • | • | 51 |
| Deep-Sworn Vow, A | • | • | 174 |
| Delphic Oracle upon Plotinus, The | • | • | 306 |

Demon and Beast Dialogue of Self and Dolls, The . Double Vision of M Down by the Salley Dream of Death, A Drinking Song, A

PAGE

Easter, 1916 . Ego Dominus Tuus Empty Cup, The End of Day, The Ephemera . Everlasting Voices,

Faery Song, A Fallen Majesty Falling of the Leave Fascination of Wha Father and Child Fergus and the Dru Fiddler of Dooney, First Confession, A First Love Fish, The Fisherman, The Folly of Being Con Fool by the Roadsi For Anne Gregory Fragments Friend's Illness, A Friends.

Friends of His You

| | | | / | | | | | LAGE |
|----------------------|---------|----------------|-----------------|----|---|---|---|------------|
| Demon and Beast | | | ge ^e | | • | | | 209 |
| Dialogue of Self and | l Soul, | $A \checkmark$ | | | | | | 265 |
| Dolls, The . | • | | | | | | | 141 |
| Double Vision of M | | | tes, T | he | | | | 192 |
| Down by the Salley | | ns | | | | | | 22 |
| Dream of Death, A | | | | | | | | 47 |
| Drinking Song, A | • | | | | | | | 104 |
| , | | | | | | | | |
| Easter, 1916 . | | | | | | | | 2.22 |
| Ego Dominus Tuus | • | • | • | • | • | • | • | 202 180 |
| Empty Cup, The | • | • | • | • | • | • | ٠ | |
| End of Day, The | • | • | • | • | • | • | • | 251 |
| | • | • | • | • | • | • | • | 178 |
| Ephemera . | · | • | • | • | • | • | ٠ | 16 |
| Everlasting Voices, | 1 ne | • | • | ٠ | • | • | • | 61 |
| - C . | | | | | | | | |
| Faery Song, A | • | • | • | ٠ | ٠ | • | • | 43 |
| Fallen Majesty | ٠ | • | • | | • | | • | 138 |
| Falling of the Leave | | | • | • | | | • | 16 |
| Fascination of Wha | t's Di | fficult, | The | • | | | | 104 |
| Father and Child | • | • | | • | • | | | 308 |
| Fergus and the Dru | | • | | | | | | 36 |
| Fiddler of Dooney, | The | | | | | | | 82 |
| First Confession, A | | • | | | | | | 309 |
| First Love . | | | | | | | | 249 |
| Fish, The . | | | | | | | | 64 |
| Fisherman, The | | | | | | | | 166 |
| Folly of Being Com | fortec | l, The | | | | | | 86 |
| Fool by the Roadsi | | | | | | | | 247 |
| For Anne Gregory | | | | | | | | 277 |
| Fragments . | | | | | | | | 240 |
| Friend's Illness, A | | | | | | | | 109 |
| Friends | | | | | | | | 139 |
| Friends of His You | ith. T | he | | | | | | 252 |
| | , | | • | • | • | • | • | - , - |

| From 'Oedipus at Colonus | s' | | | | • | | 255 |
|---------------------------|---------|---------|--------------|---------|--------|------|-------|
| From the 'Antigone' | | | | | | | 315 |
| 110111 1111 | | | | | | | |
| Gift of Harun Al-Rashid, | The | | | • | • | • | 427 |
| Girl's Song · · | | | • | • | • | ٠ | 296 |
| Gratitude to the Unknow | n Insti | cuctors | • | • | • | • | 287 |
| Grey Rock, The . | • | • | • | | • | ٠ | 115 |
| • | | | | | | | |
| Happy Townland, The | • | | • | | • | ٠ | 94 |
| Harp of Aengus, The | | | | • | | ٠ | 385 |
| Hawk, The | | | | | | • | 167 |
| He bids his Beloved be a | t Peac | е. | • | • | • | ٠ | 69 |
| He gives his Beloved cert | tain R | hymes | | • | • | • | 71 |
| He hears the Cry of the | Sedge | | | • | | | 75 |
| He mourns for the Chan | ige tha | t has c | ome u | pon hi | m and | his | |
| Beloved and longs f | or the | End o | f the | World | | • | 68 |
| He remembers Forgotter | n Beau | ty . | • | • | | | 69 |
| He reproves the Curlew | | | | | 4 | • | 69 |
| He tells of a Valley full | of Lo | vers | • | ٠ | | • | 74 |
| He tells of the Perfect I | Beauty | | | • | | | 74 |
| He thinks of his Past | Greatn | ess wh | en a l | Part of | the (| Con- | |
| stellations of Heav | en . | | | • | | ٠ | 81 |
| He thinks of those who | have ! | Spoken | Evil | of his | Belove | d . | 75 |
| He wishes for the Cloth | ns of F | leaven | • | • | • | • | 81 |
| He wishes his Beloved | were D | ead | • | • | ٠ | • | . 80 |
| Heart of the Woman, | Γhe | | | • | • | | . 67 |
| Her Anxiety | | | | • | • | | 297 |
| Her Courage | | | • | | • | | . 179 |
| Her Courtesy | | | | | • | | . 177 |
| Her Dream | | | | | • | | . 299 |
| Her Friends bring her | a Chri | stmas ´ | Γ ree | • | • | | . 179 |
| Her Praise | | | • | • | • | | . 168 |
| Her Race | • | | | | • | | . 179 |
| Her Triumph. | | | • | • | • | | . 310 |
| - | | | | | | | |

Her Vision in the W His Bargain . His Confidence His Dream . His Memories His Phoenix . His Wildness . Host of the Air, Th Hosting of the Sidh Hour before Dawn, Human Dignity

PAGE

'I am of Ireland'
I see Phantoms of H
of the Coming
I walked among the
Image from a Past I
In Memory of Alfre
In Memory of Eva (
In Memory of Majo
In the Seven Woods
Indian to His Love,
Indian upon God, T
Into the Twilight
Irish Airman Forese

King and No King

Lake Isle of Innisfre Lamentation of the Last Confession, A Leaders of the Crow Leda and the Swan

| | | | | | | | PAGE |
|---------------------------|-------|-------|-------|---------|--------|-----|------|
| Her Vision in the Wood | • | | | | | | 312 |
| His Bargain | | | | • | | | 299 |
| His Confidence . | | | | | | • | 298 |
| His Dream | • | • | | | | | 99 |
| His Memories . | | | | | | | 251 |
| His Phoenix | | | | | | | 170 |
| His Wildness | • | | | • | | | 254 |
| Host of the Air, The | | | | | | | 63 |
| Hosting of the Sidhe, Th | ne. | | | | | | 61 |
| Hour before Dawn, The | | | | | | | 130 |
| Human Dignity . | • | | | | • | | 250 |
| | | | | | | | |
| 'I am of Ireland' . | | | | | | | 303 |
| I see Phantoms of Hatre | d and | of th | е Неа | rt's Fu | Ilness | and | ردر |
| of the Coming Emp | | | | | | | 231 |
| I walked among the Seve | | | | | | · | 383 |
| Image from a Past Life, | | | | | | | 200 |
| In Memory of Alfred Po | | | | | | | 175 |
| In Memory of Eva Gore- | | | | | icz | | 263 |
| In Memory of Major Ro | | | | | | | 148 |
| In the Seven Woods. | | | ' | | | | 85 |
| Indian to His Love, The | | | | | | | 15 |
| Indian upon God, The | | | | | | | 14 |
| Into the Twilight . | | | | | | | 65 |
| Irish Airman Foresees hi | | h, An | | | | | 152 |
| | | • | | | | | |
| King and No King . | | | | | | | 102 |
| King and Ivo King . | • | • | • | • | * | • | 102 |
| _ , _ , , , | | | | | | | |
| Lake Isle of Innisfree, T | • | ′ | | • | • | • | 44 |
| Lamentation of the Old | | oner, | The | • | • | ٠ | 52 |
| Last Confession, A . | | ٠ | • | • | ٠ | • | 313 |
| Leaders of the Crowd, T | he | ٠ | ٠ | • 9 | • | ٠ | 207 |
| Leda and the Swan . | • | ٠ | • | ٠ | • | • | 241 |
| | | | | | | | |

| Lines Writter | in Dej | ection | | • | | • | | | 163 |
|----------------|--------------|---------|---------|-------|---------|--------|---------|-----|-------|
| Living Beauty | | | | • | | | • | • | 156 |
| Love's Loneli | ness . | | | | | | | | 298 |
| Lover asks Fo | orgivenes | s beca | use of | f his | Many | Mood | s, The | | 73 |
| Lover mourns | s for the | Loss | of Lo | ve, T | 'he | | | | 68 |
| Lover pleads | with his | Frier | nd for | Old | Friend | s, The | e . | | 79 |
| Lover speaks | to the | Heare | rs of l | his S | ongs ir | Com | ing Day | ys, | |
| The | | | | | | | | | 79 |
| Lover tells of | f the Ro | se in l | his H | eart, | The | • | | | 62 |
| Lullaby. | | | | | ٠ | G | | | 300 |
| 1. | | | | | | | | | |
| Mad as the | Mist and | l Snov | v | • | ٥ | ۰ | • | ٠ | 301 |
| Madness of | King Go | ll, Th | ie | | | • | • | | 17 |
| Magi, The | | | | ٠ | | | • | • | 141 |
| Maid Quiet | | | | | | • | • | • | 78 |
| Man Who I |) Dreamed | of Fa | erylan | d, T | he. | | | ٠ | 49 |
| Man Young | and Ol | d, A | | | • | • | • | ٠ | 249 |
| Mask, The | | | | • | • | • | • | ٠ | 106 |
| Meditation | in Time | of W | ar, A | | • | ٠ | • | • | 214 |
| Meditation | of the C | old Fi | sherm | an, T | he. | | • | • | 23 |
| Meditations | s in Tim | e of C | Civil V | Var | • | • | • | • | 225 |
| Meeting | | • | | | • | • | • | ٠ | 314 |
| Memory | | | • | | | | • | • | 168 |
| Memory of | Youth, | Α | • | | ٠ | • | • | ٠ | 137 |
| Men Impro | ove with | the Y | ears | | | | • | | 152 |
| Mermaid, | | | | | ٠ | | • | • | 250 |
| Michael R | obartes a | and th | e Dan | cer | • | | • | • | 197 |
| Mohini Ch | natterjee | • | • | | | • | v | | . 279 |
| Moods, Th | ne . | | | | | • | , | | . 62 |
| Mother of | God, T | he | | | | • | • | | . 281 |
| Mountain | Tomb, | The | | | | | • | | . 136 |
| My Descei | ndants | | ٠ | | | | • | | . 228 |
| My House | | | , | | ٠ | • | • | | . 226 |
| My Table | • | | ٠ | | • | • | • | | . 227 |
| • | | | | | | | | | |

Never Give all the F New Faces, The Nineteen Hundred a Nineteenth Century No Second Troy

O Do Not Love Too

Oil and Blood Old Age of Queen I Old Memory . Old Men Admiring Old Tom Again On a Picture of a Bl On a Political Prison On being asked for On hearing that the joined the Agit On those that hated 1907 On Woman .

Pardon, old fathers, Parting. Paudeen Peace . Peacock, The . People, The . Phases of the Moon Pity of Love, The

Owen Aherne and h

Players ask for a Bl selves, The

Poet pleads with the Poet to his Beloved,

| | | | | | | | | PAGE |
|--|----------------------------|-----------|--------|--------------|--------|---------|-------|------------------|
| Never Give all the | Heart | | • | | | | | 87 |
| | • | - | | | | | | 238 |
| Nineteen Hundred | | | | | | | | 232 |
| Nineteenth Centur | , | After, | The | | | | | 271 |
| No Second Troy | • | • | • | | • | | | IOI |
| | _ | | | | | | | |
| O Do Not Love T | oo Lo | ng | • | ٠ | ٠ | • | • | 93 |
| Oil and Blood | | | • | • | • | | | 270 |
| Old Age of Queen | | | | • | | • | | 365 |
| Old Memory . | • | • | • | | | | • | 86 |
| Old Men Admirin | g The | mselves | in th | e Wat | er, Th | ne. | • | 91 |
| Old Tom Again | | | • | | | • | • | 306 |
| On a Picture of a l | Black | Centau | r by E | dmun | d Dul | ac. | | 242 |
| On a Political Pris | oner | | | | | | | 206 |
| On being asked for | r a W | ar Poen | ı. | | | | | 175 |
| On hearing that th | ne Stu | dents c | f our | New | Unive | rsity I | nave | - |
| joined the Ag | | | | | | | | 105 |
| On those that hate | | | | | | | rld,' | |
| 1907 . | | . ' | | | | | | 124 |
| On Woman . | | • | | | , | | | 164 |
| Owen Aherne and | his D | ancers | | • | | | | 247 |
| | | | | | | | | ,- |
| Pardon, old fathers | s, if yo | ou still | remai | n. | | | | 113 |
| Parting | | | | | | | | 311 |
| Paudeen . | | | | | | | | 122 |
| Peace | | | | | | | | 103 |
| Peacock, The . | | | | | | | | • |
| People, The . | | | | | | | | 135 |
| | | ٠ | • | • | • | | • | 135 160 |
| - | • | • | • | | • | • | | 169 |
| Phases of the Moo | n, Th | e . | | | • | • | • | 169 183 |
| Phases of the Moo Pity of Love, The | n, Th | e . | | | • | | | 169 |
| Phases of the Moo Pity of Love, The Players ask for a | n, Th Blessir | e | | | • | | | 169 183 45 |
| Phases of the Moo Pity of Love, The Players ask for a selves, The | n, Th Blessir | e ng on t | he Psa | : lterie: | and | | | 169 183 45 |
| Phases of the Moo Pity of Love, The Players ask for a | n, Th Blessir he Ele | e ng on t | he Psa | : lterie: | and | | | 169 183 45 |

| | | | | | | 1 | PAGE | |
|----------------------------|----------|--------|---|---|---|---|------|--|
| Prayer for my Daughter, A | | | | | | | 211 | |
| Prayer for my Son, A . | | | | | | • | 238 | |
| Prayer on going into my H | ouse, | Α . | • | | | | 183 | |
| Presences | | • | , | • | • | | 174 | |
| Quarrel in Old Age | | | • | • | • | • | 286 | |
| Ragged Wood, The . | | | | | | | 92 | |
| Realists, The | | | | | | | 135 | |
| Reconciliation . | • | | | • | | | 102 | |
| Red Hanrahan's Song abou | ıt Irela | ınd | | | | | 90 | |
| Remorse for Intemperate S | peech | | | | | | 287 | |
| Results of Thought, The | | | | | | | 286 | |
| Road at My Door, The | | | | | | | 229 | |
| Rose of Battle, The . | | • | | | | | 42 | |
| Rose of Peace, The . | | • | | | • | | 41 | |
| Rose of the World, The | | | | | | | 41 | |
| Rose Tree, The . | | | | | | | 206 | |
| Running to Paradise. | • | • | | • | • | ٠ | 129 | |
| Sad Shepherd, The . / | | | | | | | 9 | |
| Sailing to Byzantium | • | | | | | | 217 | |
| Saint and the Hunchback, | The | | | | | | 189 | |
| Scholars, The / | <u> </u> | | | | | | 158 | |
| Second Coming, The | | | | | | | 210 | |
| Secret Rose, The . | | | | | | | 77 | |
| Secrets of the Old, The | | | | | | | 253 | |
| September 1913 . | | | | | | | 120 | |
| Seven Sages, The . | | • | | | | | 271 | |
| Shadowy Waters, The | | Ť | | | | | 387 | |
| She turns the Dolls' Faces | to the | e Wall | | | | | 178 | |
| Shepherd and Goatherd | | | | | | | 159 | |
| Sixteen Dead Men . | | | | | | | 205 | |
| Solomon and the Witch | • | • | • | | | ٠ | 199 | |
| | | | | | | | | |

Solomon to Sheba
Song, A
.
Song from 'The Play
Song of the Happy S
Song of the Old Mc
Song of Wandering
Sorrow of Love, The
Spilt Milk
.
Stare's Nest by My
Statistics
.
Stolen Child, The
Stream and Sun at C
Summer and Spring
Swift's Epitaph
Symbols

These are the Cloud Those Dancing Day: Thought from Prop. Three Beggars, The Three Hermits, The Monuments, Three Movements Three Things.

To a Child Dancing To a Friend whose To a Poet, who we Imitators of H To a Shade

To a Squirrel at Ky To a Wealthy Man

the Dublin M People wanted

That the Night Cor

| | | | | | | | PAGE |
|---------------------------|---------|--------|-------|--------|--------|-----|------|
| Solomon to Sheba . | • | • | • | | | | 155 |
| Song, A | • | | • | , | | | 156 |
| Song from 'The Player Qu | | | | | | | 134 |
| Song of the Happy Sheph | | ne | | | | | 7 |
| Song of the Old Mother, | | | • | | | | 67 |
| Song of Wandering Aengu | ıs, The | | | | | | 66 |
| Sorrow of Love, The | | | | | | | 45 |
| Spilt Milk | | • | | | | a | 271 |
| Stare's Nest by My Wind | ow, T | he | | | | , | 230 |
| Statistics | | | | | | | 271 |
| Stolen Child, The . | | | | | | | 20 |
| Stream and Sun at Glenda | lough | • | | | | | 288 |
| Summer and Spring. | | | • | | | | 253 |
| Swift's Epitaph . | | | | | | | 277 |
| Symbols | • | • | • | | • | • | 270 |
| That the Night Come | | | | | | | 140 |
| These are the Clouds | | | | | | Ţ | 107 |
| Those Dancing Days are (| Gone | | | | | | 302 |
| Thought from Propertius, | | | | | | • | 172 |
| Three Beggars, The . | | | | | | | 124 |
| Three Hermits, The. | | | | | | | 127 |
| Three Monuments, The | | | | | | | 255 |
| Three Movements . | | | | | | | 271 |
| Three Things | | | | | | | 300 |
| To a Child Dancing in th | e Win | d | | | | | 136 |
| To a Friend whose Work | | | Nothi | ng | | | 122 |
| To a Poet, who would h | | | | | d Poer | īs, | |
| Imitators of His and | | | | | | | 105 |
| To a Shade | | | | | | | 123 |
| To a Squirrel at Kyle-na- | no | | | | | | 175 |
| To a Wealthy Man who | | ed a S | econd | Subscr | iption | to | |
| the Dublin Municip | | | | | | | |
| People wanted Pictu | • | • | | • | | | 119 |
| 1 | | 161 | | | | | • |

| | | | | | | | FAGE | |
|----------------------------|---------|--------|---------|-----|---|---|-----------|--|
| To a Young Beauty . | • | | • | • | | ٠ | 157 | |
| To a Young Girl . | • | • | • | • | | | 157 | |
| To an Isle in the Water | • | | | | | | 22 | |
| To be Carved on a Stone | | | , | • | | | 214 | |
| To his Heart, bidding it l | have n | o Fear | • | • | | | 71 | |
| To Ireland in the Coming | g Time | s. | | | | | 56 | |
| I'o Some I have Talked w | rith by | the F | ire | | | | 56 | |
| Γο the Rose upon the Ro | od of | Time | | | | | 35 | |
| Fom at Cruachan . | | | , | | | | 306 | |
| Fom O'Roughley . | | | | | | | 158 | |
| Fom the Lunatic . | | | | | | | 305 | |
| Fowards Break of Day | | | | | | | 208 | |
| Tower, The 🗸 . | | | | | | | 218 | |
| Travail of Passion, The | | | • | | | | 78 | |
| Two Kings, The . | | | | | | | 417 | |
| Two Songs from a Play | | | | | | | 239 | |
| Two Songs of a Fool | | | | | | | 190 | |
| Two Trees, The . | | | | | | | 54 | |
| Two Years Later . | | | | | | | 137 | |
| | | | | | · | • | -)/ | |
| Unappeasable Host, The | | | | | | | 65 | |
| Under Saturn | | | | | | Ť | 202 | |
| Under the Moon . | | | | | | | 91 | |
| Under the Round Tower | | | | | | • | 154 | |
| Upon a Dying Lady . | | • | • | • | • | • | 177 | |
| Upon a House Shaken by | the I | and A | aitatio | n. | • | • | 106 | |
| opon a rroade diamen by | - | | 51000 | ••• | • | • | 100 | |
| Vacillation | | | | | | | 282 | |
| Valley of the Black Pig, | The | • | • | • | • | • | 73 | |
| Veronica's Napkin . | 1110 | • | • | • | • | • | 75 270 | |
| veronica s i vapidii . | • | • | • | • | • | • | 2/0 | |
| Wanderings of Oisin, Th | I.P. | | | | | | 222 | |
| Wheel, The | | • | | ٠ | • | ٠ | 323 | |
| When Helen Lived. | • | • | • | • | • | ٠ | 237 | |
| At nen Liefen Piked. | • | • | • | • | ٠ | • | 124 | |

When You are Old While I, from that is White Birds, The Wild Swans at Cool Wisdom . Witch, The . Withering of the Bo Who Goes with Fery Woman Homer Sun Woman Young and Words . . .

Young Man's Song Youth and Age

| | | | | | | PAGE |
|----------------------------------|------|-------|---|---|---|------|
| When You are Old | | | | , | | 46 |
| While I, from that reed-throated | Whis | perer | | | | 143 |
| White Birds, The | | | | | , | 46 |
| Wild Swans at Coole, The. | | 6 | | | | 147 |
| Wisdom | * | | | | | 246 |
| Witch, The | • | | | | | 135 |
| Withering of the Boughs, The | | | | , | | 87 |
| Who Goes with Fergus? . | | | | | | 48 |
| Woman Homer Sung, A . | • | | | 1 | | 100 |
| Woman Young and Old, A | | | | , | | 308 |
| Words | | | • | | | 100 |
| | | | | | | |
| Young Man's Song | | | • | , | | 296 |
| Youth and Age | | | | | | 237 |

IND:

A certain poet in of A crazy man that f A cursing rogue with A doll in the doll-r A living man is blith A man came slowly A mermaid found a A pity beyond all the A speckled cat and

A storm-beaten old A strange thing sur unsought.

A sudden blow; the Acquaintance; comp Ah, that Time coul All the heavy days: All things can temp All things uncomely Although crowds ga Although I can see 'Although I'd lie la Although I shelter f Although you hide: An affable Irregular

An ancient bridge, a An old man cocked And thus declared t As I came over Wir Autumn is over the

INDEX TO FIRST LINES

| | | | | PAGE |
|--|--------|---------|------|------|
| A certain poet in outlandish clothes . | | | | 365 |
| A crazy man that found a cup | | | | 251 |
| A cursing rogue with a merry face . | | | | 130 |
| A doll in the doll-maker's house. | | | | 141 |
| A living man is blind and drinks his drop | | | | 266 |
| A man came slowly from the setting sun | | | | 37 |
| A mermaid found a swimming lad . | | ŧ | | 250 |
| A pity beyond all telling | | | | 45 |
| A speckled cat and a tame hare | - | | | 190 |
| A storm-beaten old watch-tower | | | | 270 |
| A strange thing surely that my Heart, when | a Iove | had c | ome | |
| unsought | . • | • | | 247 |
| A sudden blow; the great wings beating stil | 1. | • | • | 241 |
| Acquaintance; companion | • | • | , | 286 |
| Ah, that Time could touch a form | * | 4 | | 103 |
| All the heavy days are over | • | | • | 48 |
| All things can tempt me from this craft of | | | | 109 |
| All things uncomely and broken, all things w | orn c | ut and | old | 62 |
| Although crowds gathered once if she but sl | nowed | l her f | ice. | 138 |
| Although I can see him still | | | | 166 |
| 'Although I'd lie lapped up in linen . | | | | 154 |
| Although I shelter from the rain | , | | | 52 |
| Although you hide in the ebb and flow. | | | | 64 |
| An affable Irregular | | | | 229 |
| An ancient bridge, and a more ancient towe | r. | | | 226 |
| An old man cocked his ear upon a bridge | | | | 183 |
| And thus declared that Arab lady . | | | | 199 |
| As I came over Windy Gap | ٠ | | | 129 |
| Autumn is over the long leaves that love us | | | | 16 |
| 465 | | | 2 H | |

| | | | | - | | |
|--|--------|--------|-------|---|-----|--|
| hald heads forgetful of their sins. | | • | | • | 158 | |
| Be you still, be you still, trembling hear | t | | - | ٠ | 71 | |
| Because to-day is some religious festival | | | | | 178 | |
| Behold that great Plotinus swim | | | | | 306 | |
| Being out of heart with government . | , | | • | | 141 | |
| Beloved, gaze in thine own heart. | | • | | | 54 | |
| Beloved, may your sleep be sound | | | | | 300 | |
| Between extremities | | | | | 282 | |
| Bid a strong ghost stand at the head | | | | | 238 | |
| Blessed be this place | | | | | 267 | |
| Bolt and bar the shutter | • | | | ٠ | 301 | |
| Bring me to the blasted oak . | | | | | 290 | |
| Bring where our Beauty lies . | ٠ | • | • | • | 177 | |
| 'Call down the hawk from the air | | | | | 167 | |
| Come, let me sing into your ear. | Ž | | | | 302 | |
| Come play with me. | | | | ۰ | 175 | |
| Come praise Colonus' horses, and come | prai: | se | | | 245 | |
| Come round me, little childer . | . r | | | | 25 | |
| Crazed through much child-bearing | | | • | | 273 | |
| Cumhal called out, bending his head | • | • | • | | 75 | |
| Gairman Gassa San, San San | | | | | | |
| Dance there upon the shore . | | | • | • | 136 | |
| Dear Craoibhin Aoibhin, look into our | case | • | ٠ | | 107 | |
| Dear fellow-artist, why so free . | | • | | ٠ | 157 | |
| Dear, I must be gone | • | | | • | 311 | |
| Do not because this day I have grown | satur | nine | • | • | 202 | |
| Do you not hear me calling, white dee | er wit | h no h | orns? | • | 68 | |
| Down by the salley gardens my love a | nd I (| did me | et. | ٠ | 22 | |
| Dry timber under that rich foliage | • | • | ٠ | ٠ | 312 | |
| Earth in beauty dressed | | | • | | 297 | |
| Edain came out of Midhir's hill, and | lay | | 4 | | 385 | |
| Endure what life God gives and ask n | o Îon | ger sp | an . | ۰ | 255 | |
| 5 | | _ | | | | |

Far-off, most secret Fasten your hair wi Five-and-twenty yer Fled foam underne milky smoke For certain minutes

God grant a blessing Good Father John (

For one throb of th

Had I the heavens'
Half close your eyel
Hands, do what you
Has he not led us in
Has no one said the
Having inherited a
He stood among a c
Hidden by old age a
Hope that you may
How should the wo
Hurry to bless the I

I admit the briar
'I am of Ireland
I am worn out with
I asked if I should p
I bade, because the
I bring you with rev
I care not what the
I climb to the tower
I cried when the mo
I did the dragon's w

I dreamed, as in my

| 7 ° | | | | | | PAGE |
|-----------------------------------|-----------|---------|--------|--------|----|------------|
| Far-off, most secret, and inviola | te Ros | e. | • | | | 77 |
| Fasten your hair with a golden I | | | | | | 71 |
| Five-and-twenty years have gone | | | | | | 175 |
| Fled foam underneath us, and | round | us, a | wande | ring a | nd | ., |
| milky smoke | | | | | | 345 |
| For certain minutes at the least | | | | | | 209 |
| For one throb of the artery | ٠ | • | , | , | 4. | 214 |
| God grant a blessing on this tow | ver and | cottag | re | | | 183 |
| Good Father John O'Hart. | | • | • | | | 23 |
| Had I the heavens' embroidered | cloths | | | | | 81 |
| Half close your eyelids, loosen y | | | • | , | • | |
| Hands, do what you're bid | | | • | • | • | 75 |
| Has he not led us into these was | te seas | | • | • | • | 175 |
| Has no one said those daring | | • | • | • | • | 387 |
| Having inherited a vigorous min | đ | • | • | • | • | 137 228 |
| He stood among a crowd at Dru | | • | • | • | • | |
| Hidden by old age awhile . | | | • | • | • | 49 |
| Hope that you may understand! | | • | • | • | • | 314 |
| How should the world be luckie | | s hous | ۰. | * | • | 135 106 |
| Hurry to bless the hands that pl | | 3 11043 | | • | • | |
| The same of the same property | <u></u> y | • | • | • | • | 93 |
| I admit the briar | 1 | | | | | 309 |
| 'I am of Ireland | ı | | | | | 303 |
| I am worn out with dreams | | | | | | 152 |
| I asked if I should pray . | | | | | | 279 |
| I bade, because the wick and oil | are spe | ent | | | | 156 |
| I bring you with reverent hands | | | | | | 70 |
| I care not what the sailors say | | | | | | 291 |
| I climb to the tower-top and lear | n upon | broke | n ston | е | | 231 |
| I cried when the moon was murr | nuring | to the | birds | | | 87 |
| I did the dragon's will until you | came | • | • | | , | 310 |
| I dreamed, as in my bed I lay | | • | • | | | 299 |
| | | | | | | |

| I dreamed that I stood in a valley | | | | • | | 74 |
|------------------------------------|----------|---------|---------|-----|---|-----|
| I dreamed that one had died in a | strang | ge plac | e | | | 47 |
| I found that ivory image there | • | | • | • | | 295 |
| I had this thought a while ago | • | | • | | | 100 |
| I hardly hear the curlew cry | | | | | | 373 |
| I have drunk ale from the Count | ry of t | he Yo | ung | | | 81 |
| I have heard the pigeons of the S | Seven V | Woods | | | | 85 |
| I have met them at close of day | | | | | | 202 |
| I have old women's secrets now | | | | | | 253 |
| I have no happiness in dreaming | of Bry | celind | 2 | | ٠ | 91 |
| I have pointed out the yelling pa | ick | | | | | 250 |
| I hear the Shadowy Horses, their | long | manes | a-shak | e | | 69 |
| I heard the old, old men say | | | | | | 91 |
| I know, although when looks me | et | | • | | | 292 |
| I know that I shall meet my fate | ÷. | | | | | 152 |
| I made my song a coat . | | | | | | 142 |
| I meditate upon a swallow's fligl | ht | | | | | 273 |
| I met the Bishop on the road | | | | | | 294 |
| I passed along the water's edge b | elow t | he hur | nid tre | ees | | 14 |
| I, proclaiming that there is | | | | | | 304 |
| I ranted to the knave and fool | • | | | | | 287 |
| I rise in the dawn, and I kneel a | nd blo | W | | | | 67 |
| I sat on cushioned otter-skin | | | | | | 17 |
| I saw a staring virgin stand | | | | | | 239 |
| I summon to the winding ancier | it stair | | | | | 265 |
| I swayed upon the gaudy stern | | | | | | 99 |
| I, the poet William Yeats . | | | | | | 214 |
| I think it better that in times li | ke thes | se | | | | 175 |
| I thought no more was needed | • | | | | | 156 |
| I thought of your beauty, and th | nis arro | w | | | | 85 |
| I walk through the long schoolre | | | ing | | | 242 |
| I walked among the seven wood | | | • | | | 383 |
| I wander by the edge . | | | • | | | 75 |
| I went out alone | | | | | | 296 |
| • | | | | | | - |

I went out to the I
I whispered, 'I am
I will arise and go
I would be ignoran
I would that we we
of the sea
If any man drew no
If I make the lashe
If Michael, leader
If this importunate
If you have revisite
If you, that have go
In tombs of gold as

King Eochaid came Know, that I would Kusta ben Luka is

Indignant at the fu

Laughter not time 'Lay me in a cushic Like the moon her Locke sank into a s'Love is all .

Many ingenious los May God be praise Midnight has come Much did I rage w My dear, my dear, My great-grandfath My mother dandle

Never give all the l'Never shall a your

| | | | | | PAGE |
|--------------------------------------|------------|-------|----------|-----|-------|
| I went out to the hazel wood . | • | | | | 66 |
| I whispered, 'I am too young' . | • | | ٠ | | 109 |
| I will arise and go now, and go to | Innisfree | | | | 44 |
| I would be ignorant as the dawn. | • | | | | 164 |
| I would that we were, my beloved, | white bir | ds or | 1 the fo | oam | |
| of the sea | • | | | | 46 |
| If any man drew near | | | | | 100 |
| If I make the lashes dark | • | • | | | 308 |
| If Michael, leader of God's host. | • | | | | 41 |
| If this importunate heart trouble ye | our peace | | • | • | 73 |
| If you have revisited the town, this | 1 Shade | • | | | 123 |
| If you, that have grown old, were t | he first d | ead | | | 238 |
| In tombs of gold and lapis lazuli. | • | • | | | 270 |
| Indignant at the fumbling wits, the | e obscure | spite | | | 122 |
| King Eochaid came at sundown to | 1 | | | | |
| Know, that I would accounted be | a wood | ٠ | e. | ٠ | 417 |
| Kusta ben Luka is my name, I writ | • | • | • | ٠ | 56 |
| Rusta ben Luka is my name, i wri | te . | • | ٠ | ٠ | 427 |
| Laughter not time destroyed my vo | ice . | | | | 2 = 2 |
| 'Lay me in a cushioned chair . | | • | • | • | 252 |
| Like the moon her kindness is . | • | • | • | • | 27 |
| Locke sank into a swoon | | • | • | • | 250 |
| 'Love is all . | • | ٠ | • | • | 240 |
| • | • | • | • | • | 291 |
| Many ingenious lovely things are go | one . | | | | 232 |
| May God be praised for woman . | | | | | 164 |
| Midnight has come, and the great | Christ Cl | nurch | Bell | | 256 |
| Much did I rage when young . | | | | | 237 |
| My dear, my dear, I know. | | | | | 157 |
| My great-grandfather spoke to Edn | nund Bur | ke | | | 271 |
| My mother dandled me and sang | | | | | 134 |
| | | | | | |
| Never give all the heart, for love. | | | | ۰ | 87 |
| 'Never shall a young man | | ٠ | • | 3 | 277 |
| 460 | | | | | |

| Vever until this night have I been stirred | • | • | | 200 |
|---|-------|---|---|-------|
| Nor dread nor hope attend | • | • | | 264 |
| Jow all the truth is out | • | | | 122 |
| Now as at all times I can see in the mind's | eye | | | 141 |
| Now, man of croziers, shadows called our na | nnes | | | 337 |
| Now must I these three praise | | | ٠ | 139 |
| Now that we're almost settled in our house | • | • | ٠ | 148 |
| O bid me mount and sail up there . | | | | 254 |
| O but there is wisdom | | | | 310 |
| O but we talked at large before | ٠ | | | 205 |
| O cloud-pale eyelids, dream-dimmed eyes | | | | 74 |
| 'O cruel death, give three things back'. | | | | 300 |
| O curlew, cry no more in the air | | | | 69 |
| O heart, be at peace, because | | | | 103 |
| O hurry where by water among the trees | | | | 92 |
| O sweet everlasting Voices, be still | | | | 61 |
| O thought, fly to her when the end of day | | | | 86 |
| O what to me the little room | | | | 67 |
| O women, kneeling by your altar-rails long | hence | | | 79 |
| 'O words are lightly spoken'. | • | | | 206 |
| O'Driscoll drove with a song | | | | . 63 |
| Old fathers, great-grandfathers | | | | . 298 |
| On Cruachan's plain slept he | | | | . 306 |
| On the grey rock of Cashel the mind's eye | · . | | | . 192 |
| On the grey sand beside the shallow stream | n. | | | . 180 |
| Once more the storm is howling, and half | hid | | | . 211 |
| Once, when midnight smote the air . | | | | . 124 |
| One had a lovely face | | | | . 168 |
| One that is ever kind said yesterday . | | | | . 86 |
| Opinion is not worth a rush | | | | . 197 |
| Others because you did not keep. | | | | . 174 |
| Out-worn heart, in a time out-worn | | | | . 65 |
| Overcome—O bitter sweetness | | , | | . 315 |

Pale brows, still hand Pardon, great enemy. Pardon, old fathers, i Poets with whom I le Pour wine and dance 'Put off that mask of

PAGE

Red Rose, proud Rose Rose of all Roses, Ro

Sang old Tom the lux Sang Solomon to She Send peace on all the Shakespearean fish sw She has not grown ur She hears me strike t She is foremost of th She is playing like a She lived in storm ar She might, so noble i She that but little pa 'She will change,' I c Shy one, shy one Sickness brought me Some may have blam Speech after long sile Stand up and lift you Suddenly I saw the c Surely among a rich:

That cry's from the f That is no country for

Sweetheart, do not lo Swift has sailed into

| m t t 111 t t t t t | | | | | | PAGE |
|--------------------------------------|-------------|----------|----------|---|---|------------|
| Pale brows, still hands and dim h | air . | | • | | | 68 |
| Pardon, great enemy | • | | | | | 179 |
| Pardon, old fathers, if you still re | main. | | | | | 113 |
| Poets with whom I learned my tra | ade . | | | | | 115 |
| Pour wine and dance if manhood | still ha | ive pr | ide | | | 136 |
| 'Put off that mask of burning gol | d . | | | • | | 106 |
| Red Rose, proud Rose, sad Rose | of all 1 | nv da | vs! | | | 35 |
| Rose of all Roses, Rose of all the | World | 1! | | • | • | 42 |
| | | | • | , | • | 4- |
| Sang old Tom the lunatic | | | | | | 305 |
| Sang Solomon to Sheba . | | | | • | • | 155 |
| Send peace on all the lands and fl | ickerir | o cori | 1 | • | • | 10 |
| Shakespearean fish swam the sea, | far awa | v from | n Jano | | • | |
| She has not grown uncivil. | | -, 1101 | 11 14110 | • | • | 271 |
| She hears me strike the board and | l sav | | • | • | • | 179 308 |
| She is foremost of those that I wo | ould he | ar nra | ised | • | • | 168 |
| She is playing like a child. | , and me | ur Pre | .1300 | • | ٠ | 178 |
| She lived in storm and strife | • | | • | • | • | • |
| She might, so noble from head . | • | | • | • | • | 140 |
| She that but little patience knew. | | | • | • | • | 172 206 |
| 'She will change,' I cried | | | • | • | • | |
| Shy one, shy one | | | • | • | • | 296 |
| Sickness brought me this . | • | | • | • | • | 22 |
| Some may have blamed you that | · · · | al- arri | • | • | • | 109 |
| Speech after long silence; it is rig | you w hr | JK aw | 19 | • | • | 102 |
| Stand up and lift your hand and | | | • | • | • | 301 |
| Suddenly I saw the cold and rook | | | • | • | • | 189 |
| Surely among a rich man's flower | | | ieaven | • | ٠ | 140 |
| Sweetheart, do not love too long. | | VIIS | • | • | ٠ | 225 |
| Swift has sailed into his rest | • | | • | • | • | 93 |
| Swift has salled into his fest | • | | • | • | • | 277 |
| That cry's from the first cuckoo o | of the y | ear | | • | | 159 |
| That is no country for old men | | | • | | • | 217 |

| The lease of a minha | | | rage |
|---|--------|------|------|
| That lover of a night | ٠ | • | 293 |
| The angels are stooping | • | | 45 |
| The bees build in the crevices | | | 230 |
| The brawling of a sparrow in the eaves. | | | 45 |
| The cat went here and there | | | 188 |
| The Danaan children laugh, in cradles of wrought | gold | | 65 |
| The dews drop slowly and dreams gather: unknown | n spe | ars | 73 |
| The fascination of what's difficult | | | 104 |
| The Heavenly Circuit; Berenice's Hair . | | | 270 |
| The heron-billed pale cattle-birds | | | 278 |
| The host is riding from Knocknarea | | • | 61 |
| The intellect of man is forced to choose | • | • | 278 |
| The island dreams under the dawn | • | • | |
| The jester walked in the garden . | ٠ | • | 15 |
| The light of evening, Lissadell . | ٠ | • | 71 |
| The lot of love is chosen. I learnt that much. | • | • | 263 |
| The moments passed as at a play | • | • | 311 |
| The old brown thorn-trees break in two high over | · C | | 137 |
| Strand | Cum | men | |
| The old priest Peter Gilligan | • | • | 90 |
| The Downer whose name and days 1: | ٠, | • | 52 |
| The Powers whose name and shape no living creatu | ire ki | nows | 80 |
| The threefold terror of love; a fallen flare | • | • | 281 |
| The trees are in their autumn beauty | • | • | 147 |
| The true faith discovered was | • | | 246 |
| The unpurged images of day recede | • | • | 280 |
| The woods of Arcady are dead | | | 7 |
| There is a queen in China, or maybe it's in Spain | | | 170 |
| There is grey in your hair | | | 172 |
| There's many a strong farmer | | | 94 |
| There was a green branch hung with many a bell | | | 51 |
| There was a man whom Sorrow named his friend | | | 9 |
| There where the course is | | | 108 |
| These are the clouds about the fallen sun | | | 107 |
| They hold their public meetings where. | • | • | 255 |
| | • | • | ~)) |

They must to keep th Things out of perfecti This great purple butt This night has been so This whole day have I 'Those Platonists are a Though leaves are ma 'Though logic-choppe Though nurtured like Though the great son 'Though to my feathe Though you are in yo Three old hermits too Through intricate mo Through winter-time Time drops in decay 'Time to put off the Toil and grow rich . Turning and turning Two heavy trestles, as

Under my window-le Undying love to buy

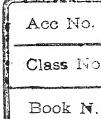
Was it the double of We have cried in our We sat together at or We sat under an old We should be hidder We that have done a We who are old, old Were you but lying 'What do you make 'What have I earned

| | | | 3 | PAGE |
|---|---|---|---|------------|
| They must to keep their certainty accuse | • | | • | 207 |
| Things out of perfection sail | | | | 306 . |
| This great purple butterfly | • | | | 191 |
| This night has been so strange that it seemed | | | | 174 |
| This whole day have I followed in the rocks | | | | 36 |
| 'Those Platonists are a curse,' he said . | | | • | 271 |
| Though leaves are many, the root is one | | | | 105 |
| 'Though logic-choppers rule the town . | | | | 158 |
| Though nurtured like the sailing moon. | | | | 249 |
| Though the great song return no more . | • | | | 271 |
| 'Though to my feathers in the wet . | | | | 124 |
| Though you are in your shining days . | | | | 7 9 |
| Three old hermits took the air | • | | | 127 |
| Through intricate motions ran | | • | | 288 |
| Through winter-time we call on spring. | | | | 237 |
| Time drops in decay | | | ٠ | 62 |
| 'Time to put off the world and go somewher | e | • | | 128 |
| Toil and grow rich | | | • | 135 |
| Turning and turning in the widening gyre | | | | 210 |
| Two heavy trestles, and a board | • | • | • | 227 |
| Under my window-ledge the waters race | | | | 275 |
| Undying love to buy | • | ٠ | · | 298 |
| Was it the double of my dream | | | | 208 |
| We have cried in our despair | | | | 124 |
| We sat together at one summer's end. | • | · | | 88 |
| We sat under an old thorn-tree | • | | | 253 |
| We should be hidden from their eyes . | | | | 251 |
| We that have done and thought | | | | 271 |
| We who are old, old and gay | ě | | | 43 |
| We who are old, old and gay | • | • | | 80 |
| 'What do you make so fair and bright?' | • | į | | 10 |
| 'What have I earned for all that work,' I sai | d | | | 169 |
| | _ | - | • | 7-4 |
| 473 | | | | A. |
| | | | | |

Milling W.

| What lively lad most pleasured me | | | PAG |
|---|--------|------|-----|
| What need you, being come to canco | | | 31 |
| What's fiches to him | | | 120 |
| What shall I do with this absurdity | • | | 135 |
| What they undertook to do | • | | 218 |
| When all works that have | • | | 287 |
| When have I last looked on | • | | 247 |
| When her soul flies to the predestined dancing-p | | | 163 |
| When I play on my fiddle in Dooney | lace | | 179 |
| When the day wrap you round I press. | • | | 82 |
| When the flaming lute-thronged angelic door is y | | | 69 |
| When you are old and grey and full of sleep. | vide | • | 78 |
| Where dips the rocky highland . | • | ٠ | 46 |
| Where got I that truth? | | | 20 |
| Where had her sweetness gone? | | | 241 |
| Where has Maid Quiet gone to | | , | 286 |
| Where, where but here have Pride and Truth. | | | 78 |
| While I, from that reed-throated whisperer While I was a large of the reed-throated whisperer | | | 105 |
| While I wrought out these fitful Danaan rhymes | | | 143 |
| Who dreamed that beauty passes like a dream? | | ٠ | 56 |
| Who talks of Plato's spindle | | | 41 |
| Who will go drive with Fergus now | | | 299 |
| Wine comes in at the mouth | • | | 48 |
| With the old kindness the 11 11 | | | 104 |
| With the old kindness, the old distinguished grace Would I could cast a sail on the water. | | | 177 |
| Would it were anything but merely voice! | | , | 153 |
| Why should I blame her that she filled my days | • | , | 102 |
| a statile fiel that she filled my days | * | | IOI |
| You gave, but will not give again | | | |
| You say, as I have often given tongue | • | | 119 |
| You waves, though you done ! | • | | 105 |
| You waves, though you dance by my feet like childre. You who are bent, and bald, and blind. | n at p | lay | 23 |
| Your eyes that once were never weary of mine | | | 323 |
| Your hooves have stamped or the life | | | 16 |
| Your hooves have stamped at the black margin of the | he wo | od : | 242 |
| \ | | | • |

Printed in Great Britain by





Printed in Great Britain by R. & R. CLARK, LIMITED, Edinburgh.

| Acc No. | 11595 |
|----------|------------|
| Class No | SA. 891.62 |
| Book N. | 585 YEA |